श्री

राम-वर्षा

भाग १–२

अर्थात्

श्री स्वामी रामतीर्थ ।

के

सदुपदेश–भाग ७-८

प्रकाशक

श्री रामतीर्थ पब्लिकेशन लीग ।

प्रथम संस्करण २५०० } लखनऊ { मई १९२१ वैशाख १९७८

मूल्य डाक व्यय रहित

बिना जिल्द १।) } फुटकर { सजिल्द १॥)

सम्पूर्ण सेट्

अर्थात्

बिना जिल्द ७) } १,००० पृष्ठ के आठ भाग { सजिल्द ९)

आर. पी. सिंह द्वारा, फ़ीनिक्स प्रिन्टिङ्ग प्रेस,
१०० नादान महल रोड, लखनऊ, में
मुद्रित ।

☞ राम प्रेमियों से प्रार्थना है कि इस भाग के निवेदन में वर्तमान वर्ष के स्थायी ग्राहक होने के नियम पढ़कर उनके अनुसार शीघ्र ही आज्ञा भेजने की कृपा करें। आपका आज्ञापत्र पाये विना हम आपकी सेवा में नये वर्ष की ग्रन्थावली न भेज सकेंगे। आशा है आप कृपा दृष्टि बनाये रहेंगे और इस कार्य में अवश्य हमारे सहकारी बनेंगे।

मैनेजर।

निवेदन।

इन दो भागों के एक ही साथ भेजने पर हम आज अपने ऋण से उऋण होते हैं। प्रेस व छिन्दवाड़ा के वकील महाशय जी की नाना बाधाओं के कारण हम अपनी शक्ति भर प्रयत्न करने से भी यद्यपि अपने कथनानुसार ठीक समय पर सारे भाग आपकी सेवा में नहीं भेज सके, तथापि हम बहुत हर्ष के साथ लिखते हैं कि हमारे प्रिय ग्राहकगणों ने हमारी कठिनाइयों को विचार कर, सन्तोष के साथ निरन्तर हमारी प्रार्थनाओं पर ध्यान देकर अपनी सहायता बनाये रक्खी जिस के लिये हम उन के बहुत कृतज्ञ हैं। आपकी सेवा में इस अमृतरूपी राम-वर्षा के दो भाग भेजने से गत वर्ष के १००० पृष्ठ के आठ भाग जिन के देने की हमारी प्रतिज्ञा थी आज पूर्ण होते हैं। अपनी ओर से यथाशक्ति पूर्ण यत्न किया गया कि इन भागों के प्रकाशन में कोई त्रुटि न रहे; तिस पर भी जो २ त्रुटियें आप की दृष्टि में आई हों उनके लिये आशा है कि आप अपने अन्तः हृदय से हमें क्षमा करेंगे और आगे के लिये उनके दूर करने में तन, मन, धन से आप पूर्ण सहायता देंगे।

इस वर्ष में हमें यह पूर्ण अनुभव हो गया है कि अपना प्रेस खोले बिना इतने थोड़े समय (मास जून से नवम्बर तक) में जो कि लीग के वर्तमान वर्ष की समाप्ति में दीपमालिका तक रह गया है किसी अन्य प्रेस से १००० पृष्ठ का छपवाना अत्यन्त कठिन ही नहीं किन्तु आज कल के कार्यभार के कारण असम्भव सा है। और भविष्य में अपने ग्राहकों को बारम्बार विलम्ब की प्रार्थनाओं से

व्यर्थ कष्ट न देना पड़े इस लिये अब आगामी वर्ष के लिये यह निश्चय किया गया है कि नवम्बर सन् १९२१ तक ५०० पृष्ठ के चार भाग प्रकाशित किये जायेंगे जिनका पेशगी शुल्क निम्न रीत्यनुसार होगा:—

(१) प्रत्येक भाग केवल बुकपैकिट द्वारा मंगवाने वाले से विना जिल्द के २) रुपय और सजिल्द के ३) रुपय।

(२) प्रत्येक भाग रजिस्टर्ड बुकपैकिट द्वारा मंगवाने वाले से विना जिल्द के २॥) रुपय और सजिल्द के ३॥) रुपय।

(३) प्रत्येक भाग वी० पी० द्वारा मंगवाने वाले को ॥) पेशगी अपना नाम दर्ज रजिस्टर कराने के लिये भेजने होंगे।

(४) फुटकर एक भाग का मूल्य विना जिल्द ॥=) और सजिल्द ॥|=) होगा, डाक व्यय अलग।

यह तो आप पर प्रकट हो ही चुका है कि जब तक लीग का अपना प्रेस नहीं खुलेगा तब तक विलम्ब की त्रुटियां पूर्ण रूप से दूर नहीं हो सकेंगी, इस लिये सब राम प्यारों से प्रार्थना है कि जहां वे लीग के सदस्य तथा ग्रन्थावली के ग्राहक बनाने का यत्न करें वहां इस के साथ २ रुपया प्रेस के खुलवाने के प्रबन्ध का भी यत्न करें जिस से यह संस्था आपकी पहिले से भी कई गुणा अधिक सेवा कर सके और अपने उद्देश्य की सफलता को शीघ्र देख सके।

हमें पूर्ण आशा है कि हमारे ग्राहकगण आगामी वर्ष में न केवल अपनी सहायता ही बनाये रक्खेंगे बल्कि ग्राहक संख्या बढ़ा

कर हमारे उत्साह को दिन प्रति दिन बढ़ाने और संसार भर में अपने प्यारे राम के अमृतरूपी उपदेशों के फैलाने में पूर्णतः प्रयत्न करेंगे।

सहायता फण्ड में दान देने वाले सज्जनों की नामावली।

गत जून सन् १६२० तक जिन दान दाताओं से ६५०) रु० का दान प्राप्त हुआ था उनकी नामावली ग्रन्थावली के तीसरे भाग में दी गई थी। उस के बाद जो दान आज तक प्राप्त हुआ है उसका ब्योरा दान दाताओं की नामावली के सहित नीचे दिया जाता है।

१०) एक हितैषी।

५०) गुप्त दान श्रीस्वामी स्वयंज्योति द्वारा प्राप्त।

२५०) श्री १०८ स्वामी मंगलनाथ जी महाराज।
हृषीकेश निवासी द्वारा प्राप्त।

१०१) स्वर्गवासी रायबहादुर ला० शालिग्राम जी के सुपुत्र सरदार गुरुबख्श सिंह जी से प्राप्त।

५०) गुप्त दान श्रीयुत लाल वरखण्डी महेश द्वारा प्राप्त।

११५) एक हितैषी।

१४८) यह रकम निम्न लिखित सज्जनों से कराची के श्रीयुत् गुलाब भाई भीम भाई देशाई द्वारा प्राप्त।

१४८।) का व्योरा।

२५) श्रीयुत् सेठ पम चूनी लाल।
११) ,, अबदुल्ला भाई कासम।
११) ,, राम भक्त गुलाब भाई भीम भाई देशाई।
४) ,, ,, ,, ,, ,, ,,
५) श्री टी विष्णुदास अंड कम्पनी।
५) ,, आर, सी मुल्तानी ब्रादर्स।
५) ,, नृसिंह लाल घनश्याम दास।
५) ,, मगन लाल हिरजी कोतक।
५) पं० शिवशंकर हरगोविन्द।
५) श्री गोलाब राय द्याल जी देशाई।
५) ,, खण्डू भाई हरिभाई जिज्ञासु।
५) ,, हरिशंकर खेमराम महता।
५) ,, आसूदा मल हरभगवान् दास।
५) ,, अमर चन्द रतोसी।
३) ,, बिहारी लाल गोपी नाथ।
३) ,, मनी भाई मोहन भाई देसाई।
२) ,, रीझूमल त्रिकम दास।
२) ,, मगन लाल गोविन्दजी निगंधी।
२) ,, हीरा लाल कृष्ण लाल व्यास।
२) ,, मोहन भाई प्रभू भाई।
२) ,, सेठ सुन्दर जी जेठा भाई।
१) ,, दुलार राय राम जी कोया।
१) ,, सी, बी, चीताब्रम।

१) ,, त्रिवेदी दामोदर निरभय राम ।
१) ,, गोविन्द जी विट्ठल दास ।
१) ,, हबीब भाई अल्लाद भाई ।
१) ,, विश्राम मेघ जी ।
१) ,, हीरा लाल नारायण गणात्रा ।
१) ,, सोम चन्द गोपाल दास जवेरी ।
१) ,, दयाल जी अलू भाई देसाई ।
१) ,, जसवन्त राय गुलाब भाई देशाई ।
।) ,, रीझू मल सांवल दास ।
५) ,, चिमन लाल दाह्या भाई देशाई ।
१) ,, सुन्दर जी दाहया भाई रच्छा ।
२) ,, कोदूमल मोतीराम ।
२) ,, चतुर भुज भीम जी ।
१) ,, राम सेवक (श्री गुलाब भाई) ।
२) ,, नाथू भाई नारायण जी देशाई ।
२) ,, कुंवर जी कृष्ण जी देशाई ।
५) ,, अम्बा लाल जी चानजी नायक ।

१४८।)

७२४।)

विषय सूची।

संख्या	विषय वार भजन	पृष्ठ

१ गुरु-स्तुति

२ उपदेश

३ भक्ति

४ ज्ञान

५ ज्ञानी

संख्या	विषय वार भजन	पृष्ठ

६ त्याग (फ़क़ीरी)

७ निजानन्द (मस्ती)

संख्या विषय वार भजन

८ विविध लीला (वेदान्त)

९ विविध लीला (माया)

१० विविध लीला (तीन शरीर और वर्ण)

संख्या	विषय वार भजन	पृष्ठ

राम वर्षा द्वितीय भाग ।

१ मंगलाचरण

२ गुरु-स्तुति

३ उपदेश

शेष भजन आगामी भाग में प्रकाशित होंगे।

श्री स्वामी रामतीर्थ

अमेरिका १९०२

राम-वर्षा।

(प्रथम भाग)

गुरु-स्तुति

[१]

तेरी मेरे स्वामी ! यह बाँकी अदा[1] है।
कहीं दास है तू, कहीं खुद खुदा है ॥१॥
कहीं कृष्ण है तू, कहीं राम है तू।
कहीं सङ्गी है तू, कहीं तू जुदा है ॥२॥
पिलाया है जब से मुझे जाम[2] तू ने।
मेरी आँख में क्या नया गुल[3] खिला है ॥३॥
तेरे इश्क़ के बहर[4] में मस्त हूं मैं।
बक़ा[5] में फ़ना[6] है, फ़ना में बक़ा है ॥४॥

---

१ नखरे, नाज़. २ प्रेम-रस का प्याला. ३ पुष्प अर्थात् दृष्टि. ४ समुद्र. ५ हस्ती, अस्तित्व. ६ नेस्ती, नाश.

मुनज़्ज़ा[1] तेरी ज़ात तशबीह[2] से फ़ारग़[3]।
मगर रङ्ग तशबीह का तुझ पर चढ़ा है ॥५॥
नज़ारा[4] तेरा 'राम' हर जा पे देखूं।
हर एक नग़मा[5] ऐ जान! तेरी सदा[6] है ॥६॥

[२]

बाँकी अदायें[7] देखो, चन्दा सा मुखड़ा पेखो। (टेक)
बादल में बहते जल में, वायू में तेरी लटकें।
तारों में नाज़नीं[8] में, मोरों में तेरी मटकें ॥१॥
चलना ठुमक ठुमककर, बालक का रूप धरकर।
घूंघट अबर[9] उलटकर, हँसना यह बिजली बनकर ॥२॥
शबनम[10] गुल[11] और सूरज, चाकर हैं तेरे पद के।
यह आनबान सजधज, ऐ 'राम'! तेरे सदके[12] ॥३॥

[३]

लखूं क्या आपको ऐ अब प्यारे!
अविनाशी कब वाचक शब्द तुम्हारे ॥
जहाँ गति रूप की न नाम की है।
वहाँ गति आ हमारे राम की है ॥
वही इक रूप से पी प्रेम शरबत।
नदी जङ्गल में जा देखे हैं परबत ॥

---

१ शुद्ध, पवित्र. २ मसाल व दृष्टान्त. ३ रहित. ४ दर्शन व दृश्य. ५ गीत, राग, ध्वनि. ६ आवाज़, ध्वनि. ७ नख़रे टख़रे. ८ सुन्दरियाँ. ९ बादल. १० ओस. ११ पुष्प. १२ न्योछावर.

वही इक रूप से नगरों में फिरता।
किसी के खोज में डगरों में फिरता॥
अजब माया है तेरी शाहे[1] दुनिया!
कि जिससे है मेरी तेरी यह दुनिया॥
न तुझको पा सका कोई जहाँ में।
न देखा जिसने तुझको हर मकाँ में॥
तुझे समझा किये सौ कोस अब तक।
नहीं समझा मगर अफ़सोस अब तक॥
तुही है 'राम' और तू ही है यादव।
तुही स्वामी तुही है आप माधव॥

[४]

[ईशावास्योपनिषद् के आठवें मन्त्र का भावार्थ]

है मुहीत[2]-मनज़्ज़हो[3]-बे अबदाँ[4]।
रगो पै[5] है कहाँ? हमा-बीं[6] हमा-दाँ[7]॥ १॥
यह बरी[8] है गुनाहों[9] से, रिन्दे-जहाँ[10]।
बदो-नेक[11] का उसमें नहीं है निशाँ[12]॥ २॥
यह बुज़ुर्ग-बुज़ुर्गान्[13] है राहते-जाँ[14]।
यह है बाला[15] से बाला व नूरे-जहाँ[16]॥ ३॥
वही खुद[17] है ज़ुनाँ[18] व ब्रूं[19] अज़ बियाँ।

---

१ संसार के मालिक, ईश्वर. २ सर्वव्यापक. ३ शुद्ध. ४ शरीर रहित. ५ नाड़ी व पट्ठा. ६ सर्वद्रष्टा. ७ सर्वज्ञ. ८ निर्लिप्त. ९ पाप. १० पूर्ण मस्त जीवनमुक्त. ११ पुण्य पाप. १२ लेश मात्र. १३ सर्वोपरि श्रेष्ठ. १४ प्राणों को सुख देनेवाला. १५ ऊँचा से ऊँचा. १६ संसार का प्रकाश. १७ स्वयं. १८ स्वर्ण. १९ वर्णन से परे.

दिये उसने अज़ल[1] में हैं रङ्गतो-शाँ[2] ॥ ४ ॥
यही 'राम' है दीदों[3] में सब के निहाँ[4] ।
यही 'राम' है बहर[5] में बर[6] में अयाँ[7] ॥ ५ ॥

उपदेश

[५]

[केनोपनिषद् के पाँच मन्त्रों का तात्पर्य]

चक्षु जिन्हें देखें नहीं, चक्षु की अख जान ।
सो परमात्म देव तूं, कर निश्चय नहीं आन[8] ॥ १ ॥
जाको वाणी न जपे, जो वाणी की जान ।
सो परमात्म देव तूं, कर निश्चय नहीं आन ॥ २ ॥
श्रोत्र जाको न सुनें, जो श्रोत्र के कान ।
सो परमात्म देव तूं, कर निश्चय नहीं आन ॥ ३ ॥
प्राणों कर जीवत नहीं, जो प्राणों के प्राण ।
सो परमात्म देव तूं, कर निश्चय नहीं आन ॥ ४ ॥
मन बुद्ध जाको न लखें, परकाशक पहचान ।
सो परमात्म देव तूं, कर निश्चय नहीं आन ॥ ५ ॥

[६]

साधो ! दूर दुई[10] जब होवे, हमरी कौन कोई पत[11] खोवे । (टेक)
ऐसा कौन नशा तुम पीया, अबलों[12] आप सही[13] नाहीं कीया ॥१॥

---

१ अनादि काल. २ नाना नाम रूप. ३ नेत्रों में. ४ छिपा हुआ. ५ समुद्र. ६ पृथिवी. ७ प्रकट. ८ भेत्र. ९ अन्य. १० द्वैत. ११ मान, बड़ाई. १२ अब तक. १३ अपने आपको ठीक नहीं पहिचाना अर्थात् अनुभव नहीं किया.

सिन्ध[1] विषे रञ्चक सम देखें, आप नहीं पर्वत सम पेखें ॥२॥
चमके नूर तेज सब तेरा, तेरे नैनन काहे[2] अँधेरा? ॥३॥
तू ही 'राम' भूप पति राजा, तु ही तीन लोक को साजा ॥४॥

[७]

ज़िन्दह रहो रे जीया! ज़िन्दह रहो रे। (टेक)
तू सदा अखंड चिदानन्दघन, मोह भय शोक क्यों करो रे ॥ १ ॥
(ज़िन्दह०)

आया ही नहीं तो जायगा कौन गृह, सो थ ही नहीं तो कहाँ जागे?।
उपजा ही नहीं तो विनसेगा किस तरह? वैद्यऔर रोग सब हरो रे ॥२॥
(ज़िन्दह०)

तू नहीं देह बुद्धि प्राण मन, तेरा नहीं मान अपमान जन।
तेरा नहीं नफ़ा नुक़सान धन, ग़म चिन्ता डर ख़ौफ़ को तरो रे ॥३॥
(ज़िन्दह०)

जाग रे लालन जाग तेरे! घर रे सदा सुहाग रे।
सूर्यवत् उगरे भाग रे! सब फिकर को परे कर धरो रे ॥४॥
(ज़िन्दह०)

है 'राम' तो सदा ही पास रे! हँस खेल क्यों हुआ उदास रे।
आनन्द की शिखर पर वास रे, हर श्वास में सोहं[3] को भरो रे ॥५॥
(ज़िन्दह०)

---

१ समुद्र में छोटे से मोती को तो तू ढूँढ रहा है पर अभी तक अपने भीतर जो पर्वत के समान भारी रत्न (अपना स्वरूप) है उसका तू अनुभव नहीं करता.
२ क्यों. ३ वह ईश्वर वा परमात्मा मैं हूँ.

[८]

मरे न टरे न जरे[1] हरे[2] तम[3], परमानन्द सो पायो।
मङ्गल मोद भरयो घट भीतर, गुरु श्रुति ब्रह्म "त्वमेव"[4] बतायो ॥१॥
टूटी ग्रन्थी अविद्या नाशी, ठाकुर सत राम अविनाशी।
लय मुझमें सब गयो रे बाकी, वासुदेव सोऽहं कर झाँकी ॥२॥
अहर्निश[5] का सूरज में नाश, अहं प्रकाश प्रकाश प्रकाश।
सूर्य को ठंडक लगे जल को लगे प्यास? आनन्द घन मम 'राम'
से क्या आशा को आस ॥३॥ *

[९]

शाहंशाहे-जहान[1] है, सायल[2] हुआ है तू।
पैदाकुने-ज़मान[3] है, डायल[4] हुआ है तू ॥१॥
सौ बार गर्ज़[5] होवे, तो धो धो पियें क़दम।
क्यों चरख़ो[6]-मिहरो[7]-माह[8] पै मायल[9] हुआ है तू ॥२॥
ख़ञ्जर की क्या मजाल[10] कि इक ज़ख़म कर सके।
तेरा ही है ख़याल कि घायल हुआ है तू ॥३॥
क्या हर गदा[11]-ओ-शाह का राज़क[12] है कोई और।
अफ़लासो[13]-तङ्गदस्ती का क़ायल[14] हुआ है तू ॥४॥

---

१ घटे. २ बढ़े. ३ अन्धकार. ४ तू ही ब्रह्म है. ५ दिन रात. ६ समीपता.

* तात्पर्य—जैसे दिन रात सूर्य में नहीं होते और न सूर्य को ठण्डक व जल को प्यास लग सकती है, ऐसे ही मैं जो आनन्दघन, अर्थात् आनन्द स्वरूप राम हूँ, मेरे समीप किसी प्रकार की आशा पर नहीं मार सकती।

१ चक्रवर्ती राजा. २ भिखारी, मँगता. ३ समय का उत्पन्नकर्ता. ४ घड़ी की सुई. ५ बरछा. ६ आकाश. ७ सूर्य. ८ चन्द्रमा. ९ मोहित. १० समर्थ, शक्ति. ११ फ़क़ीर (भिखारी) और राजा. १२ अन्नदाता. १३ निर्धनता. १४ निश्चयवान् प्रवीण.

दायम[1] है तेरे मुजरे के मौक्या[2] की ताक में।
क्यों डर से उसके मुफ़्त में ज़ायल हुआ है तू ॥५॥
हमबग़ल[3] तुझसे रहता है हर आन[4] 'राम' तो।
बन परदा अपनी वसल[5] में हायल[6] हुआ है तू ॥६॥

[१०]

मनुवा[7] रे नादान! ज़री मान, मान, मान। (टेक)
आत्म गङ्ग सङ्ग जङ्ग, विष्ठा में गलतान ॥ १ ॥ मनुवा रे०
शाहंशाही छोड़ के, तू क्यों हुआ हैरान ॥ २ ॥ मनुवा रे०
शङ्कर शिव स्वरूप त्याग, शव[8] न बन री जान ॥ ३ ॥ मनुवा रे०
उदय अस्त राज तेरा, तीन लोक साज तेरा, फैंक दे अज्ञान ॥४॥ म०
हाय ब्रह्मघात करके, करे तू खान पान ॥ ५ ॥ मनुवा रे०
तू तो रवि रूप 'राम' शोक मोह से काहे काम, तिमिर की संतान ॥६॥ म०

[११]

(१) गंजे-निहां[9] के क़ुफ़्ल पर, सिर ही तो मोहरे-शाह[10] है।
तोड़ के क़ुफ़्लो-मोहर को कञ्ज़[11] को ख़ुद न पाये क्यों? ॥१॥

पंक्तिवार तात्पर्य [११]

(१) गुप्त भाण्डार (ख़ज़ाना) जो प्रत्येक प्राणी के भीतर है उसके ताले पर प्रजापति की मोहर अहङ्कार रूपी सिर है। हे प्यारे! इस ताले और मोहर को तोड़कर तू भीतर के रत्न (ख़ज़ाना) को क्यों नहीं पाता?

---

१ क़ायम. २ अवसर की प्रतीक्षा में. ३ बग़ल में, अर्थात् अपने साथ. ४ हर समय, ५ मिलाप. ६ दो के बीच आच्छादित. ७ रे मन. ८ मृतक, मुर्दा. ९ गुप्त भंडार. १० महाराजा की मोहर. ११ ख़ज़ाना, गुप्त रत्न.

(१) दीदा-ए-दिल[1] हुआ जो वा[2], खुल गया हुस्ने-दिलरुबा[3]।
यार खड़ा हो सामने, आँख न फिर लड़ाये क्यों ? ॥ २ ॥

(२) जब वह जमाले-दिलफ़रोज़[4], सूरते-मिहरे-नीमरोज़[5]।
आप ही हो नज़ारा सोज़, परदे में मुंह छुपाये क्यों ? ॥४॥

(३) दशना-ए-ग़मज़ा[7] जाँस्ताँ[8], नावके-नाज़े-बे पनाह[9]।
तेरा ही अक्से-रुख[10] सही, सामने तेरे आये क्यों ? ॥ ५ ॥

---

(१) दिल की आँखें जब खुल गईं तो प्यारे का सौन्दर्य भीतर खुल गया। हे प्यारे! जब अपना यार (प्रियतम) सामने खड़ा हो तो फिर उससे तू दृष्टि क्यों नहीं लड़ाता ?

(२) जब वह दिल को प्रकाशित करनेवाला सौन्दर्य मध्याह्न काल के सूर्य के रूप में आप ही दृष्टि को प्रकाशित करे, तो फिर हे प्यारे! तू पर्दे में मुख क्यों छिपाता है ?

(३) यह प्राण हरनेवाली नैन-कटारी रूपी डङ्क, यह अथाह नख़रे का तीर, यह चाहे तेरे ही मुख का प्रतिबिम्ब है, पर तेरे सामने क्यों आता है ? अर्थात् मोहनेवाली यह तेरी माया तेरी छाया होकर तेरे (स्वरूप के) सामने आकर तुझे क्यों ठगती है ?

---

१ दिल का नेत्र दिव्य चक्षु. २ खुल गया. ३ प्यारे का सौन्दर्य. ४ हृदय को प्रकाशित करनेवाला सौन्दर्य. ५ मध्याह्न काल के सूर्य के रूप में. ६ दृष्टि को प्रकाशित करे. ७ नैन कटारी. ८ प्राण हरनेवाला. ९ अथाह नख़रे का तीर. १० मुख की छाया या प्रतिबिम्ब.

(१) आप ही डाल साया को, उसको पकड़ने जाय क्यों ?।
साया जो दौड़ता चले, कीजिये हाये हाये क्यों ? ॥ ५ ॥

(२) अहलो-अयालो[1] मालो ज़र[2], सब का है बार[3] 'राम' पर।
अस्प[4] पै साथ बोझ धर, सिर पर उसे उठाये क्यों ? ॥ ६ ॥

---

(१) आपही अपनी छाया डालकर तू उसको पकड़ने क्यों दौड़ता है ? और छाया को पकड़ने के लिये भागते समय जब वह आगे दौड़ती चली जाती है (जोकि उसका स्वभाव है) तो हे प्यारे ! तू तब हाय हाय क्यों करता है ?

(२) घर बार (बाल बच्चे) और धन दौलत सब का बोझ जब एक राम भगवान् पर है, तो तू भोले जाट* के समान घोड़े पर अपने साथ बोझ रखकर उसको व्यर्थ अपने सिर पर क्यों उठाता है ?

---

१ बाल बच्चे. २ धन दौलत. ३ बोझ. ४ घोड़े पर.

* एक भोला जाट अपने साथ घोड़े पर असबाब रखकर अपने ग्राम को जा रहा था। घोड़े के साथ उसका अत्यन्त मोह था। समय मध्याह्न काल का था। ऋतु ग्रीष्म थी। असबाब घोड़े की पीठ पर रखकर उन पर आप सवार था। जब कुछ सवार रहने से (उसके और असबाब के बोझ से) घोड़े की पीठ पर पसीना आ गया तो मारे मोह के असबाब को उसने पीठ पर से अलग कर दिया। उसी पीठ पर आप स्वयं सवार हो गया और उस असबाब को अपने सिर पर रख लिया, जिससे बोझ तो घोड़े पर उतना ही रहा, पर व्यर्थ में अपनी गर्दन बोझ से तोड़ ली। (इसी प्रकार सब जगत् का बोझ ईश्वर रूपी घोड़े पर है, पर जो मूर्खता से उस बोझ को अपने सिर पर डाल लेता है, वह अपनी गर्दन व्यर्थ में तोड़ लेता है, बोझ चाहे तब भी ईश्वर पर वैसे ही रहता है)।

[१२]

फकीरा ! आपे अल्लाह हो। (टेक)

आपे लाड़ा[1], आपे लाड़ी[2], आपे मापे[3] हो ॥१॥
आप वधाइयाँ, आप स्यापे[4], आप अलापे[5] हो ॥२॥
राँझा[6] तूहीं, तूहीं राँझा, भुल हीर[7] न वेले[8] रो ॥३॥
तेरे जिहा[9] सानूं[10] एथे[11] ओथे, कोई न जापे[12] ओ ॥४॥
घुण्ड[13] कड के, क्यों चन मोंह उत्ते, आहले[14] रहयाँ खलो ॥५॥

---

[१२]

(१) आपही तू स्वयं पति, आप ही पत्नी, और आपही पिता माता है। इस लिये ऐ प्यारे! तू आप ही ईश्वर हो, अर्थात् वस्तुतः अपने आप को ही तू ईश्वर निश्चय कर।

(२) आप ही तू बधाई (आशीर्वाद); आप ही स्यापा और आप ही तू रोने पीटने का आलाप है। इस लिये ऐ प्यारे ! अपने आप को ही तू प्रभु अनुभव कर।

(३) वास्तव में तू ही राँझा और तू ही हीर है, अपने आपको भूल कर तू हीर की ख़ातिर वन में व्यर्थ मत रोदन कर।

(४) तेरे जैसा यहाँ वहाँ हमें कोई नहीं दीखता।

(५) अपने चन्द्र मुख पर घूंघट निकालकर तू एक ओर क्यों खड़ा हो रहा है ?

---

१ पति. २ पत्नी. ३ पिता माता. ४ पञ्जाब में मनुष्य के मरने पर स्त्रियाँ खड़े होकर जो नियमबद्ध अलाप से रोती पीटती हैं, उसे स्यापा कहते हैं. ५ उस स्यापे में जिस शब्द की टेक से पीटा जाता है उसे अलाप कहते हैं. ६ एक प्यारे का नाम है. ७ राँझा की प्रिया का नाम है. ८ वन, जङ्गल. ९ समान. १० हमें. ११ यहाँ वहाँ. १२ दीखता. १३ घूंघट. १४ पीछे, परे.

तूहीं सब दी जान प्यारीं, तैनूं ताना लगे न को ॥६॥
बोली ताना, यारी सेवा, जो देखें तूं सो ॥७॥
सूली सलीब[1], ज़हर दे मुके[2], कदे न मुकदा जो ॥८॥
बुकल[3] विच वड़, यार जो सुत्ते, ओथे[4] तेरी लो[5] ॥९॥
तूहीं मस्ती विच शराबाँ, हर गुल[6] दी खुशबो ॥१०॥
राग रङ्ग दी मिट्ठी सुर तूं, लैं कलेजा[7] टो ॥११॥
लाह[8] लीड़े, यूसफ घुट मिल लै, दूई दे पट दो ॥१२॥

---

(६) तू ही सब की प्यारी जान है, तुझे कोई बोली ठठोली नहीं लग सकती है।

(७) बल्कि बोली ठठोली, मित्रता, सेवा इत्यादि जो दीखता है, वह सब तू है।

(८) सूली सलीब और ज़हर के अन्त होने पर जो कदापि नहीं मरता, वह तू है।

(९) प्यारे को बग़ल में प्रवेश होकर जब सोये तो वहाँ तेरा ही प्रकाश पाया।

(१०) शराब में मस्ती और पुष्प में गन्ध तू है इसलिये अपने आप का तू अनुभव कर।

(११) कलेजे में चुटकियाँ भरनेवाली जो राग रङ्ग की मीठी स्वर है वह तू है।

(१२) द्वैत के वस्त्र उतारकर तू अपने प्यारे आत्मा (यूसफ़) को घुट कर मिल।

---

१ एक प्रकार की सूली. २ ख़तम होने पर. ३ बग़ल. ४ वहाँ. ५ प्रकाश. ६ पुष्प. ७ चिच में चुटकियाँ भरता है. ८ वस्त्र उतारकर.

आठवें अर्श[1] तेरा नूर चमकदा होर[2] भी ऊंचा हो ॥१३॥
यह दुन्या तेरे नौंहां[3] दे चिन्ह, हथ[4] गल ते रख न रो ॥१४॥
जे रब भालें वाहिर किधरे, पस[5] गल्लों मुड़ धो ॥१५॥
तू मौला नहीं बन्दा चन्दा, झूठ दी छुड्डदे[6] ख़ो ॥१६॥
पवन इन्दर तेरी पगड़ाँ[7] ढोंदे, क्यों, तैनू किते न ढो ॥१७॥
काहनूं[8] पया खेड़ना हैं भौं भौं बिलयां, बैठ निचल्ला हो ॥१८॥
तेरे तारे सूरज थई थई नचदे, तूं बह जाकर[10] चो ॥१९॥

---

(१३) आठवें आकाश पर तेरा ही प्रकाश है, और तू इससे भी ऊपर हो।

(१४) यह संसार तेरे नाखुनों का खेल है, तू मुख पर हाथ रखकर मत रो।

(१५) यदि तू अपने से वाहिर कहीं ईश्वर ढूँढना चाहता है, तो इस बात से तू रो।

(१६) तू स्वयं मालिक व प्रभु है, नौकर चाकर तू नहीं है। अपने आप को बद्ध जीव मानने का जो तेरा झूठा स्वभाव है, इसे तू छोड़।

(१७) पवन व इन्द्र देवता तो तेरा बोझ उठाते हैं फिर तेरी सेवा क्यों नहीं कभी करते ?

(१८) प्यारे को इधर उधर ढूँढने की जो घूमन घेरी खेल है, उस खेल को व्यर्थ तू क्यों खेलता है। स्थिर होकर बैठ और अपना अनुभव कर।

(१९) तेरे आश्रय तारे और सूर्य थई थई नाच रहे हैं। तू स्वयं स्थिर होकर बैठा रह।

---

१ आकाश. २ और. ३ नाखुन. ४ हाथ. ५ इस बात से. ६ स्वभाव. ७ बोझ ढाते. ८ किस लिये. ९ घूमन घेरी खेल. १० मौज़ से, आनन्द से.

पचे न तैनू सुख वे ओड़क, पहो गिरनी[1] खो ॥२०॥
दुःखहर्ता ते सुखकर्ता, तै नूं ताप गये कद[2] पोह[3] ॥२१॥
चोर न पये, तैनूं भूत न चमड़े होर गयो क्यों हो ॥२२॥
तूं साक्षी केढ़ी[4] कईयां मारें, हुन[5] थक कर चल्लियाँ हैं सो ॥२३॥
खुल्लियाँ तैनू[7] भऊ न खान्दे, लुक लुक कैद न हो ॥२४॥
वहदत[9] नूं कर कसरत[10] देखें, पयों भैङ्गा[11] किधरों[12] हो ॥२५॥
ताज तखत छड ठट्टी[13] मल्ली, एस[14] गल्लों तू रो ॥२६॥

---

(२०) तुझे अनन्त सुख पचता नहीं है, इस बदहज़मी को तू दूर कर।
(२१) तू स्वयं दुःखहर्ता और सुखकर्ता है, तुझे कब तीनों ताप तपा सकते हैं?
(२२) तुझे चोर नहीं पकड़ते और न भूत प्रेत तुझे चमट सकते हैं, फिर तू अपने से इतर क्यों हो रहा है?
(२३) तू साक्षी कौन सी कशियाँ मार रहा है अर्थात् कौन सा परिश्रम कर रहा है जो अब थक कर रोने लगा है?
(२४) मुक्त (आज़ाद) होने में तुझे कोई राक्षस इत्यादि तो नहीं खाते, इसलिये छिप छिप कर बद्ध मत हो।
(२५) एकता को तू बहुत करके देखता है। भैंगे नेत्रवाला तू कहाँ से हो गया है।
(२६) निज राज्य का ताज और तखत छोड़कर छोटी सी कुटिया तू ने ले ली है, इस मूर्खता पर तू रोदन मत कर और अपने स्वरूप का अनुभव कर।

---

१ बदहज़मी दूरकर. २ सताने लगे. ३ कब. ४ दूसरा. ५ कौन सी. ६ अब. ७ तुझे. ८ हव्वा, शैतान. ९ अद्वैत. १० द्वैत बहुत. ११ कम दृष्टिवाला. १२ कहाँ से. १३ छोटी कुटिया. १४ इस बात से.

छड के घर दियाँ खराडां खीरां, की लोड़[1] चबावें तो[1] ॥२७॥
तेरे घर विच राम वसेन्दा, हाय कुट कुट भर न भो[2] ॥२८॥
राम रहीम सब वन्दे तेरे, तेथों[3] वड़ा न को ॥२९॥
आप भगीरथ, आपही तीरथ, बन गङ्गा मल धो ॥३०॥
पर्दे फाश होवीं रब करके, नङ्गा सूरज हो ॥३१॥
छड मोहरा,[5] सुन 'राम' दुहाई, अपना आप न[6] को ॥३२॥

---

(२७) निज घर के स्वादिष्ट भोजन छोड़कर छिलके व तूरी को तू क्यों चबा रहा है ?

(२८) तेरे घट में जब राम बस रहा है । हाय वहाँ भुस कूट कूट कर मत भर ।

(२९) राम रहीम सब तेरे बन्दे (सेवक) हैं, तुझसे बड़ा कोई नहीं है ।

(३०) गङ्गा को स्वर्ग से लानेवाला राजा भगीरथ तू आप है और आप ही तू तीर्थ है, स्वयं गङ्गा रूप होकर तू सब मल धो ।

(३१) ईश्वर करे तेरे सब पर्दे खुलें और तू सूर्यवत् नितान्त नङ्गा हो ।

(३२) तू संसार रूपी खेल का विषयभोग रूप विष को त्याग, ऐसी राम की पुकार है, और अपने आप व्यर्थ नाश मत कर ।

---

१ छुकरव. २ हड्डी, भुस. ३ तुम. ४ तुझसे. ५ संसार रूपी खेल का मौहरा छोड़. ६ कोसना, शाप देना, आत्मघात करना.

भक्ति (इश्क़)

[१३]

(१) कलीदे इश्क़[1] को सीने[2] की दीजिये तो सही।
मचा के लूट कभी सैर कीजिये तो सही ॥ १ ॥
(२) करो शहीद खुदी[3] के सवार को रोकर।
यह जिस्मे दुलदुले बेयार[4] कीजिये तो सही ॥ २ ॥
(३) जला के ख़ाना ओ अस्वाब[5] मिस्ल नीरो[6] के।
मज़ा सरोद[7] का शोलों[8] का लीजिये तो सही ॥ ३ ॥

---

[१३]

(१) हार्दिक प्रेम की कुञ्जी तो अपने भीतर के भण्डार को दो और फिर उसकी लूट मचाकर कभी आनन्द तो लो।

(२) देह का सवार जो अहंकार है इसको मारकर शहीद तो करो और इस शरीर को सवार-रहित घोड़े (दुलदुल) के समान तो कर देखो।

(३) नीरो बादशाह के समान अपना घर बार और अस्बाब (अर्थात् अहंकार और उसकी सब पूंजी को) जलाकर (निज स्वरूप रूपी पर्वत के शिखर पर चढ़कर) उस अहंकार को जलने को और (निज स्वरूप के) राग रङ्ग का आनन्द तो लो।

---

१ प्रेम की कुञ्जी. २ दिल. ३ अहङ्कार. ४ उस घोड़े को कहते हैं जो मुसल्मानों के हज़रत हसन हुसेन की सवारी में था और युद्ध में अपने सवार हज़रत साहिब के मारे जाने पर ख़ाली घर में आ गया था और इस प्रकार अपने सवार के मारे जाने की सूचना दी. ५ घर बार व धन दौलत. ६ एक राजा का नाम है जिसने अपने देश को आग लगाकर आप एक पर्वत पर चढ़कर राग रङ्ग किया और प्रजा को जलते देखकर प्रसन्न हुआ. ७ राग रङ्ग. ८ अग्नि.

(१) है खुम[1] तो मय[2] से लबालब यह तिशना[3] कामी क्यों ?
लो तोड़ मोहरे[4] खुदी मय भी पीजिये तो सही ॥ ४ ॥

(२) उड़ा पतङ्ग मुहब्बत का चर्ख़[5] से भी दूर ।
ख़िरद[6] की डोर को अब छोड़ दीजिये तो सही ॥ ५ ॥

(३) मज़ा दिखायेंगे जो कह दो राम[7] मैं ही हूँ ।
ज़मीं[8] ज़माँ को भी यूँ 'राम' कीजिये तो सही ॥ ६ ॥

[१४]

(४) इश्क़[9] का तूफ़ाँ[10] बपा है, हाजते मयख़ाना[11] नेस्त[12] ।
ख़ूँ शराबो दिल कबाबो, फ़ुरसते पैमाना[13] नेस्त ॥ १ ॥

---

(१) निजानन्द रूपी शराब से जब दिल का मटका पूर्ण है तब प्यासा गला क्यों ? इस मटके की मोहर को तोड़कर आनन्द रूपी मद तो पीजिये ।

(२) प्रेम का पतङ्ग जब आकाश से भी दूर उड़ जाय तब बुद्धि रूपी रस्सी को ढीला छोड़ तो दो ।

(३) यदि तुम अपने आपको राम भगवान् कह दो तो हम आपको निजानन्द का साक्षात्कार करायें । इस प्रकार से देश (पृथिवी) और काल सब को स्वाधीन तो कर लो ।

[१४]

(४) प्रेम घटा आई हुई है, अन्य शराबख़ाने की अब ज़रूरत नहीं है । इस समय अपना रुधिर तो शराब है और चित्त कबाब है, अतएव किसी प्याले का अब अवकाश नहीं ।

---

१ (हृदय रूपी) मटका. २ प्रेम रूपी शराब, मद. ३ प्यासा गला. ४ अहङ्कार की मोहर. ५ आकाश. ६ बुद्धि. ७ राम भगवान्. ८ अधीन, अनुचर, आज्ञाकारी. ९ प्रेम. १० घटा. ११ शराबख़ाने की ज़रूरत. १२ नहीं है. १३ प्याला.

(१) सख़्त मख़मूरी[1] है तारी[2], ख़्वाह कोई कुछ कहे।
पस्त[3] है आलम[4] नज़र में, वहशते दीवाना[5] नेस्त ॥ २ ॥
(२) अल्विदा[6] ऐ मर्ज़ें दुनिया! अल्विदा ऐ जिस्मो जाँ!।
ऐ अतश[7]! ऐ जू[8]! चलो, ईं जा[9] कबूतरख़ाना नेस्त ॥ ३ ॥
(३) क्या तजल्ली[10] है यह नारे हुस्न[11] शोलाख़ेज़[12] है।
मार ले पर ही यहाँ पर ताक़ते परवाना नेस्त ॥ ४ ॥
(४) मिहर[13] हो मह[14] हो दबिस्ताँ[15] हो गुलिस्ताँ[16] कोहसार[17]।
मौजज़न[18] अपनी है ख़ूबी, सूरते बेगाना नेस्त ॥ ५ ॥

---

(१) प्रेम मद का नशा अत्यन्त चढ़ा हुआ है इसलिये अब चाहे कोई कुछ पड़ा कहे, सारा संसार तो तुच्छ हो रहा है। पर यह पागल मनुष्य की पशुवृत्ति के समान दशा नहीं है।

(२) हे जगत् के रोग! तू अब रुख़सत हो, हे देह, प्राण! तुम दोनों भी अब रुख़सत हो। हे भूख प्यास! तुम दोनों मेरे पास से परे हटो, यह जगह कोई कबूतरख़ाना (अर्थात् तुम्हारे रहने सहने का घर) नहीं है।

(३) आहा! सौन्दर्य की तेज़ ज्वाला कैसी भड़की हुई है। अब किसी परवाने की शक्ति है जो इसके आगे पर भी मार सके?

(४) सूर्य हो चाहे चन्द्र, पाठशाला हो चाहे बाग़ और पर्वत, इन सब में अपनी ही सुन्दरता तरंगें मार रही है, अन्य किसी रूप की नहीं।

---

१ नशा. २ छाया हुआ. ३ तुच्छ. ४ संसार. ५ पागल पुरुष का वहशीपन (पशुवत् व्यवहार). ६ रुख़सत हो. ७ प्यास. ८ भूख, क्षुधा. ९ इस जगह. १० प्रकाश, चमक. ११ सौन्दर्य रूप ज्वाला. १२ भड़की हुई. १३ सूर्य. १४ चन्द्र. १५ पाठशाला. १६ बाग़. १७ पर्वत व पहाड़ी जगह. १८ तरंगमयी वा लहरा रही.

(१) लोग बोले गहन[1] ने पकड़ा है सूरज को, ग़लत।
ख़ुद हैं तारीकी[2] में बरमन[3] साया महजूबाना[4] नेस्त ॥ ६ ॥
(२) उठ मेरी जाँ! जिस्म से, हो ग़र्क़ ज़ाते राम[5] में।
जिस्म[6] बद्रीश्वर की मूरत, हरकतें फ़रज़ाना[7] नेस्त ॥ ७ ॥

---

(१) लोग कहते हैं कि सूर्य को ग्रहण ने पकड़ रक्खा है, पर वह नितान्त झूठ है। क्योंकि स्वयं तो अन्धकार में होते हैं और प्रकाश स्वरूप सूर्य को अन्धकार में समझने लग जाते हैं। जैसे सूर्य का ग्रहण से पकड़े जाना झूठ है और सूर्य वास्तव में ग्रहण से ऊपर होता है, ऐसे ही मुझे अज्ञान के पर्दे में आसक्त मानना झूठ है और मुझ पर वास्तव में किसी प्रकार का पर्दा ढकनेवाला नहीं है।

(२) हे मेरे प्राणों! इस देह से उठकर राम के स्वरूप में लीन हो जाओ। और देह ऐसा हो जाय जैसे बदरीनारायण जी की मूर्ति कि जिसमें बालकवत् चेष्टा भी नहीं है।*

---

१ ग्रहण. २ अन्धकार. ३ ऊपर. ४ पर्दे में छुपे हुये के समान छिपानेवाला. ५ राम का स्वरूप. ६ देह. ७ बालकवत् चेष्टा.

* यह कविता सन् १९०२ की दीपमाला में हिमालय के बदरीनारायण के मन्दिर में ग्रहण के समय लिखी गई थी। अतएव इसमें ग्रहण और बदरीनाथ की मूर्ति का दृष्टान्त आया है।

[१५]

भाग[1] तिन्हाँ दे अच्छे, जिन्हाँ नूं राम मिले। (टेक)

(१) जद[2] "मैं" सी ताँ दिलबर नासी।
"मैं" निकसी पिया घट घट वासी॥
खसम[3] मरे घर वस्से ! भाग तिन्हाँ०॥ १॥

(२) जद "मैं" मार पिछाँ[4] वल सुट्टियाँ[5]।
प्रेम नगर चढ़ सेजे सुत्तियाँ॥
इशक़ हुलारे[6] वस्से ! भाग तिन्हाँ०॥ २॥

---

[१५]

(टेक) उनके भाग्य निःसन्देह बड़े अच्छे हैं जिन्हें राम मिल जायँ।

(१) जब तुच्छ अहंकार रूपी 'मैं' भीतर थी तब अपरिच्छिन्न अहंकार रूपी मैं अर्थात् प्यारा आत्मा भीतर अनुभव नहीं होता था। और जब तुच्छ अहंकार रूपी मैं भीतर से निकल गई (अर्थात् जब उसका अभाव हो गया) तब प्यारा (निज स्वरूप) घट २ में बसा अनुभव हुआ।

(२) जब इस तुच्छ अहंकार को मारकर पीछे फेंका तब प्रेमानन्द भोगना नसीब हुआ। फिर तो प्रेम अपना प्रबल वेग दर्शाने लग पड़ा।

---

१ भाग्य. २ जब मैं थी. ३ पति, स्वामी तात्पर्य अहंकार से. ४ पिछली ओर. ५ फेंका. ६ झोर दिखावे.

(१) चादरफूक शरह[1] दी सेकाँ[2]।
अखियाँ खोल दिलबर नूं देखाँ॥
भरम शुब्हे सब नस्से[3]। भाग तिन्हाँ० ॥ ३॥
(२) ढूंड ढूंड के उमर गँवाई।
जाँ घर अपने झाती पाई॥
राम सज्जे[4], राम खब्बे[5]। भाग तिन्हाँ० ॥ ४॥

ज्ञान

[१६]

[छान्दोग्योपनिषद् के एक श्लोक का भावार्थ]

क़फ़स[6] एक था आईनों[7] से बना।
लटकता गुले ताज़ह[8] मरकज़[9] में था॥ १॥
था फूल एक, पर अक्स[10] हर तर्फ़ थे।
थे माशूक़ सब बुलबुले बन्द[11] के॥ २॥
गुले अक्स[12] की तर्फ़ बुलबुल चली।
चली थी न दम भर कि ठोकर लगी॥ ३॥

(१) जब मैं कर्म-काण्ड रूपी अज्ञान के पर्दे को ज्ञानाग्नि से जलाकर उसकी आग तापने लगा तब निज स्वरूप प्रत्यक्ष अनुभव होने लगा, तब तो सारे भ्रम संशय स्वतः दूर हो गये।
(२) इतनी देर तक तो तलाश में आयु खोई। पर जब अपने भीतर दृष्टि दी तो राम (निज स्वरूप) को दायें बायें अर्थात् चारों ओर व्यापक पाया।

१ कर्म-काण्ड. २ तापी. ३ भागे. ४ दायें. ५ बायें. ६ पिञ्जरा. ७ शीशों. ८ ताज़ह पुष्प. ९ बीच में या केन्द्र में, १० प्रतिबिम्ब. ११ क़ैद या घिरा हुआ पक्षी (बुलबुल). १२ पुष्प का प्रतिबिम्ब.

जिसे फूल समझी थी साया ही था।
यह झपटी तो तड़ शीशा सिर पर लगा॥ ४॥

जो दायें को झाँका वहीं गुल खिला।
जो बायें को दौड़ी यही हाल था॥ ५॥

मुक़ाबल उड़ी मुंह की खाई वहाँ।
जो नीचे गिरी चोट आई वहाँ॥ ६॥

कफ़स के था हर सिम्त[1] शीशा लगा।
खिला फूल था वस्त[2] में वाह.वा॥ ७॥

उठा सिर को जिस आन[3] पीछे मुड़ी।
तो ख़न्दाँ[4] था गुल आँख उससे लड़ी॥ ८॥

झजकने लगी अब भी धोका न हो।
है सचमुच का गुल तो फ़क़त[5] नाम को॥ ९॥

चली आख़रश[6] करके दिल को दिलेर।
मिला गुल, लगी इक न दम भर की देर॥ १०॥

मिला गुल, हुई मस्तो दिलशाद[7] थी।
कफ़स था न शीशे वह आज़ाद थी॥ ११॥

यही हाल इन्सान! तेरा हुआ।
कफ़स में है दुनिया के घेरा हुआ॥ १२॥

भटकता है जिसके लिये दर बदर।
वह आराम है क़ल्ब[8] में जल्वागर[9]॥ १३॥

---

१ प्रत्येक ओर. २ मध्य. ३ जिस समय. ४ खिला हुआ. ५ केवल. ६ अन्त में. ७ आनन्द प्रसन्न. ८ भीतर दिल के. ९ प्रकाशमान.

[१७]

पड़ी जो रही एक मुद्दत[1] ज़मीं में।
छुरी तेज़ आहन[2] की मट्टी ने खाई॥ १॥
करे काटना फाँसना किस तरह अब।
ज़मीं से थी निकली, ज़मीं ने मिलाई॥ २॥
हुआ अब ज़मीं ख़ुद यह लोहा तो बस फिर
न आतश[3] सही सिर पे नै[4] चोट आई॥ ३॥
छुरी है यह दिल, इसको रहने दो बेख़ुद।
यहाँ तक कि मिट जाय नामे जुदाई॥ ४॥
पड़ा ही रहे ज़ाते मुतलक़[5] में बेख़ुद।
ख़बर तक न लो है इसी में भलाई॥ ५॥
मेरा तेरा का चीरना फाड़ना सब।
उड़े हो दुई की न मुतलक़[6] समाई॥ ६॥
न गुस्सा जलाये, मुसीबत की नै चोट।
मिटे सब तअल्लुक़[7], ख़ुदाई, ख़ुदाई॥ ७॥
जिसे मान बैठे थे घर यार! भाई।
यह घर से भुलाने की थी एक फाई[8]॥ ८॥
भुला घर को मञ्ज़ल[9] में घर कर लिया जब।
तो निज बादशाही की कर दी सफ़ाई॥ ९॥
हवा के बगोलों से जब दिल को बाँधा।
छुटी ना उमेदों की मुंह पर हवाई॥ १०॥

---

१ समय, काल. २ लोहा. ३ अग्नि. ४ नहीं. ५ ब्रह्म स्वरूप. ६ जितान्त अर्थात् किञ्चित भी समाई न हो. ७ सम्बन्ध. ८ फाँस बन्धन वा फंद. ९ ज्ञान प्रकाश.

कँवल, मरदुमे चश्म[1], सूरज, चते आब[2]।
तअल्लुक़ की आलूदगी[3] थी न राई ॥ ११ ॥
जो सच पूछो सैरो तमाशा भी कब था।
न थी दूसरी शय[4] न देखी दिखाई ॥ १२ ॥
थी दौलत की दुनिया में जिसकी दुहाई[5]।
जो खोला गिरह[6] को तो पाई न पाई[7] ॥ १३ ॥
किये हर सेह[8] हालत के गरचिह नज़ारे।
चले[9] 'राम' तनहा[10] था मुतलक़[11] अकाई ॥ १४ ॥

[१८]

कहाँ जाऊँ ? किसे छोड़ूं ? किसे ले लूं ? करूँ क्या मैं ?।
मैं इक तूफ़ाँ क़यामत का हूं, पुर[12] हैरत तमाशा मैं ॥ १ ॥
मैं बातन[13] में अयाँ[14], ज़ेरो[15] ज़बर, चप[16] रास्त, पेशो[17] पस।
जहाँ मैं, हर मकाँ[18] मैं, हर ज़माँ[19] हूंगा, सदा था मैं ॥ २ ॥
नहीं कुछ जो नहीं मैं हूं, इधर मैं हूं, उधर मैं हूं।
मैं चाहूं क्या ? किसे ढूंडूं ? सभी में ताना बाना मैं ॥ ३ ॥
वह बहरे हुस्नो[20] खूबी हूं, हुबाब[21] हैं काफ़[22] और कैलाश।
उड़ा इक मौज[23] से क़तरा, बना तब मिहर[24] आसा मैं ॥ ४ ॥

---

१ नेत्र की पुतली. २ जल में रहनेवाली बतख. ३ आलेप, लेप. ४ वस्तु. ५ शोर, पुकार. ६ गाँठ. ७ एक पैसे का तीसरा भाग. ८ तीनों अवस्था. ९ किन्तु. १० अकेला. ११ नितान्त अद्वैत. १२ आश्चर्य भरा हुआ. १३ भीतर. १४ बाहर, प्रकट. १५ नीचे ऊपर. १६ बायें, दायें. १७ आगे पीछे. १८ देश. १९ काल. २० सुन्दरता का समुद्र. २१ बुलबुला. २२ कोहकाफ़ के पर्वत से आशय है. २३ लहर. २४ सूर्य जैसा.

ज़रो नेमत[1] मेरी किरणों में धोका था सुराब[2] ऐसा।
तजल्ली नूर[3] है मेरा कि 'राम' अहमद हूं ईसा में ॥ ५ ॥

[१९]

प्रश्न

मेरा 'राम' आराम है किस जा[4]? देखकर उसको जी[5] करूँ ठण्डा।
क्या वह इस इक शिला पै बैठा है? क्या वह महदूद[6] और यकजा[7] है?

ज़ुमला मोतर्ज़ा

वाह क्या चाँदनी में गंगा है, दूध हीरों के रंग रंगा है।
साफ़ बातन[8] से आवे सीमीं[9] बर, मीठी मीठी सुरों से गा गा कर।
लुत्फ़ रावी[10] का आज लाती है, यूं पता 'राम' का सुनाती है॥

[२०]

उत्तर

देखो मौजूद सर्व जगह हैं राम, माह[11] बादल हुआ है उसका धाम।
बल्कि हैं ठीक ठीक बात तो यह, उसमें है बूदो-बाशे-आलमे[12]-सेह॥
वह अमूरत है मूरती उसकी, किस तरह हो सके? कहाँ? कैसी?
कुल्ले-शेऽन[13]-मुहीत है आकाश, मूर्ती में न आ सके परकाश।
जो है उस एक ही की मूरत है, जिस तरफ़ झाँकें उसकी सूरत है॥

---

१ धन दौलत. २ मृगतृष्णा का जल. ३ तेजोमय प्रकाश. ४ स्थान, जगह. ५ चित्त, दिल. ६ परिच्छिन्न. ७ एक देशी. ८ भीतर से शुद्ध. ९ चाँदी की सूरतवाला जल. १० दरिया का नाम है जो लाहौर में बहता है. ११ चाँद. १२ उसमें तीनों लोकों की स्थिति और आश्रय है. १३ समस्त वस्तुओं को घेरे हुए अर्थात् सर्वव्यापक.

[२१]

उत्तर स्वरूप प्रश्न

मस्त ढूंढ़े है होके मतवाला[1], कुछ पता दो कहाँ है मतवाला।
गङ्गा करती फिरे है गङ्ग गङ्ग गङ्ग, "हाय गङ्गा का पाऊँ क्योंकर सङ्ग ?"
मुख से घूंघट उठा के वह प्यारा, "खोजता है किधर गया प्यारा ?"
भाङ्ग पी पी के भङ्ग कहती है, "बूटी शिव की किधर गई है ये !"
मस्ती पूछे है मस्त नैनों से, "हैं कहाँ पर वह नशा के डोरे ?"
रात भर ताकता फिरा तारा, फाड़ आँखों को, "है कहाँ तारा ?"
राम वन वन को छान थक हारा, "मेरा आराम, 'राम' है किस जा[2]?

[२२]

एक प्यारे के पत्र का उत्तर

सरोदो[3] रक्सो[4] शादी[5] दम बदम[6] है, तफ़क्कुर[7] दूर है और ग़म को रम[8] है
ग़ज़ब ख़ूबी है, बेरूँ-अज़-रक़म[9] है, यक़ीनन[10] जान, तेरी ही क़सम है
मुबारक हो तबीयत का यह खिलना, यह रसभीनी अवस्था जामे[11]-जम है
मुबारक दे रहा है चाँद झुककर, सलामों[12] से कमर में उसकी ख़म[13] है
पिये जाओ दमा दम जाम[14] भरकर, तुम्हारा आज लाखों पर क़दम है
गुलों[15] से पुर हुआ है दामने[16] शौक़, फ़लक[17] ख़ेमा[18] है कैवाँ[19] पर अलम[20] है
तिरे दीदों[21] पै भूले से हो शबनम, कभी देखा सुना "सूरज पै नम[22] है" ?

---

१ मस्त. २ स्थान, जगह. ३ राग रङ्ग. ४ नाच. ५ तमाशा, खुशी. ६ निरन्तर. ७ सोच, फ़िक्र. ८ दूर भागा हुआ. ९ वर्णन से बाहर. १० निश्चय पूर्वक. ११ जमशेद बादशाह का प्याला जिससे मस्ती लाई जाती थी. १२ नमस्कारों. १३ टेढ़ापन, झुकाव. १४ (निजानन्द के) प्याले. १५ पुष्पों से. १६ जिज्ञासा का पल्ला अर्थात् तीव्र जिज्ञासा. १७ आकाश. १८ मण्डप, तम्बू. १९ शनितारा. २० झंडा. २१ नेत्रों, २२ ऋजीतता, ठंडक, गीलापन.

रखें आगे को क्या क्या हम न उम्मेद. कि मारा गुर्गे[1] ग़म, पहिला क़दम है
दिखाया है प्रकृति ने नाच पूरा, सिले[2] में उड़ गई, ऐहै! सितम[3] है
ग़लत[4] गुफ़्तम, शकायत की नहीं जा[5], मिली आ पुरुष में, अद्लो करम[6] है
न कहता था तुम्हें क्या 'राम' पहिले? सवादे[7] ईद आई, रात कम है

[२३]

(१) जाँ[8] तूं दिल दीयाँ चशमाँ[9] खोलें, हूं अल्लाह[10] हूं अल्लाह बोलें।
मैं मौला कि मारें चीख, अल्लाह शाह रग थीं नज़दीक ॥ १ ॥
(२) जाम[11] शराबे[12] वहदत वाला, पी पी हर दम रहो मतवाला।
पी मैं वारी लाके डीक[13], अल्लाह शाह रग थीं नज़दीक ॥ २ ॥

---

[२३]

(१) यदि तू अपने दिल के नेत्र खोले तो अहंब्रह्मास्मि २ स्वतः बोलने लग पड़े और यों पुकार उठे कि "ईश्वर मैं हूं" और "अपने गले से भी अधिक समीप ईश्वर है"।

(२) अद्वैतामृत रूपी शराब के प्याले को ऐ प्यारे! तू घड़ी घड़ी पी कर मस्त हो, और एक घूंट में ही सब पी जाओ (और याद रख) कि ईश्वर अपने गले से भी अधिक समीप है।

---

१ चिन्ता का भेड़िया. २ पर्दे में. ३ आश्चर्य है, जुल्म है. ४ मैंने ग़लत कहा. ५ स्थान, जगह. ६ न्याय और दया (अर्थात् प्रकृति का अपने पुरुष में लय होना ही ठीक न्याय और भगवत्कृपा है). ७ आनन्द की मात्रा. ८ जब. ९ नेत्र. १० मैं ब्रह्म हूं, शिवोऽहं. ११ प्याला. १२ अद्वैत रूपी शराब का. १३ एकदम.

(१) गिरजा तस्बीह[1] जंजू तोड़ें, दीन[2] दुनी वल्लों मुंह मोड़ें।
ज़ात पाक[3] नूं ला न लीक[4], अल्लाह शाह रग थीं नज़दीक ॥ ३ ॥
(२) जे तैनूं राम मिलन दा चा[5], ला लै छाती लग्गा द्रा।
नाम लोहा दा धरिया पीक, अल्लाह शाह रग थीं नज़दीक ॥ ४ ॥
(३) न दुनिया दीरचेः उड़ा, हाहाकार न शोर मचा।
छुठ रोना, हस, गा ते गीत, अल्लाह शाह रग थीं नज़दीक ॥ ५ ॥

---

(१) मतभेद के ज़ोश में आकर जो तू गिरजा, माला और यज्ञोपवीत तोड़ता है उससे तू दीन और दुनिया से मुख फेरता है अर्थात् तू लोक परलोक से गिरता है। ऐ प्यारे! अपने शुद्ध पवित्र स्वरूप को धब्बा मत लगा और याद रख कि ईश्वर गले से भी अधिक समीप है।

(२) यदि तुझे राम भगवान् के मिलने की इच्छा या जिज्ञासा है तो दिल खोल कर छाती लगा। (लोहा लोहे के वर्तन से कोई भिन्न नहीं है बल्कि) लोहा ही दूसरे रूप में आकर पीक नाम से कहलाता है। इसी प्रकार, ईश्वर ही दूसरे रूपों में भिन्न भिन्न नाम से कहलाता है और वह गले से भी अधिक समीप है।

(३) न तू संसार की राख उड़ा और न हाहाकार का शोर मचा, बल्कि इस रुदन को छोड़कर हँस और आनन्द से गीत गायन कर, और याद रख कि ईश्वर गले से भी अधिक समीप है।

---

१ स्मरणी. २ धर्म अर्थ या लोक परलोक की ओर से. ३ शुद्ध स्वरूप को. ४ धब्बा. ५ जिज्ञासा.

(१) चुक सुट पर्दा दूई वाला, अख्याँ विच्चों कढ छुड आला ।
"तूं ही तूं" नहीं होर[1] शरीक, अल्लाह शाह रग थीं नज़दीक ॥६॥
(२) सुन सुन सुन ले 'राम' दुहाई, बे अन्ता क्यों अन्त है चाई ।
मालिके कुल[2] तूं, मंग न भीख, अल्लाह शाह रग थीं नज़दीक ॥७॥

ज्ञानी

[२४]

ज्ञानी की आभ्यन्तर दशा

नसीमे[3] बहारी चमन[4] सब खिला । अभी छींटे दे दे के बादल चला ।
गुलों[5] ने बोसा[6] लो, चान्दना का मिला । जवाँ नाज़नी[7] इक सरापा[8] चला ।
हुई खुश, मिला तख़लिया[9] क्या भला । करीब आई, घूरी, हँसी खिलखिला ।
न जादू से लेकिन ज़रा वह हिला । निगह[10] से दिया काम[11] को झट जला ।

---

(१) द्वैत का पर्दा तू दूर फेंक और दिल के नेत्र भीतर मल को बाहिर निकाल डाल (फिर तू देखेगा कि) सब "तू ही तू" वास्तव में है और तेरे से भिन्न कोई नहीं है । और ईश्वर इस लिये गले से भी अधिक समीप है ।

(२) ऐ प्यारे ! खूब कान लगाकर राम दुहाई राम की पुकार सुन, अनन्त होते हुए तू अन्तवान् होने की क्यों इच्छा करता है ? तू वास्तव में सबका मालिक है, इसलिये भीख मत माँग (अर्थात् भिखारी मत बन) और ईश्वर तो गले से भी अधिक समीप है ।

---

१ दूसरा. २ सकल संसार का स्वामी. ३ वसन्त ऋतु की मन्द मन्द स्पन्द (ठंडी वायु). ४ बाग़. ५ पुष्प. ६ चुम्बन. ७ युवा बाँकी स्त्री (कामिनी). ८ अति सुन्दर. ९ एकान्त. १० दृष्टि. ११ कामवृत्ति (विषय वासना).

सकी जब न सूरज में दीवा जला। परी बन गई खुद मुजस्सम[1] हया।
कि सब हुस्न[2] की जान मैं ही तो हूं।
मेहर[3]-ओ-माह के प्राण मैं ही तो हूं॥ १॥

हज़ारों जमा पूजा सेवा को थे। थे राजे चँवर मोरछल कर रहे।
थे दीवान धोते क़दम[4] शौक़ से। थे ख़िदमत में हाज़र मद्दह[5] खाँ खड़े।
ऋषी तुम हो अवतार सब से बड़े। यह सब देख बोला लगा क़हक़हे[6]।
बड़ा ही नहीं बल्कि छोटा भी हूं।
न महदूद[7] करियेगा सब मैं ही हूं॥ २॥

बुरे तौर थे लोग सब छोड़ते। [8]ठटोली से थे फबतियाँ बढ़ रहे।
तड़ातड़ तड़ातड़ वह पत्थर जड़े। लहू के निशाँ सिर पै रुख़[9] पै पड़े।
पया[10] पै थे ज़ख़्म और सदमे[11] कड़े। थे दीदे[12] अजब मुस्कराहट[13] भरे।
कि इस खेल की आन मैं ही तो हूं।
यह लीला के भी प्राण मैं ही तो हूं॥ ३॥

समय नीम[14]शब, माह[15] था जनवरी। हिमालयकी बर्फ़ें, सियह रात थी।
बरफ़ की लगी उस घड़ी इक झड़ी। थमी बर्फ़[16] बारी, तो आँधी चली।
बदनकी तो गत[17] बेदमजनूँ सी थी। पै दिलमें थी ताक़त, लबों पर हँसी।

---

१ लज्जायती अर्थात् जब ज्ञानी रूप सूर्य में वह कामिनी अपना विषय वासना रूपी दीपक न जला सकी अर्थात् जब ज्ञानवान् उस कामिनी के सौन्दर्य रूप फंदे में न आ सका तब वह (बाँकी कामिनी) स्वयं अति लज्जित हो गई. २ सौन्दर्य. ३ सूर्य चन्द्र. ४ चरण, पाद. ५ स्तुति करनेवाले. ६ हँसकर बोला. ७ परिच्छिन्न न कीजियेगा. ८ बातें बना रहे या हँसी उड़ा रहे. ९ मुख. १० लगातार, निरन्तर. ११ कठोर चोट. १२ नेत्र. १३ प्रसन्नता भरे, हँसी परोये हुये. १४ अर्द्ध रात्रि. १५ मास. १६ बर्फ़ की वर्षा. १७ दशा.

कि सर्दी की भी जान मैं ही तो हूं।
अनासर[1] के भी प्राण मैं ही तो हूं॥ ४॥

समय दोपहर माह था जून का। जगह की जो पूछो, ख़ते उस्तवा[2]।
तमाज़त[3] ने लू की दिया सब जला। हरारत[4] से था रेग[5] भी भूनता।
बदन मोम सा था पिघलता पड़ा। पै लब से था ख़न्दा[6] परोया हुआ।

कि गर्मी की भी जान मैं ही तो हूं।
अनासर के भी प्राण मैं ही तो हूं॥ ५॥

बियाबान तनहा लक़ोदक़[7] ग़ज़ब। इधर मेदा[8] ख़ाली उधर ख़ुश्क लब।
उठाई निगह सामने, पै अजब। लड़ी आँख इक शेरे ग़र्रां[9] से तब।
वह तेज़ीसे घूरा, गया शेर दब। जलाले[10] जमाली था चितवन[11] में अब।

कि शेरों की भी जान मैं ही तो हूं।
सभी ख़ल्क़[12] के प्राण मैं ही तो हूं॥ ६॥

चला मंझधारा में किशती घिरी। यह कहता था तूफ़ां कि हूं आख़री।
थपेड़ों से चटपट चट्टाँ वह चिरी। उधर बिजली भी वह गिरी वह गिरी।
था थामे हुये बाँस[13] ज्यूं बाँसरी। तबस्सम[14] में जुरअत[15] भरी थी निरी।

कि तूफ़ाँ की भी जान मैं ही तो हूं।
अनासर के भी प्राण मैं ही तो हूं॥ ७॥

बदन दर्दों पेचश से सीमाब[16] था। तपे सख़्ती रेज़श से बेताब[17] था।

---

१ पञ्चभूत जिन्हें फ़ारसी में चार तत्त्व कहते हैं. २ पृथिवी का मध्य भाग जहाँ अति गरमी होती है. ३ गरमी. ४ धूप की तेज़ी से ५ रेत. ६ हँसी परोई हुई. ७ बड़ा भारी भयानक सुनसान वन. ८ पेट. ९ चिंघारनेवाला व गुर्रनेवाला शेर. १० निजानन्द का तेज. ११ दृष्टि. १२ सृष्टि. १३ यहाँ अभिप्राय बेड़ी को चलानेवाले बल्ले से है. १४ मुस्कराहट, हँसी. १५ दलेरी, उत्साह, शूर वीरता व निर्भयता. १६ पारा के समान बे क़रार (तड़प रहा) था. १७ तड़प रहा था.

नशा ज्ञान का ज्यूं[1] मये[2] नाबथा। वह गाता था गोया[3] मरज़ ख़ाब था।
मिटा जिस्म जो नक़्शबर[4] आबथा। न बिगड़ा मेरा कुछ कि ख़ुद आपथा।

जहाँ भरके अबदाने[5] ख़ूबाँ में हूं।
मैं हूं 'राम' हर एक की जाँ में हूं॥ ८॥

[२५]

ज्ञानी की दृष्टि

जो ख़ुदा को देखना हो, तो मैं देखता हूं तुमको।
मैं तो देखता हूं तुम को, जो ख़ुदा को देखना हो॥

यह हजाये[6] साज़ो सामां, यह नकाबे[7] यासो हिरमां।
यह ग़लाफ़े नङ्गो[8] नामूस, वह दमाग़ो दिल का फ़ानूस।
वह मनो शुमा[9] का पर्दा, वह लबासे चुस्त[10] कर्दा।
वह हया[11] की सब्ज़ काई, वह फ़ना सियाह रज़ाई।
यह लफाफा जामा[12] बुर्क़ा, यह उतार सितर तुम को।
जो बरहना[13] करके झाँका, तो तुम ही सफा ख़ुदा हो॥ १॥ टेक

ऐ नसीमे[14] शौक़! जा के, वह उड़ादे ज़ुल्फ़ रुख़ से।
ऐ सबा[15]-ए-इल्म! जा कर, दे हटा वह ख़ाबे[16] चादर।
अरे बादे तुन्दमस्ती[17]!, दे मिटा अब्र[18] की हस्ती।

---

१ समान. २ अङ्गूर की शराब. ३ मानो. ४ जल पर चित्र के समान था. ५ सुन्दर देहों में. ६ (यह साज़ और समान का) पर्दा. ७ (निराशा) की आड़ व पर्दा. ८ लज्जा व मान अथवा लज्जा व निर्लज्जा. ९ मैं तू. १० चुस्त करनेवाला. ११ लज्जा. १२ वस्त्र व चादर. १३ नङ्गा. १४ जिज्ञासा की पवन. १५ ऐ ज्ञान की पर्वा (वायु). १६ स्वप्न रूपी चादर. १७ ऐ निजानन्द की घटा. १८ (पर्दा रूपी) बादल.

ऐ नज़र के ज्ञान गोले, यह फ़सील झट गिरा दे।
कि हो जहल[1] भस्म इक दम, जले वह्म हो यह आलम[2]।
जो हो चार सू[3] तरन्नुम[4], कि हैं हम ख़ुदा, ख़ुदा हम ॥ २ ॥ टेक

न यह तेग़[5] में है ताक़त, न यह तोप में लियाक़त।
न है बर्क़[6] में यह यारा, न है ज़हर ही का चारा।
न यह कारे तुन्द[7] तूफ़ान, न है ज़ोर शेरे[8] ग़ुर्रान।
कोई जज़्बह[9] है न शहवत[10], कोई ताना: न[11] शरारत।

जो तुझे हलाने आयें

जो तुझे हलाने आयें, तो हो राख भस्म हो जायें।
वह ख़ुदाई[12] दीदे खोलो, कि हों दूर सब बलायें ॥ ३ ॥ टेक

यह पहाड़ी नाले चमचम, यह बहारी अबर छम छम।
यह चमकते चाँद तारे, हैं तेरे ही रूप प्यारे।
दिले अन्दलीब[13] में सूँ, रुख़े[14] गुल का रंगे गुलगूँ[15]।
वह शफ़क़[16] के सुर्ख़ इश्वे[17], हैं तेरे ही लाल पट्ठे।
है तुम्हारा धाम तो 'राम', ज़रा घर को मुंह तो मोड़ो।
कि रहीम 'राम' हो तुम, तुम ही तो ख़ुद ख़ुदा हो ॥ ४ ॥ टेक

---

१ अज्ञान. २ संसार. ३ चारों ओर. ४ (आनन्दकी) फुहार, मन्द मन्द वर्षा. ५ तलवार. ६ बिजली. ७ भारी घटा का काम. ८ चिंघाड़ने वाला वा भयानक शेर. ९ चित्त की उमङ्ग वा जोश. १० विषय भोग वा विषय वासना. ११ न कोई. १२ ब्रह्म दृष्टि ईश्वरी वा दिव्य नेत्र. १३ बुलबुल पक्षी का दिल. १४ पुष्प की सूरत. १५ लाल रङ्ग वा गुलाबी रङ्ग. १६ उदय अस्त के समय आकाश में जो लाली होती है, साँझ. १७ नखरे टसरे, नाज़ और अदा.

[२६]

रौशनी की घातें

(अनुने-नूर)

मैं पड़ा था पहलू[1] में राम के, दोनों एक नींद में लेटे थे
मेरा सीना[2] सीने पै उसके था, मेरा साँस उसका तो साँस था
आई चुपके चुपके से रौशनी, दिये बोसे[3] दीदों[4] पे नाज़ से
लम्बी पतली लाल सी उङ्गलियों से, खुशी से गुदगुदा दिया ?
कुछ तुमको आज दिखाऊँगी (मैं दिखाऊँगी),
ऐसा कहके हाथ घुला दिया।
यह जगा दिया कि सुला दिया, जाने किस बला में फँसा दिया
ये लो ! क्या ही नक़्शा जमा दिया, कैसा रङ्ग जादू रचा दिया
चली निखरकर हमें साथ ले, करी सैर हाथों में हाथ दे
मचे खेल आँखों में आँख दे, गुल[5] वलवला[6] सा मचा दिया
इक शोर ग़ौग़ा[7] उठा दिया, निज धाम को तो भुला दिया
मुंह राम से तो मुड़ा दिया, आरामे[8]-जाँ को मिटा दिया
थक हारकर झख मारकर, हर मूँ[9] से बोला पुकार कर
अरी नाबकारह[10] रौशनी ! अरी चकमा[11] तू ने भला दिया !
खन्दी[12] ! किरणें[13] तेरी सफ़ेद हैं, बालों में रङ्ग भरे है तू
गुलगूना[14] मुंह पै मले है तू, नटनी ने रूप बदा लिया
रुख़[15] देखिये तो है फ़क़[16] तेरा, दिल गर्दिशों[17] से है शक़[18] तेरा

---

१ पास, एक ओर, समीप. २ छाती. ३ चुंबन. ४ नेत्र. ५ शोर. ६ हल चल. ७ शोर, हल्लड़ धूम. ८ जीवन के चैन को. ९ बाल, रोम. १० नाकारी; बेहूदह, नट-खटी. ११ धोखा. १२ ऐ निर्लज्ज. १३ किरणों से अभिप्राय बाल हैं. १४ उबटना. १५ मुख. १६ पीला मुरझाया हुआ. १७ फांस चक्कर में. १८ फटा हुआ, टूटा हुआ.

तू उड़ती पैया से धूल है, रथ राम ने जो चला दिया
कहो ! किस जवानी के ज़ोर पर तूने हमको आ के उठा दिया
यूं[1] कहके किस्सा समेटकर, दिल जाँ में यार लपेट कर
फिर लम्बी ताने में पड़ गया, गोया[2] ग़ैरे[3]-राम जला दिया
अभी रात भर भी न बीती थी कि लो रौशनी को हवा लगी
नये नखरे टखरे से प्यार से, मेरे चश्म-ख़ाना[4] को वा[5] किया
कुछ आज तुमको दिखाऊँगी, (मैं दिखाऊँगी),
ऐसा कहके हाय ! नचा दिया
कहूं क्या जी ! भरे[6] में आ गये, कैसा सब्ज़ बाग़ दिखा दिया
लड़ भिड़ के आख़र शाम को, कह अलविदा सब काम को
आगोश[7] में ले राम को, तन उसके मन में छिपा दिया
लेकिन फिर आई रौशनी, लो ! दम दिलासा चल गया
और फिर वही शैतानियाँ, वैसी ही कारस्तानियाँ[8]
हँसने में और खेलने में फिर दिन भर को यूंही बिता दिया
बेहूदा टाल मटोल, जी[9] यारों का फिर उकता गया
हम सो गये जाग उट्ठे फिर, यूं ही अलाहज़्ज़ल[10] क़यास
वादह न अपना रौशनी ने एक दिन ईफ़ा[11] किया
थकने न पाई रौशनी, मामूल पर हाज़र थी यह
उमरों पे उमरें हो गईं, इस का त्वातर[12] दौर था
किस धुन में सब इक़रार थे, क्यों दिन बदिन यह मदार[13] थे
किस बात के दरपै थी यह ? मस्तो-खराबे[14] मैं थी यह ?
यह तो मुइम्मा[15] न खुला, सदियों का अर्सा[16] हो गया

---

१ ऐसे. २ मानो. ३ राम से भिन्न को. ४ मेरे चक्षु के खाने या घर. ५ खोल दिया. ६ पेच, दाओ. ७ बग़ल. ८ चालाकियाँ. ९ चित्त. १० इत्यादि. ११ पूरा किया. १२ निरन्तर. १३ ठिकाव, ठहराव. १४ प्रेमगद आनन्दित. १५ रहस्य. १६ काल.

हर बात जो समझी अजब, पास जा देखा तो तब
खाली सुहाना ढ़ोल था, धोका था फितना[1] गोल था
सब गुङ्गो[2] कर अशजार[3] थे, चपो-रास्त[4] सब अग़यार[5] थे
सब यार दिल पर बार थे, और बेठकाना कार था
अपना तो हर शब[6] रूठ जाना, रौशनी का फिर मनाना
आज और कल और रोज़ो-शब की क़ैद ही में तलमलाना
सब मेहनतें तो थीं फजूल, और कार नाहमवार था
वह रौशनी का साथ चलना, अपना न हरगिज़ उसको तकना
वह रौशनी के जी[7] की हसरत[8], हमको न परवा बल्कि नफ़रत
सूदो[9]-ज़ियां बीमो[10]-रज़ा की रगड़ कारे-ज़ार[11] था
यूंहिं रफता रफता पड़े कभी, कभी उठ खड़े थे मरे कभी
कभी शिकमे[12]-मादर घर हुआ, कभी ज़न[13] से बोसो[14]-किनार था
बढ़ना कभी, घटना कभी, मद्दो[15]-जज़र दुश्वार था
गर्ज़ इन्तज़ारो-कशाकशी[16], दिन रात सीनह[17] फ़िगार था
क्या ज़िन्दगी यह है बगोले की तरह पेचाँ[18] रहे ?
और कोर[19]-सग बन कर शिकारे-बाद[20] में हैराँ रहे ?
लो आखरश आया वह दिन, इक़रार पूरा हो गया
सदियों की मंज़ल कट गई, सब कार पूरा हो गया
हाँ ! रौशनी है सुर्ख़रू, तेरा वादह आज वफ़ा[21] हुआ
तेरे सदक़े सदक़े मैं नाज़नी ! कुल भेद आज फिदा हुआ

---

१ चालाक भूत वा शैतान. २ गूंगे बहरे. ३ वृक्ष: ४ दायें बायें ५ अन्य लोग, विरोधी. ६ रात्रि. ७ चित्त. ८ शोक. ९ लाभ हानि. १० भय निर्भय. ११ युद्ध. १२ माता का पेट या गर्भ. १३ स्त्री. १४ चुम्बन, प्यार. १५ चढ़ाव बढ़ाव, ऊंच नीच. १६ खैंचा तानी. १७ घायल चित्त. १८ पेच खाती रहे. १९ अन्धा कुत्ता. २० पवन के शिकार. २१ पूरा.

उमरों का उक़दह[1] हल हुआ, कुफ़लो[2]-गिरह सब खुल गये
सब क़बज़ो-तङ्गी उड़ गई, पाप और शुभ सब धुल गये
सब ख़्वाबे[3]-दुई मिट गया, दीदे[4]-अजब यह खुल गये।
ऐ रौशनी! ऐ रौशनी! ख़ुश हो मैं तेरा यार हूं
ख़ाविन्द[5] घर वाला हूं मैं, पुश्तो[6]-पनाहे-सरकार हूं
वह राम जो माबूद[7] था, साया था मेरे नूर[8] का
क्या रौशनी; क्या राम, इक, शोलह[9] है मेरे तूर[10] का
इन आँसुओं के तार के सिहरे से चिहरा खिल उठा
क्या लुत्फ़ शादी[11] मर्ग है, हर शै[12] से शादी वाह! वाह!
हाँ! मुबारक[13] बाद, ऐ साँप, सग! ऐ ज़ाग[14], माही[15], चील, गिद्द!
इस जिस्म से कर लो ज़ियाफ़त पेट भर भर वाह! वाह!!
आनन्द के चश्मे के नाके[16] पर यह जिस्म[17] इक बंद था
बह बह गया बन्दे[18]-ख़ुदी, दरया बहा है वाह! वाह!!
सब फ़र्ज़ क़र्ज़ और ग़र्ज़ के इमराज़[19] यकदम उड़ गये
हल फिर गया ज़ेरो[20]-ज़बर पर और सुहागा वाह! वाह!!
दुन्या के दल बादल उठे थे, नज़रे-ग़लत अन्दाज़[21] से
लो इक निगाह से चुक गया सारा सियापा वाह! वाह!!
तन नूर से भरपूर हो, मामूर[22] हो, मसरूर[23] हो
सब उड़ गया, जाता रहा, पुर नूर हो, काफ़ूर हो;

---

१ घुंडी खुलगई, मुशकल हल होगई. २ ताला और गाँठ. ३ द्वैतरूपी स्वप्ना. ४ नेत्र. ५ पति, स्वामिन्. ६ आधार, आश्रय. ७ पूजनीय. ८ प्रकाश. ९ ज्वाला. १० अग्नि का पर्वत. ११ प्रसन्नता पूर्वक मृत्यु का आनन्द. १२ प्रत्येक पदार्थ. १३ प्रसन्न हो. १४ काग. १५ मछली. १६ मुख, द्वार. १७ शरीर. १८ अहंकार रूपी बन्धन. १९ रोग. २० कद्यु नीच, बड़े छोटे. २१ गलत ढङ्ग से. २२ पूर्ण. २३ खुश, प्रसन्न;

अब शब कहाँ ? और दिन कहां ? फ़र्दा[1] है नै इमरोज़[2] है
है इक सरूरे-लातग़य्युर[3], ऐश है नै[4] सोज़[5] है
उठना कहां ? सोना कहां ? आना कहां ? जाना कहां ?
मुझ बहरे[6]-नूरो-सरूर में, खोना कहां ? पाना कहां ?
मैं नूर हूं, मैं नूर हूं, मैं नूर का भी नूर हूं
तारों में हूं, सूर्य में हूं नज़दीक से नज़दीक हूं और दूर से भी दूर हूं
मैं मादनो[7]-मख़ज़न हूं, मैं मम्बा[8] हूं चश्महे-नूर का
आरामगह[9] आरामदेह[10] हूं, रौशनी का नूर का
मेरी तजल्ली[11] है यह नूरे[12]-अक़्ल-ओ-नूरे-अनसरी[13]
मुझ से दरख़शाँ[14] हैं यह कुल अजरामे[15]-चर्ख़े[16]-चम्बरी
हाँ ! ऐ मुबारक रौशनी ! ऐ नूरे[17]-जाँ ! ऐ प्यारी "मैं" !!
तू, राम और मैं एक हैं, हाँ एक हैं, हाँ एक हैं
हर चश्म[18], हर शै[19], हर बशर[20], हर फ़हम[21] हर मफ़हूम[22] में
नाज़र नज़र मन्ज़ूर[23] मैं, आलिम[24] हूं मैं, मालूम मैं
हर आँख मेरी आँख है, हर एक दिल है दिल मेरा
हाँ ! बुलबुलो-गुल मिहरो[25]-माह की आँख में है तिल मेरा
वहशत[26] भरे आहू[27] का दिल, शेरे-बबर का क़हर[28] का
दिल आशके-बेदिल का प्यारे, यार का और देहर[29] का.

---

१ कल. २ आज. ३ विकार रहित आनन्द. ४ नहीं. ५ जलन, दुःख. ६ आनन्द और प्रकाश के समुद्र में. ७ खान और भण्डार. ८ निकास. ९ आराम का स्थान. १० आराम देने वाला. ११ तेज. १२ बुद्धि का तेज. १३ पंच भौतिक तेज. १४ चमकीले. १५ तारा गण. १६ गोल आस्मान या आकाश मण्डल के. १७ प्राण के तेज. १८ चक्षु. १९ वस्तु. २० जीव जन्तु. २१ समझ. २२ समझित. २३ द्रष्टा दर्शन दृष्टि. २४ ज्ञानी. २५ सूर्य चाँद. २६ घबराहट भरे. २७ मृग. २८ आफ़त का. २९ समय का.

अमृत भरे स्वामी का दिल, और मार[1] पुर अज़ ज़हर का
यह सब तजल्ली[2] है मेरी, या लहर मेरे बहर का
इक बुलबुला है मुझ में सब, ईजादे[3]-नौ, ईज़ादे[4]-नौ
है इक भँवर मुझ में यह मर्गे[5]-नागहां[6] और ज़ादे[6]-नौ
सोये पड़े बच्चे को वह जाली उठाकर घूरना
आहिस्ता से मक्खी उड़ाना, तिफ़्ल[7] का वह बसूरना
वह दो बजे शब को शफ़ा खाना में तिश्नह[8] मरीज़ को
उठ कर पिलाना सोडावाटर, काट अपनी नींद को
वह मस्त हो नंगे नहाना, कूद पड़ना गङ्ग में
छींटे उड़ाना, ग़ुल मचाना, ग़ोते खाना रङ्ग में
वह मां से लड़ना, ज़िद में अड़ना, मचलना, एड़ी रगड़ना
वालिद से पिटना और चल्लाते हुए आँखों को मलना
कॉलेज के साइंस रूम में, गैसों से शीशे फोड़ना
बारूद और गोलों से सफ़दर[9] सफ़ सिपाहें तोड़ना
इन सब चालों में हम ही हैं, यह मैं ही हूं, यह हम ही हैं
गर्मी का मौसम, सुबह दम, साअत[10] है दो या तीन का
खिड़की में दीवा देखते हो टमटमाता टीन का ?
दीवे पे परवाने हैं गिरते बेख़ुदी में बार बार
बेचारह लड़का कर रहा है इल्म[11] पर जाँ को निसार
बेचारे तालिब[12]-इल्म के चहरे की ज़र्दी है मेरी
बे नींद लम्बे साँस और आहों की सर्दी है मेरी
इन सब चालों में हम ही हैं, यह मैं ही हूं, यह हम ही हैं।

---

१ ज़हरीले साँप का. २ प्रकाश. ३ नई ईजाद. ४ नई उन्नति, ५ अचानक मृत्यु. ६ नई उत्पत्ति. ७ बच्चा. ८ प्यासा. ९ पंक्ति वार. १० घड़ी. ११ फ़िदा. १२ विद्यार्थी.

है लहलहाता खेत, पुर्वा चल रही है ठुम ठुमक
गाढ़े की धोती, लाल चीरा चौधरी की लट लटक
जोशे-ज्वानी ! मस्त, अल्गोज़ा वजाना, उछलना
मुगदर घुमाना, कुश्ती लड़ना, पिछड़ना और कुचलना
छकड़ा लदा है वोझ से, हिचकोले खाता वार वार
वह टाँग पर धर टाँग पड़ना, वोझ ऊपर हो स्वार
शिद्दत[1] की गर्मी, चील अंडे के समय, सरे-दोपहर
जा खेत में हल का चलाना अर्क़[2] में हो तर वतर
और सर पे लोटा छाछ का, कुछ रोटियाँ, कुछ साग धरे
भत्ता उठा कुत्ते का ले, औरत[3] का आना पैंठ कर
इन सब चालों में हम ही हैं, यह मैं ही हूं, यह हम ही हैं।
दुलहन का दिल से पास आना, ऊपर से रुकना, झिजक जाना
शर्मो-हया का इश्क़ के चुङ्गल में रह रह के आना
वह माहे[4]-गुलरू के गले में डालं बाहें प्यार से
ठण्डे चश्मों के किनारे, वोसह[5] वाज़ी यार से
हाँ ! और वह चुपके से छिप कर, आड़ में अशजार[6] के
वे दाम खुफिया पुलिस बनना, राम की सरकार के
इन सब चालों में हम ही हैं, यह मैं ही हूं, यह हम ही हैं।
यह सब तमाशे हैं मेरे, यह सब मेरी करतूत है
वह इस तरफ खा खा के मरना, उस तरफ फाकों से गुम
वह बिलबलाना जेल में, जङ्गल में फिरना सुम बकुम[7]
और वह गदेले कुर्सियाँ, तकिये बिछौने, वग्गियाँ
सब मादरे-सुसती बवासीरो-ज़ुकाम और हिचकियाँ

---

१ अत्यन्त गर्मी. २ पसीने से मुराद है. ३ स्त्री. ४ चन्द्र मुख प्रिया. ५ चुम्बन का लेन देन. ६ वृक्ष. ७ योषे (बहरे) और गूंगे.

यह सब तमाशे हैं मेरे, यह सब मेरी करतूत है
वह रेल में या तारघर में, महल कुवारिनटीन में
रूस, अफ्रीका, ईरान् में, जापान या चीन में
सिसकना, दुःखड़े सुनाना, खून् बहाना ज़ार ज़ार
वह खिलखिलाना कहकहों और चहचहों में बार बार
वह चक्र पर बारश ने लाना, हिन्द में या सिन्ध में
फिर राम को गाली सुनाना, तंग होकर हिन्द में
वह धूप से सब को मिसाले[1]-मुर्ग़ बिरयाँ भूनना
बादल की साढ़ी को किनारी चान्दनी से गून्दना
(चुप[2] हो के खानी गालियाँ, साले से उस शिशुपाल से)
खुश हो सलीबो-दार[3] पर, चढ़ना मुबारक हाल से
यह कुल तमाशे हैं मेरे, यह सब मेरी करतूत है
इन सब चालों में हम ही हैं, यह मैं ही हूं, यह हम ही हैं।
मोहताज[4] के, बीमार के, पापी के और नादार[5] के
हमलब[6]-ओ-हमबग़ल हूं, हमराज़[7] हूं बेयार का
सुनसान शब[8] दर्या किनारे हैं खड़े डटकर तो हम
और क़ैदे-तख्तो-ताज में गर हैं पड़े जकड़े तो हम
सस्ते से सस्ते हैं तो हमे, महंगे से महंगे हैं तो हम
ताज़ा से ताज़ा हैं तो हम, सब से पुराने हैं तो हम
वाहद[9] हूं, मुझ को मेरा ही सिजदा[10] सलाम है
मेरी नमस्ते मुझ को है और राम राम है
जानते हो? आशक़[11]-ओ-माशूक़[12], जब होते हैं एक

---

१ भूने हुये पक्षी के सदृश. २ इस सारी पंक्ति से कृष्ण भगवान् अभिप्रेत है. ३ सूली. ४ भूखा. ५ निर्धन. ६ नितान्त समीप. ७ भेद जानने वाला. ८ रात्रि. ९ एक अकेला १० झुकना प्रणाम. ११ प्रेमी और प्रिया. १२

ये शुभा[1] मेरी ही छाती पर वहम[2] सोते हैं नेक
पुण्य में और पाप में, हर वाल साँस और माँस में
दूर कर आँखों से परदा, देख जल्वा[3] घास में,
कुछ सुना तुम ने ? अजब चालें मेरी चालाकियाँ
ये हजाबाना[4] क़रामे, लाधड़क ये वाकियाँ[5]
हाँ, करोड़ों ऐब, जुर्म, अफ़आले[6]-नेक, अमाले-ज़िश्त[7]
मुझ में मुत्सव्वर[8] हैं दोज़ख, मैकदह[9], मसजिद, वहिश्त
मार देना, झूठ बकना, चोर-यारी और सितम[10]
कुल जहाँ के ऐब रिन्दाना[11] पड़े करते हैं हम
ऐ ज़मीन के बादशाहो ! पण्डितो, परहेज़गारो[12] !
ऐ पुलिस ! ऐ मुदई, हाकिम, वकील, ऐ मेरे यारो !
लो बता देते हैं तुम को राज़े-खुफिया[13] आज हम
अपने मुंह से आप ही इन्कार खुद करते हैं हम.
"ख्वाह चोरी से कि यारी से खपा लेता हूं मैं
सब की मलकीयत को, मकबूज़ात[14] को और शान को"
यह सितम, यारो ! कि हरगिज़ भी तो सह सकता नहीं
ग़ैरे-खुद[15] के ज़िक्र को, या नाम को, कि निशान को
खुदकुशी[16] करते हैं सब क़ानून, तनकीह-ओ-जरह
दूर ही से देख पाते हैं जो मुझ तूफ़ान को.
कुल जहाँ बस एक खर्राटा है मस्ती में मेरा
ऐ ग़ज़ब[17] ! सच कर दिखाता हूं मैं इस बोहतान[18] को

---

१ निःसन्देह. २ एकत्र. ३ दर्शन. ४ पर्दा रहित करामात. ५ निर्भयता, निडरपना. ६ पुण्य कर्म. ७ पाप कर्म. ८ कल्पित. ९ शराब खाना. १० आश्चर्य, जुल्म. ११ निर्भय या निडर होकर. १२ व्रत और तप करने वाले. १३ गुप्त, भेद. १४ अधिकार, बोध. १५ अपने से अतिरिक्त या भिन्न. १६ आत्मघात. १७ आश्चर्य. १८ झूठ.

क्या मज़ा हो, लो भला दौड़ो, मुझे पकड़ो,
मुझे पकड़ो; मुझे पकड़ो कोई ।
रिन्दमस्तों का शहनशाह हूं मुझे पकड़ो,
मुझे पकड़ो, मुझे पकड़ो कोई ॥
सीना-ज़ोरी[1] और चोरी, छेड़-छाड़, अटखेलियाँ ।
चुटकियाँ सीना में भरता हूं, मुझे पकड़ो कोई ॥
खा के माखन, दिल चुराकर, वह गया, मैं वह गया ।
मार कर मैं हाथ हाथों पर यह जाता हूं, मुझे पकड़ो कोई ॥
रात दिन छुप कर तुम्हारे बाग़ में बैठा हूं मैं ।
बांसरी में गा बुलाता हूं, मुझे पकड़ो कोई ॥
आइयेगा, लो उड़ा दीजियेगा मेरे जिस्म[2] को ।
नाम मिट जाने से मिलता हूं, मुझे पकड़ो कोई ॥
दस्तो-पा[3], गोशो[4]-दीदा, मिस्ले-दस्ताना[5] उतार ।
हुलिया सूरत को मिटाता हूं, मुझे पकड़ो कोई ॥
साँप जैसे केंचली को, फेंक नामो-नङ्ग[6] को ।
बे सिलह[7] के वश में आता हूं, मुझे पकड़ो कोई ॥
नठ गया, वह नठ गया ! नठ कर भला जाय कहाँ ।
मुंह तो फेरो ! यह खड़ा हूं, लो ! मुझे पकड़ो कोई ॥
आते आते मुझ तलक़, मैं ही तो तुम हो जाओगे ।
आप को जकड़ो ! अगर चाहो मुझे पकड़ो कोई ॥
आतशे-साज़ा[8] हूं, मुझ में पुण्य क्या और पाप क्या ।
कौन पकड़ेगा मुझे ? और हाँ ! मेरा-पकड़ेगा क्या ? ॥

---

१ ज़बर दस्ती. २ शरीर. ३ हाथ पाँव. ४ कान और आँख. ५ दस्ताना की तरह. ६ लज्जा और निर्लज्जा. ७ हथियार रहित. ८ सब कुछ जला देने वाली अग्नि.

[२७]

ज्ञानी की ललकार

(अर्थात् दुन्या की छत पर से ललकार)

१० राग आनन्द भैरवी, ताल धुमाली

बादशाह दुन्या के हैं मोहरे मेरी शतरंज के।
दिल्लगी की चाल हैं सब रंग सुलह-ओ-जंग के॥
रक्से-शादी[1] से मेरे जब काँप उठती है ज़मीन्।
देख कर मैं खिलखिलाता क़हक़हाता[2] हूं वहीं॥
खुश खड़ा दुन्या की छत पर हूं तमाशा देखता।
गह[3] बगह देता लगा हूं, वैहशियों[4] की सी सदा[5]॥
ऐ मुकाली[6] रेल गाड़ी! उड़ गयी! ऐ सिर[7] जली!
ऐ खरे-दज्जाल[8]! नखरा बाज़ीयो में जूं[9] परी॥
भोले भाले आदमी भर भर के लम्बे पेट में।
ले डकारें[10] लोटती है रेत में या खेत में॥
छोड़ धोका बाज़ीयाँ और साफ कह, सच मुच बता।
मंज़ले-मक़सूद[11] तक कोई हुआ तुझ से रसा[12]?॥
पेट में तेरे पड़ा-जो वह गया! लो वह गया!।
लैक[13] हाय! मंज़ले-मक़सूद पीछे रह गया॥

---

१ प्रसन्नता के नृत्य से. २ खिल कर हसना. ३ कभी कभी. ४ वनचरों. ५ आवाज़, घोषणा. ६ काले मुखवाली. ७ जले हुए सिरवाली अर्थात सिर से धुवाँ निकालने वाली. ८ एक गधा को कहते हैं जो हज़रत ईसा के शत्रु के तले रहता था और जिस का पेट अत्यन्त लम्बा था और बाक़ी अंग बहुत छोटे, सो उस गधे से रेल को दर्शाया हैं. ९ परी के समान. १० सीटी अथवा चीख से अभिप्राय है. ११ अन्तिम लक्ष्य स्थान, वा असली घर. १२ पहुंचा. १३ किन्तु.

ऐ जवान् बाबू ! यह गर्मी क्यों ? ज़रा थमकर चलो ।
बैग ले कर हाथ में सरपट न यूं जलदी करो ॥
दौड़ते क्या हो बराते-नूर[1] के मिलने को तुम ? ।
वह न बाहर है, ज़रा पीछे हटो, बातन[2] को तुम ॥
क्यों हो मुजरम[3] ! पेशकारों की ख़ुशामद में पड़े ? ।
यह कचैहरी वह नहीं तुम को रिहाई[4] दे सके ॥
पैहन कर पोशाक गेहने बुर्क़ा ओढ़े नाज़[5] से ।
चोरी चोरी गुलबदन[6] मिलने चली है यार से ॥
ऐ मुहब्बत से भरी ! ऐ प्यारी बीबी ख़ूबरू[7] ! ।
चौंक मत, घबरा नहीं, सुन कर मेरी ललकार[8] को ॥
निकल भागा दिल तेरा, पैरों से बढ़ कर दौड़ में ।
दिल हरम[9] है यार का, साकन हो, गिर ने[10] दौड़ में ॥
हो खड़ी जा ! बुर्क़ा जामा और बदन तक दे उतार ।
बे ह्या हो एक दम में, ले अभी मिलता है यार ॥
दौड़ क़ासद[12] ! पर लगा कर, उड़ मेरी जाँ ! पेच खाकर ।
हर दिलो[13]-हर जाँ में जाकर, बैठ जम कर घर बना कर ॥
"मैं ख़ुदा हूं", "मैं ख़ुदा हूं" राज़[14] जाँ में फूंक दे ।
हर रगो[15]-रेशे में घुस कर मस्ती[16]-ओ-मुल भोंक दे ॥
ग़ैरबीनी[17], ग़ैरदानी[18] और ग़ुलामी बंदगी (को) ।
मार गोले दे धड़ा धड़, एक ही एक कूक दे ॥

---

१ तेज के पुञ्ज या प्रकाश यात्रा. २ भीतर. ३ अपराधि. ४ छुटकारा, मुक्ति. ५ नखरे से. ६ पुष्प के बदन वाली, अति कोमल. यहाँ वृत्ति से अभिप्राय है. ७ अति सुन्दर. ८ आवाज़, ध्वनि. ९ मन्दिर. १० नहीं. ११ [illegible]. १२ संदेशा लेजाने वाला. १३ प्रत्येक चित्त और प्राण में. १४ भेद, गुह्य. १५ प्रत्येक नस और पट्ठे में. १६ मस्ती (निजानन्द) और शराब (प्रानामृत). १७ द्वैत दृष्टि. १८ द्वैतभावना.

रौशनी पर कर स्वारी, आँख से कर नूर-वारी[1]।
हर दिलो-दीदा[2] में जा झंडा[3] अलफ का ठोंक दे॥

[२८]

राम का गङ्गा पूजन

गंगा! तैथों[4] सद[5] बलहारे[6] जाऊँ (टेक)
हाड चाम सब वार के फैंकूं।
यही फूल पताशे लाऊँ॥ १॥ गंगा०
मन तेरे बन्दरन को दे दूं।
बुद्धि धारा में बहाऊँ॥ २॥ गंगा०
चित्त तेरी मच्छली चब जावे।
अहङ्[7] गिर[8]-गुहा में दबाऊँ॥ ३॥ गंगा०
पाप पुण्य सभी सुलगा कर।
यह तेरी जोत जगाऊँ॥ ४॥ गंगा०
तुझ में पडूं तो तू बन जाऊँ।
ऐसी डुबकी लगाऊँ॥ ५॥ गंगा०
पण्डे जल थल पवन दशों[9] दिक्।
अपने रूप बनाऊँ॥ ६॥ गंगा०
रमण करूं सत[10] धारा माँहिं।
नहीं तो नाम न राम धराऊँ॥ ७॥ गंगा०

---

१ नेत्र से आनन्द रूपी प्रकाश की वर्षा. २ प्रत्येक चित्त और चक्षु. ३ यहाँ मुराद अद्वैत के झंडा से है, और रसाला अलफ (मासिक पत्र) जो ब्रह्मलीन स्वामी राम ने गृहस्थाश्रम के समय केवल अद्वैत प्रतिपादन करने निमित्त निकाला था उससे भी, अभिप्राय है. ४ तुझ पर. ५ सौ वार. ६ सदके जाऊं, कुर्बान जाऊं. ७ अहंकार. ८ पर्वत की गुफा. ९ दशों ओर अर्थात् सर्व ओर. १० सप्त धारा या सप्त सरोवर.

[२६]

राम की गंगा-स्तुति

नदीयाँ दी सरदार ! गङ्गा रानी ! ।
छींटे जल दे देन बहार, गङ्गा रानी ! ॥
सानूं[1] रख जिन्दड़ी[2] दे नाल, गङ्गा रानी ! ।
कदे[3] वार, कदे पार, गङ्गा रानी ! ॥
सौ सौ गोते गिन गिन मार, गङ्गा रानी ! ।
तेरीयां लैहराँ राम अस्वार, गङ्गा रानी ! ॥

[३०]

कशमीर में अमर नाथ की यात्रा

(१) पहाड़ों की सैर

राग पहाड़ी ताल चलन्त

पहाड़ों का यूं लम्बी[4] तानें यह सोना ।
यह गुञ्जाँ[5] दरख़्तों का दोशाला[6] होना ॥
वह दामन[7] में सब्ज़ा का मख़मल बिछौना ।
नदी का बिछौने की झालर परोना ॥
यह राहत[8]-मुजस्सम, यह आराम मैं हूं ।
कहाँ कोहो[9]-दरया, यहाँ मैं ही मैं हूं ॥ १ ॥

---

१ हमें. २ प्राण, जान. ३ कभी. ४ फैलकर सोना. ५ घने. ६ पोशाक ओढ़े हुए अर्थात सरसब्ज़. ७ पर्वत की तलेटी, फ़िनारह, पर्वत की तलेटी का जङ्गल, मैदान. ८ शान्तमूर्ति वा शान्तस्वरूप. ९ पर्वत और दरया.

(२) पर्वत पर बादल और वर्षा

यह पर्वत की छाती पै बादल का फिरना।
वह दम भर में अब्रों[1] से पर्वत का घिरना॥
गरजना, चमकना, कड़कना, निखरना[2]।
छमाछम, छमाछम, यह बूंदों का गिरना॥
अरूसे-फ़लक[3] का वह हँसना, यह रोना।
मेरे ही लिये है फ़क़त[4] जान खोना॥ २॥

(३) कोसों तक कुद्रती गुलज़ार का चले जाना, रंगा रंग के फूल हर चार सू[5] शिगुफ़्ता[6]

यह वादी[7] का रंगीं[8] गुलों[9] से लहकना।
फ़ज़ा[10] का यह बू से सरापा[11] महकना॥
यह बुलबुल सा[12] खंदाँ[13]-लबों का चहकना।
वह आवाज़े-नै[14] का बहर[15]-सू लपकना॥
गुलों की यह कसरत[16], अरम[17] रूबरू[18] है।
यह मेरी ही रंगत है, मेरी ही बू है॥ ३॥

(४) एक और दिलकश मुकाम

जो जू[19] और चशमा है, नग़मा[20] सरा है।
किस अन्दाज़[21] से आब[22] बल खा रहा है॥

---

१ बादल. २ उज्जल होना, प्रकाशमान, दीप्तिमान, स्वच्छ वा निर्मल होना. ३ आकाश रूपी दुल्हन, मुराद इन्द्र से है. ४ केवल, ५ चारों ओर. ६ खिले हुए. ७ घाटी, ८ भाँति २ के. ९ पुष्पों. १० खुला मैदान. ११ सिर से पाओं तक अर्थात् एक सिरे से दूसरे सिरे तक सुगंधि देना. १२ सदृश, समान १३ हँसते हुए, खिले हुए. १४ बांसरी की आवाज़ १५ सर्व ओर. १६ अधिकता. १७ स्वर्ग का बाग़. १८ सामने. १९ नैहर. २० आवाज़ दे रहे है, बोलता है. २१ ढङ्ग. २२ जल.

यह तकयों पे तकये हैं, रेशम बिछा है।
सुहाना[1] समा, मन लुभाना[2] समा है॥
जिधर देखता हूं, जहाँ देखता हूं।
मैं अपनी ही ताव[3] और शाँ[4] देखता हूं॥ ३॥

(५) झरनों की बहार

नहीं चादरें, नाचती सीम-तन[5] हैं।
यह आवाज़ ? पाज़ेब[6] हैं नाराज़न[7] हैं॥
पुहारों के दाने, ज़मुर्रद[8]-फ़िगन हैं।
सफाई आहा ! रूये[9]-मह पुर[10]-शिकन हैं॥
सबा[11] हूं मैं, गुल चूमता, बोसा लेता।
मैं शमशाद[12] हूं, झूम कर दाद[13] देता॥५॥

(६) कुदरती महफ़ल

मेरे सामने एक मैहफल सजी है।
हैं सब सीम[14]-सर पीर,[15] पुरसब्ज़[16] जी[17] हैं॥

---

१ दिल पसंद २ मन को मोह लेने वाला. ३ चमक, दमक, प्रकाश, तेज. ४ दबदबा, मान, शक्ल सूरत. ५ चाँद के बदन वाली (अर्थात् यह जल की धारा नहीं बल्कि सफेद चांदी के शरीर वाली चादरें हैं जो नाच कर रही हैं). ६ पाओं का एक ज़ेवर होता है जो चलते समय सुन्दर आवाज़ देता है. ७ आवाज़ दे रही या शोर कर रही हैं. ८ एक प्रकार का मोती है, मुराद यह है कि पुहारें जो अपनी बूँदें बाहर फैंक रही हैं वह मानो अति सुंदर मोती बाहर डाल रही हैं. ९ चन्द्र मुख. १० बल डाले हुये है (अर्थात् चंद्र भी इस सफाई से ईर्षा या लज्जा कर रहा है). ११ प्रातःकाल की आनन्द दायक वायु. १२ एक वृक्ष को कहते हैं. १३ सराहना करता, उत्तर देता. १४ चांदी के सिर वाले अर्थात सफेद बाल या सिर वाले, अभिप्राय बर्फ के पर्वतों से है. १५ वृद्ध. १६ हरा भरा, प्रसन्न. १७ चित्त.

शजर[1] क्या हैं, मीनां[2] पै मीना धरी है।
न झरनों का झरना है, कुलकुल[3] लगी है॥
लुंढाये यह शीशे कि वैह निकलीं नैहरें।
हैं मस्ती[4]-मुजस्सम यह, या अपनी लैहरें॥६॥

(७) श्रीनगर से अनन्त नाग को किश्ती में जाना

रवां[5] आबे[6]-दरया है, कशती दवान्[7] है।
सबा[8] नुज़हत[9]-आगीं, सुबहदम[10]-व-ज़ान्[11] है॥
यह लैहरों पै सूरज का जल्वा[12] अयां[13] है।
बलन्दी पै बरफ इक तजल्ली[14]-फशां है॥
ज़हूर[15] अपने ही नूर[16] का तूर[17] पर है।
पदीद[18] अपनी ही दीद[19] कुल[20] बैहरो[21]-बर है॥७॥

(८) झील डल में इर्द गिर्द के पर्वतों का प्रतिबिम्ब पड़ना, वायु से जल का हिलना, और इसी कारण से वायु के झकोरों से बड़े भारी पर्वतों का हिलते दिखाई देना

डलकता है डल[22], दीदा[23]-ए-मह-लक़ा सा।
धड़कता है दिल आईना[24] पुर सफा का॥

---

१ वृक्ष. २ एक प्रकार का हरे (सब्ज़) रंग का पत्थर ३ सुराही या बोतल से जल निकलते समय जो शब्द होता है. ४ निजानन्द स्वरूप. ५ चल रहा है. ६ दरया का जल. ७ भाग रही अर्थात बैह रही है. ८ प्रातः काल की पवन. ९ तरो ताज़गी से भरी हुई शुद्ध पवित्र वायु. १० प्रातः काल. ११ बाँगदे रही है, अर्थात् प्रातः काल की वायु तरोताज़गी से भरी हुई सरसर चल रही है. १२ प्रकाश. तेज. १३ प्रकट, भासमान. १४ चमक मार रही है; १५ प्रकाश, दृश्य. १६ तेज. १७ पर्वत से मुराद है. १८ दृश्य, ज़ाहर. १९ दृष्टि. २० समस्त. २१ पृथ्वि और समुद्र या जल थल. २२ सरोवर का नाम. २३ चन्द्र मुख प्रिया के नेत्र समान. २४ शुद्ध साफ़ शीशे की तरह.

हिलाता है कोहों[1] को सदमा[2] हवा का।
खिले हैं कँवल फ़ूल, है इक बला का॥
यह सूरज की किरणों के चप्पे लगे हैं।
अजब नाओ भी हन हैं, खुद खे[3] रहे हैं॥८॥

(९) अमर नाथ की चढ़ाई

चढ़ाई मुसीबत[4], उतरना यह मुश्किल।
फिसलनी बरफ तिस पे आफत यह बादल॥
क्यामत[5] यह सर्दी कि बचना है बातल[6]।
यह बू बूटीयों की; कि घबरा गया दिल॥
यह दिल लेना, जाँ लेना, किसकी अदा[7] है?।
मेरी जाँ की जाँ, जिस पै शोखी फिदा[8] है॥९॥

(१०) पर्वत पर पूर्णिमा रात्रि

अजब लुत्फ़[9] है कोह[10] पर चाँदनी का।
यह नेचर[11] ने ओढ़ा है जाली दुपट्टा॥
दिखाता है आधा, छिपाता है आधा।
दुपट्टे ने जोबन[12] कीया है दोबाला[13]॥
नशे में जवानी[14] के माशूक़े-नेचर[15]।
है लिपटी हुई राम से मस्त हो कर॥ १०॥

---

१ पर्वतों. २ चोट, टक्कर. ३ चला रहे हैं, खेल रहे हैं. ४ कष्ट भरी, कठिनतापूर्ण. ५ अत्यन्त भारी. ६ छूट अर्थात् असम्भव. ७ नखरा, नाज़. ८ कुर्बान, वारे, सदके हैं. ९ आनन्द. १० पर्वत. ११ क़ुदरत. १२ सुंदरता. १३ द्विगुणा. १४ यौवन. १५ प्रकृति (कुदरत) रूपी प्रिया.

(११) अमर नाथ का अति विशाल खुदाई हाल[1] जिसे लोग गुफा कहते हैं.

बरफ जिस में सुस्ती है, जड़ता है, ला[2]-शै।
अमर-लिंग इस्तादा[3] चेतन की जा[4] है॥
मिले यार, हुआ वस्ल[5], सब फासला तै[6]।
यही रूप दायम[7] अमर-नाथ का है॥
वह आये उपासक, तअय्यन[8] मिटा सब।
रहा राम[9] ही राम "मैं" तूं मिटा जब॥

[३१]

* निवास स्थान की रात्रि

(अर्थात् उत्तरा खंड में गङ्गातट पर एकान्त निवास स्थान की प्रथम रात्रि)

रात का वक़्त[10] है वियावाँ[11] है।
खुश-वज़ा[12] पर्वतों में मैदाँ है॥ १॥

---

१ बड़ा खुला कमरा. २ कुछ चीज़ नहीं. ३ खड़ा हुआ. ४ स्थान पर है. ५ मिलाप, मेल, अभेदता. ६ जय अन्तर, फर्क़ दूर हुआ, मिट गया. ७ नित्य, सर्वदा रहने वाला. ८ भेद भाव, फर्क़, अन्तर, क़ैद, परिछिन्नता. ९ ईश्वर, कवि के नाम से भी मुराद है. १० समय. ११ मैदान. १२ उत्तम बनावट या ढ़ंग, तरीक़ा.

* स्वामी राम जब अपने कुटुम्ब के साथ उत्तराखण्ड में पहुंचे, वहाँ रियासत टिहरी की राजधानी के समीप गङ्गातट पर एक सुन्दर एकान्त स्थान (सेठ मुरली घर का बागीचा) पाया, जिसे राम ने एकांत निवासार्थ चुना, उस स्थान पर प्रथम रात्रि के समय की शोभा राम वर्णन करते हैं।

आस्माँ[1] का बतायें क्या हम हाल ।
मोतियों से भरा हुआ है थाल ॥ २ ॥
चाँद है मोतियों में लाल धरा ।
अबर[2] है थाल पर रुमाल पड़ा ॥ ३ ॥
सिर पर अपने उठा के ऐसा थाल ।
रक्स[3] करती है नेचरे[4]-खुशहाल ॥ ४ ॥
बाद[5] को क्या मज़े की सूझी है ।
राम के दिल की बात बूझी है ॥ ५ ॥
पास जो बेह रही है गंगा जी ।
अबखरे[6] उस के लद लदाते ही ॥ ६ ॥
ला रही है लपक कर राम के पास ।
क्या ही ठंडक भरी है गंगा-बास[7] ? ॥ ७ ॥
फख़रे[8]-खिदमत से बाद है खुरसंद[9] ।
जा मिली बादलों से हो के बलन्द ॥ ८ ॥
अब तो अटखेलियां ही करती है ।
दामने-अबर[10] को लो उलटती है ॥ ९ ॥
लो उड़ाया वह पर्दा-ओ,रुमाल ।
आस्माँ दिखाया है माला माल ॥ १० ॥
शाद[11] नेचर[12] है जगमगाती है ।
आँख हर चार सू[13] फिराती है ॥ ११ ॥
क्या कहूं चाँदनी में गंगा है ।
दूध हीरों के रंग रंगा है ॥ १२ ॥

---

१ आकाश. २ बादल. ३ नाचती है. ४ सुखी, या सुख स्वरूप प्रकृति. ५ वायु. ६ जलकी भाप, धूआँ. ७ गङ्गा जलकी सुगंध. ८ सेवा के मान से. ९ प्रसन्न, खुश. १० बादल का पल्ला, किनारा, सिरा. ११ खुश, प्रसन्न. १२ [illegible]

वाह ! जंगल में आज है मंगल[1] ।
सैर कर इस तरफ़ की चल ! चल ! चल ! ॥ १३ ॥

[३२]

निवास स्थान की बहार (ऋतु इत्यादि) का वर्णन

आ देख ले बहार कि कैसी बहार है (टेक)

(१) गंगा का है किनार[2], अजब सब्ज़ा-ज़ार है ।
बादल की है बहार हवा खुशगवार[3] है ॥
क्या खुशनमा[4] पहाड़ पै वह चशमा[5]-सार है ।
गंगा ध्वनी सुरीली है, क्या लुतफ़[6]-दार है ॥ आ० १

(२) बाहर निगाह[7] कीजिये तो गुलज़ार है खिला ।
अंदर सरूर[8] की तो भला हद कहाँ दिला[9] ! ॥
कालिज क़दीम का यह सरे-मू[10] नहीं हिला ।
पढ़ाता मारफ़त[11] का सबक़ मेरा यार है ॥ आ० २

(३) वक़्ते-सुबाहे[12]-ईद तमाशा त्यार है ।
गलगूना[13] मुंह पै मल के खड़ा गुलऽज़ार[14] है ॥
शाहे-फ़लक[15] से या जो हुई आँख चार[16] हैं ।
मारे शरम के चेहरा बना सुरख़[17]-नार है ॥ आ० ३

---

१ आनंद. २ तट, किनारा. ३ मनोहर, अनंद दायक. ४ रमनीय. ५ धारा बहती है. ६ आनंद दायक. ७ दृष्टि. ८ आनंद. ९ रे दिल ! १० यास वींका नहीं हुआ (अर्थात पढ़ाना बंद नहीं हुआ). ११ आत्मज्ञान. १२ आनंद की प्रातः काल का समय. १३ उबटना, (उगाल). १४ फूल जैसी गालों (कपोलों) वाला प्यारा. १५ सूर्य. १६ परस्पर दर्शन, परस्पर मेल. १७ आग की तरह लाल.

(४) क़तरे हैं ओस के कि दुर्रों[1] की क़तार है।
किरणों की उन में, बल[2] वे, नज़ाकत[3] यह तार है॥
मुर्ग़ाने[4]-खुश-नवां, तुम्हें काहे की आर[5] है।
गाओ बजाओ, शब[6] का मिटा दिल से बार[7] है॥ आ० ४

(५) माशूक़[8]-क़द दरख्तों पै बेलों का हार है।
ने[9] नै ग़लत है, ज़ुल्फ़ का पेचाँ[10] यह मार[11] है॥
वाह वा! सजे सजाये हैं, कैसा शृङ्गार है।
अशजार[12] में चमकता है, खुश आबशार[13] है॥ आ० ५

(६) अशजार सिर हिलाते हैं, क्या मस्त वार हैं।
हर रंग के गुलों से चमन लाला[14]-ज़ार है॥
भँवरे जो गूंजते हैं, पड़े ज़र-[15]नगार हैं।
आनन्द से भरी यह सदा[16] ओङ्कार है॥ आ० ६

(७) गंगा के रू-सफा[17] से फिसलती न गर[18] नज़र[19]।
लैहरों पे अक्स[20] मिहर[21] का क्यों बेक़रार[22] है॥
विष्णु के शिव के घर का असासा[23] यह गंग है।
यहाँ मौसमे[24]-खिज़ाँ में भी फसले[25]-बहार है॥ आ० ७

---

१ मोतियों. २ बलिक. ३ कोमलता, या नाज़ुक सा धागा. ४ अच्छा गानेवाले पक्षी. ५ शरम. ६ रात्रि. ७ बोझ (अर्थात रात गयी और प्रातः काल हुआ). ८ प्रेम मूर्ति प्यारों के कद समान. ९ नहीं, नहीं. १० पेचदार. ११ साँप. १२ दरख्तों. १३ झरना. १४ सुरख रंग. १५ सुनैहरी रंग जिन के परों पर होते हैं. १६ ध्वनि ता आवाज़. १७ शुद्ध रूप. १८ अगर. १९ दृष्टि. २० प्रतिबिम्ब, साया. २१ सूर्य २२ चञ्चल, अस्थिर. २३ सम्पति, माल. २४ श्रावन भादों की ऋतु जब पत्ते झरने लगते हैं. २५ बसंत ऋतु.

(८) साक़ी[1] वह मै[2] पिलाता है, तुर्शी[3] को हार है।
वाह क्या मज़े का खाने को ग़म का शिकार है॥
दिलदार[4]-खुश-अदा तो सदा हमकनार[5] है।
दर्शन शराबे-नाब[6], सख़ुन[7] दिलके पार है॥ आ० ८

(९) मस्ती मुदाम[8]-कार, यही रोज़गार है।
गुलबीन[9] निगाह[10] पड़ते ही फिर किस का ख़ार[11] है॥
क्यों ग़म से तू निज़ार[12] है क्यों दिलफ़गार[13] है?
जब राम क़ल्ब[14] में तेरे खुद यारे-ग़ार[15] है॥ आ० ९

[३२]

ज्ञानी का घर (वा महफ़ल)

राग पहाड़ी ताल धुमाली

सिर पर आकाश का मंडल है, धरती पै सुहानी[16] मख़मल है।
दिन को सूरज की महफ़ल है, शब[17] को तारों की सभा बाबा॥
जब झूम के यहां घन[18] आते हैं, मस्ती का रंग जमाते हैं।
चश्मे तंबूर बजाते हैं, गाती है मल्हार[19] हवा बाबा॥
याँ पँछी मिल कर गाते हैं, पीतम[20] के संदेस सुनाते हैं।
याँ रूप अनूप दिखाते हैं, फल फूल और बर्ग[21]-ओ-ग्रा बाबा॥

---

१ आनंद रूपी शराब पिलाने वाला, अर्थात् ब्रह्मवित गुरु. २ प्रेमसद. ३ खटाई अर्थात् विषय-वासना. ४ अच्छे नखरे नखरे करने वाला प्यारा. ५ साथ. ६ अंगूर की शराब. ७ बात चीत. ८ नित्य रहने वाली. ९ पुष्प (गुण) देखने वाली. १० दृष्टि. ११ कांटा (अवगुण). १२ दुबला पतला, दुर्बल. १३ घायल चित्त, ज़ख़्मी दिल. १४ अन्तःकरण. १५ घर का यार अर्थात् सच्चा प्यारा या अन्तर्यामी. १६ दिल को भाने वाली. १७ रात. १८ बादलों के समूह. १९ वह राग जिस के गाने से वर्षा हो. २० प्यारे. २१ घास की पत्ती.

धन दौलत आनी जानी है, यह दुन्या राम कहानी है।
यह आलम आलम-फानी है, बाक़ी है ज़ाते-खुदा[1] बाबा॥

[३४]

ज्ञानी को स्वप्ना।

राग कल्याण, ताल तीन

घर में घर कर

कल ख्वाब एक देखा, मैं काम कर रहा था
बैलों को हाँकता था, और हल चला रहा था
मेहनत से सेर[2] हाकर, वर्ज़श से शेर होकर
यह जी[3] में अपने आई, "बस यार अब चलो घर"
घर के लिये थी मेहनत, घर के लिये थे बाहर
झट पट स्नान करके, पोशाक कर के दर पर
घर की तरफ मैं लपका, पा[4] शौक से उठा कर
तेज़ी से डग[5] बढ़ाकर, जलदी में गड़ बड़ा कर
कि लो दौड़ धूप ही ने, यह मचा दिया तहय्यर[6]
वह ख्वाब[7] झट उड़ाया, यह पाओं घर में आया
बेदार[8] खुद को पाया, ले यार घर में घर कर
सुपने के घर को दौड़ा, घर जागने में आया
क्या खूब था तमाशा, यह ख्वाब कैसा आया
वन वन में राम ढूंडा, मैं राम खुद बन आया
मैं घर जो खोजता था, मेरा ही था वह साया
अब सब घरों का हूं घर, ऐ राम! घर में घर कर

१ सत्यस्वरूप परमात्म देव. २ रज कर, तृप्त. ३ चित्त. ४ पाओं. ५ क़दम. ६ हैरानगी, हलचल, व्याकुलता आश्चर्य. ७ स्वप्न. ८ जाग्रत.

[३५]

ज्ञानी की सैर (१)

राग बिहाग, ताल तीन

मैं सैर करने निकला, ओढ़े अबर[1] की चादर।
पर्वत में चल रहा था, हवा के बाज़ुओं[2] पर॥
मतवाला[3] झूमता था, हर तरफ़ घूमता था।
झरने नदी-ओ-नाले, पहचान कर पुकारे॥
नेचर[4] से गूंज उट्ठी, उस वेद की ध्वनी की।
"तत्त्वमसि[5], त्वमसि", तू ही है जान सब की॥
यह नज़ारा[6] प्यारा प्यारा, तेरा ही है पसारा[7]।
जो कुछ भी हम बने हैं, यह रूप बस तो तू है॥
सीनों में फिर हमारे, है मुनअक़स[8] तो तू है।
जो कुछ भी हम बने हैं, यह रूप बस तो तू है॥
यह सुन जो मैं ने झाँका, नीचे को सीधा बाँका।
हर आबशारों[9]-चशमा, गुलो-बर्ग[10] का करिशमा॥
अल्वाने[11]-नौ दर नौ, अशखासे[12]-जिन्स हर[13] नौ।
हर रंग में तो मैं था, हर संग[14] में तो मैं था॥
माँ[15] मामता[16] की मारी, जाती है वारी न्यारी।
शौहर[17] को पाके दुलहन[18], सौंपे है अपना तन मन।

१-बादल. २ पंख, पर. ३ मस्त. ४ प्रकृति, क़ुदरत. ५ वह (ब्रह्म) तू है, तू है. ६ दृश्य. ७ फैलाओ, तेरी ही है यह सृष्टि. ८ प्रतिबिम्बित. ९ झरना. १० पुष्प और पत्ते का जादू. ११ प्रकार २ के भाँति २ के रंग. १२ पुरुष. १३ हर तरह के. १४ पत्थर अथवा साथी, १५ माता. १६ गोद. १७ पति. १८ पत्नी.

मुद्दत का बिछुड़ा बच्चा, रोता है माँ को मिलता।
वे इख़्तियार मेरा, दिलो-जाँ वह ही निकला॥
वह गदाज़[1]-फरहत आमेज़, वह दर्दे-दिल दिलावेज़[2]।
पुर सोज़[3] राहते-जां[4], लज़्ज़त भरे वह अरमां[5]॥
वह निकले जेबे[6]-दिल से, वसले-[7]रवां में बदले।
मेंह बरसा मोतियों का, तूफ़ान आँसुओं का,
झिम! झिम! झिम!

[३६]

ज्ञानी की सैर (२)

राग कल्याण, ताल तीन

यह सैर क्या है अजब अनोखा, कि राम मुझ में, मैं राम में हूं।
बग़ैर सूरत अजब है जलवा[8], कि राम मुझ में, मैं राम में हूं॥१॥
मरक़ाये[9]-हुस्नो-इश्क हूं मैं, मुझी में राज़ो-न्याज़[10] सब हैं।
हूं अपनी सूरत पै आप शैदा[11], कि राम मुझ में, मैं राम में हूं॥२॥
ज़माना आयीना[12] राम का है, हर एक सूरत से है वह पैदा।
जो चश्मे[13]-हक़बीं खुली तो देखा, कि राम मुझ में, मैं राम में हूं॥३॥
वह मुझ से हर रंग में मिला है, कि गुल से बू भी कभी जुदा है?
हबाबो[14]-दर्या का है तमाशा, कि राम मुझ में, मैं राम में हूं॥४॥

---

१ दिल का आनन्दमय पिघलना. २ दिलपसन्द दर्द, अर्थात् वह दुःख जो दिल को भावे. ३ जलनाक. ४ ज़िन्दगी का आराम. ५ अभिलाष, आर्ज़ू, पश्चात्ताप. ६ दिल की जेब अर्थात् हृदय की कोठड़ी से. ७ वह सब (दर्द इत्यादि) से ८ आनन्द का अनुभव वह निकला अर्थात् वह सब दुःख दर्द आनन्द साक्षात्कार में बदल गये. ८ दर्शन, ज़हूर, प्रकाश. ९ सुन्दरता और प्रेम की पुस्तक (तस्वीर). १० गुप्त भेद और इच्छायें ११ आशिक़, आसक्त. १२ शीशा. १३ तत्त्वदृष्टि का नेत्र. १४ बुलबुला और दर्या.

सबब बताऊं मैं वजद[1] का क्या? है क्या जो दरपर्दा[2] देखता हूं।
सदा[3] यह हर तर्ज़ से है पैदा, कि राम मुझ में, मैं राम में हूं ॥५॥
बसा है दिल में मेरे वह दिलबर, है आयीना में खुद आयीना[4]-गर।
अजब तहय्युर[5] हुआ यह कैसा? कि यार मुझ में, मैं यार में हूं ॥६॥
मुक़ाम पूछो तो लामकाँ[6] था, न राम ही था न मैं वहाँ था।
लिया जो करवट तो होश आया कि राम मुझ में, मैं राम में हूं ॥७॥
अललत्वातर[7] है पाक[8] जल्वा, कि दिल बना तूरे-वर्क़[9]-सीना।
तड़प के दिल यूं पुकार उठा, कि राम मुझ में, मैं राम में हूं ॥८॥
जहाज़ दरया में और दरया जहाज़ में भी तो देखिये आज।
यह जिसम[10] कश्ती[11] है राम दरया, है राम मुझ में, मैं राम में हूं ॥९॥

[३७]

बाह्य वर्षा से अन्तर्गत आनन्द की वर्षा की तुलना

(यह कविता रियासत टिहरी के वाशिष्ठाश्रम अर्थात् वशुन वन में उन दिनों लिखी गई जब राम से अन्त में अपना नाम देना भी छूट गया)

राग विहाग ताल दादरा

"चार तरफ से अबर[12] की वाह! उठी थी क्या घटा!।
बिजली की जगमगाहटें, राद[13] रहा था कड़गड़ा ॥ १ ॥
बरसे था मेंह भी झूम झूम, छाजो उमड़[14] उमड़ पड़ा।
झोंके हवा के ले गये होशे[15]-बदन को वह उड़ा ॥ २ ॥

---

१ अत्यन्तानन्द, विस्मय. २ पर्दे के पीछे. ३ ध्वनि, आवाज़. ४ शीशा बनानेवाला, सकन्दर से अभिप्राय है. ५ आश्चर्य. ६ देश रहित. ७ लगातार, निरन्तर. ८ शुद्ध दर्शन. ९ बिजली के पर्वत की छाती की तरह. १० शरीर. ११ नाओ. १२ बादल. १३ बिजली की कड़क. १४ मतलब इस मुहावरे का यह है कि-बड़े ज़ोर से वर्षा हुई. १५ शरीर के होश.

हर रगे-जाँ[1] में नूर था, नग़मा[2] था ज़ोर शोर का।
अब्र-वरों से था सिवाय दिल में सरूर[3] बरसता ॥ ३ ॥
आबे-हयात[4] की झड़ी ज़ोर जो रोज़ो-शब[5] पड़ी।
फ़िक्रो[6]-ख्याल बैह गये, टूटी दूई[7] की झोंपड़ी ॥ ४ ॥

[३८]

राम से मुबारकबादी

राग भैरवी ताल चलन्त

नज़र आया है हर सू[8] मह[9]-जमाल अपना मुबारक[10] हो।
"वह मैं हूं" इस ख़ुशी में दिल का भर आना मुबारक हो ॥ १ ॥
यह उरयानी[11] रुखे-ख़ुरशीद[12] की ख़ुद पर्दा हायल[13] थी।
हुआ अब फाश[14] पर्दा, सितर[15] उड़ जाना मुबारक हो ॥ २ ॥
यह जिस्मो[16]-इस्म का काँटा जो बे ढब सा खटकता था।
ख़लिश[17] सब मिट गयी, काँटा निकल जाना मुबारक हो ॥ ३ ॥
तमसख़र[18] से हुये थे क़ैद साढ़े तीन हाथों में।
बले[19] अब वुसते-फ़िक्रो-तख़य्यल[20] से भी बढ़ जाना मुबारक हो ॥ ४ ॥
अजब तसख़ीरे[21]-आलमगीर लाई सल्तनते-आली[22]।
महो[23]-माही का फ़रमाँ[24] को बजा[25] लाना मुबारक हो ॥ ५ ॥

---

१ प्राण के नस नस में. २ आवाज़. ३ आनन्द. ४ अमृत वर्षा. ५ दिन रात जो ज़ोर से पड़ी. ६ चिन्ता और शोक. ७ द्वैत की झोंपड़ी जो दिल में स्थित थी सब बैह गयी. ८ हर तरफ़. ९ चन्द्रमुख या चन्द्र जैसा सौन्दर्य. १० बधाई, ख़ुशी. ११ नङ्गा पन, स्पष्ट प्रकट होना. १२ सूर्य मुख अर्थात अपना प्रकाश स्वरूप आत्मा. १३ ढके हुए थी. १४ खुला, प्रकट. १५ पर्दा. १६ नाम और रूप. १७ खटका, झगड़ा, चोट. १८ ठट्ठे से, हँसी से. १९ किन्तु. २० फिकर और ख्याल अर्थात् सोच विचार की सीमा या अन्दाज़ा. २१ समस्त संसार को जीतने वाली विजय. २२ भारी राज्य. २३ चन्द्र-सूर्य या लोक परलोक. २४ आज्ञा. २५ आज्ञा मानना.

न खदशा[1] हर्ज का मुतलक़[2], न अंदेशा-खलल[3] बाक़ी।
फुरेरे[4] का बलंदी पर यह लैहरान मुबारक हो ॥ ६ ॥
तअल्लुक़[5] से बरी[6] होना हरूफ़े[7]-राम की मानन्द[8]।
हर इक पैहलू[9] से नुक़्ता-ए-दाग़[10] मिट जाना मुबारक हो ॥ ७ ॥

[३९]

ज्ञानी का आशीर्वाद

बदले है कोई आन[11] में अब रंगे[12]-ज़माना (टेक)
आता है अमन[13] जाता है अब जंगे[14]-ज़माना ॥ १ ॥
ऐ जैहल[15]! चलो, दर्द उड़ो, दूर हटो हसद[16]।
कमज़ोरी मरो डूब, बस ऐ नंगे[17]-ज़माना ॥ २ ॥
गम दूर, मिटा रश्क[18], न गुस्सा, न तमन्ना।
पलटेगा घड़ी पल में नया ढंगे-ज़माना ॥ ३ ॥
आज़ाद है, आज़ाद है, आज़ाद है हर एक।
दिल शाद[19] है क्या खूब उड़ा तंगे[20]-ज़माना ॥ ४ ॥
"लो[21] काठ की हंडियों से निभे भी तो कहां तक।
अग्नि तो जला ज्ञान की दे संगे-ज़माना ॥" ५ ॥

---

१ डर. २ बिलकुल, नितान्त. ३ फसाद, बिगाड़ का फ़िक्र, ४ झंडा. ५ सम्बन्ध या आसक्ति. ६ आज़ाद, निरासक्त. ७ राम के वरण (र, आ, म), ८ सदृश. ९ तरफ़. १० बिन्दु का चिह्न. ११ घड़ी. १२ समय का रंग ढंग. १३ सुख, चैन. १४ युद्ध का समय. १५ अविद्या. १६ ईर्षा. १७ निर्लज्जता का समय. १८ ईर्षा, द्वेष. १९ प्रसन्न चित्त. २० समय की तंगी, मुसीबत. २१ काठ की हण्डिया को अग्नि पर रखने से क्या लाभ होगा, यदि कुछ जलाना चाहते हो तो ज्ञानाग्नि पर समय का गम रूपी पत्थर रख कर उसे फूंक दो.

आती है जहाँ में शाहे[1]-मशरक़ की स्वारी।
मिटता है सियाही का अभी ज़ंगे-ज़माना[2] ॥ ६ ॥
वह ही जो इधर खार[3] उधर है गुले-खन्दाँ[4]।
हो दंग जो यूं जान ले नैरंगे[5]-ज़माना ॥ ७ ॥
देता है तुम्हें राम भरा जाम,[6] यह पी लो।
सुन्वायगा आहंग[7] नये-चंगे[8]-ज़माना ॥ ८ ॥

[४०]

बीमारी में राम की अवस्था

राग भैरव ताल शूल

वाह वा, ऐ तप व रेज़श! वाह वा।
हव्वाज़ा[9] ऐ दर्दों-पेचश! वाह वा ॥ १ ॥
ऐ बलाये-नागहानी[10]! वाह वा।
वैलकम[11], ऐ मर्गे-जवानी[12]! वाह वा ॥ २ ॥
यह भँवर, यह क़हर[13] बरपा? वाह वा।
बेहरे-मिहरे[14]-राम में क्या वाह वा ॥ ३ ॥
खाँड का कुत्ता गधा चूहा बिला[15]।
मुंह में डालो, ज़ायका[16] है खाँड का ॥ ४ ॥

---

१ सूर्य, ज्ञान के सूर्य से तात्पर्य है. २ समय का कलङ्क, दाग, ज़ंगार. ३ काँटा, ४ खिला हुआ पुष्प. ५ समय की विचित्रता. ६ निजानन्द की मस्ती का या प्रेम का प्याला. ७ स्वर. ८ समय के बाजे का. ९ बहुत अच्छा, बहुत खूब. १० अचानक आने वाली आफत. ११ तुझे स्वागत है. १२ तरुणाई अर्थात् युवावस्था में मृत्यु. १३ ईश्वरीय कोप, ग़ज़ब. १४ सूर्य रूपी राम के समुद्र में अर्थात् राम के प्रकाश स्वरूप सिन्धु में यह सब नाम रूप प्रपञ्च मानो भँवर और लहरें हैं. १५ बिल्ली का पुरुष. १६ स्वाद.

पगड़ी, पाजामा, दुपट्टा, अंगखा।
ग़ौर से देखा तो सब कुछ सूत था ॥ ५ ॥
दामनी तोड़ी व माला को घड़ा।
पर निगाहे[1]-हक़ में है वही तिला[2] ॥ ६ ॥
मोत्याबिन्द दिल की आँखों से हटा।
मर्ज़ो-सिहत[3], पेन[4] राहते-राम[5] था ॥ ७ ॥

[४१]

राम का नाच

राग नट नारायण ताल दीपचंदी

नाचूं मैं नटराज रे! नाचूं मैं महाराज! (टेक)

सूरज नाचूं, तारे नाचूं, नाचूं बन महताब[6] रे! ॥ १ ॥ नाचूं०
तन तेरे में मन हो नाचूं, नाचूं नाड़ी नाड़ रे! ॥ २ ॥ नाचूं०
बादर[7] नाचूं, वायू नाचूं, नाचूं नदी अरु नाव[8] रे! ॥ ३ ॥ नाचूं०
ज़र्रह[9] नाचूं, समुद्र नाचूं, नाचूं मोघरा[10] काज रे! ॥ ४ ॥ नाचूं०
मधुआ[11] लव बदमस्ती वाला, नाचूं पी पी आज रे! ॥ ५ ॥ नाचूं०
घर लागो रंग, रंग घर लागो, नाचूं पापा दाज रे! ॥ ६ ॥ नाचूं०
राग गीत सब होवत हरदम, नाचूं पूरा साज रे! ॥ ७ ॥ नाचूं०
राम ही नाचत, राम ही बाजत, नाचूं हा निर्लाज रे! ॥ ८ ॥ नाचूं०

---

१ तत्त्वदृष्टि, आत्मदृष्टि. २ स्वर्ण, सोना. ३ रोग और निरोग. ४ ठीक, निश्चय पूर्वक. ५ राम की शान्त दशा, आनन्दावस्था. ६ चाँद. ७ बादल. ८ जहाज़, बेड़ी. ९ परमाणु, अणु. १० भारी. ११ प्रेम रूपी मधु का प्याला.

त्याग

[४२]

मेरा मन लगा फकीरी में (टेक)

डंडा कूंडा लिया बगल में, चारों चक जागीरी में ॥मे० १
भंग तंग के टुकड़ा खाँदे, चाल चलें अमीरी में ॥ मे० २
जो सुख देखियो राम संगत में, नहीं है वज़ीरी में ॥मे० ३

[४३]

जङ्गल का जोगी (योगी)

(यह कविता १९०६ में टिहरी के वशिष्ठाश्रम के वन में उन दिनों यहीं जब राम से ग्रन्थ में अपना नाम देने का स्वभाव भी छूट गया था)

हर हर ओम्, हर हर ओम् टेक

जङ्गल में जोगी वसता है, गह[1] रोता है गह[1] हसता है।
दिल उसका कहीं न फंसता है, तन मन में चैन वरसता है ॥ १ ॥
खुश फिरता नंग मनंगा है, नैनों में वैहती गंगा है।
जो आजाये सो चंगा है, मुख रंग भरा मन रंगा है ॥ हर० २
गाता मौला[2] मतवाला[3] है, जब देखो भोला भाला है।
मन मनका उस की माला है, तन उस का एक शिवाला है ॥हर० ३
नहीं परवाह मरने जीने की, है याद न खाने पीने की।
कुछ दिन की सुद्धि न महीने की, है पवन रुमाल पसीने की ॥हर०४

---

१ कभी. २ ब्रह्मज्ञानी, ईश्वरी. ३ मस्त.

पास इस के पंछी[1] आते हैं, और दरया गीत सुनाते हैं।
बादल अशनान कराते हैं, वृक्ष[2] उस के रिशते नाते हैं॥ हर० ५
गुलनार[3] शफ़क़[4] वह रंग भरी, जोगी के आगे है जो खड़ी।
जोगी की निगाह[5] हैरान् गैहरी, को तकती रह रह कर है पड़ी॥ हर० ६
वह चाँद चटकता गुल[6] जो खिला, इस मिहर[7] की जोत से फूल झड़ा।
फ़व्वारह फ़रहत[8] का उछला, पुहार[9] का जग पर नूर[10] पड़ा॥ हर० ७

[४४]

अल्वदा[11] मेरी रियाज़ी[12]! अल्वदा।
अल्वदा ऐ प्यारी रावी[13]! अल्वदा॥ १॥
अल्वदा ऐ ऐहले[14]-ख़ाना! अल्वदा।
अल्वदा मासूमे-नादां[15]! अल्वदा॥ २॥
अल्वदा ऐ दोस्तो[16]-दुशमन! अल्वदा।
अल्वदा ऐ शीतो-ओशन[17]! अल्वदा॥ ३॥
अल्वदा ऐ कुतबो-तद्रीस[18]! अल्वदा।
अल्वदा ऐ ख़ुबसो-तक़दीस[19]! अल्वदा॥ ४॥
अल्वदा ऐ दिल[20]! ख़ुदा! ले अल्वदा।
अल्वदा राम! अल्वदा[21], ऐ अल्वदा॥ ५॥

---

१ पक्षी. २ वृक्ष, दरख़्त. ३ अनार के रंग वाली. ४ लाली जो आकाश में सूर्य के उदय अस्त समय होती है. ५ दृष्टि. ६ पुष्प. ७ सूर्य. ८ ख़ुशी, आनन्द. ९ फुहार, बादल. १० प्रकाश तेज. ११ अलविदा हो, तुझे नमस्कार हो. १२ गणित विद्या. १३ रावी दरया का नाम है जो लाहौर में बहता है. १४ घर के लोग. १५ नादान बच्चे. १६ मित्र-शत्रु. १७ सरदी गरमी. १८ पुस्तक और पाठशाला. १९ अच्छा, बुरा. २० ऐ चित्त! तुझ को भी अलविदा हो, ऐ ख़ुदा (ईश्वर) तुझ को भी अलविदा (नमस्कार) हो. २१ ऐ अलविदा के शब्द तुझ को भी अलविदा हो.

[४५]

त्याग का फल

[महाभारत के कुछ श्लोकों का भावार्थ]

राग जंगला ताल कुमाली, या राग विहाग ताल चलत

(यह कविता राम भगवान् ने सन् १९०८ में उन दिनों में कही जब अन्त में अपना नाम देना भी उन से छूट गया)

अपने मज़े की ख़ातर गुल[1] छोड़ ही दीये जब।
रूये[2]-ज़मीं के गुलशन मेरे ही बन गये सब ॥ १ ॥
जितने ज़ुबाँ[3] के रस थे कुल तर्क कर दीये जब।
बस ज़ायक़े जहाँ[4] के मेरे ही बन गये सब ॥ २ ॥
ख़ुद के लिये जो मुझ से दीदों[5] की दीद[6] छूटी।
ख़ुद हुसन[7] के तमाशे मेरे ही बन गये सब ॥ ३ ॥
अपने लिये जो छोड़ी ख़ाहश[8] हवाख़ोरी की।
बादे-सबा[9] के झोंके मेरे ही बन गये सब ॥ ४ ॥
निज[10] की ग़रज़ से छोड़ा सुनने की आर्ज़ू[11] को।
अब राग और बाजे मेरे ही बन गये सब ॥ ५ ॥
जब बेहदगी के अपनी फ़िक्रो[12]-ख़याल छूटे।
फ़िक्रो-ख़याले-रंगीं[13] मेरे ही बन गये सब ॥ ६ ॥
आहा ! अजब तमाशा, मेरा नहीं है कुछ भी।
दावा नही ज़रा भी इस जिस्मो-इस्म[14] पर ही ॥ ७ ॥

---

१ फूल. २ पृथ्वि भर के बाग़. ३ जिह्वा. ४ संसार के. ५ नेत्रों की. ६ दृष्टि. ७ सौन्दर्य. ८ इच्छा. ९ पवन वायु. १० अपनी या स्वार्थ दृष्टि से ११ आशा. १२ शोक चिन्ता, १३ आनन्द दायक या भान्ति २ के विचार. १४ नाम रूप.

यह दस्तो[1]-पा हैं सब के, आँखें यह हैं तो सब की।
दुन्या के जिस्म[2] लेकिन मेरे ही बन गये सब ॥ ८ ॥

निजानन्द

[४६]

राग भांड ताल दादरा

आप में यार देख कर, आयीना[3] पुर सफा कि यूं।
मारे खुशी के क्या कहूँ, शशदर[4] सा रह गया कि यूं ॥ १ ॥
रो के जो इल्तमास[5] की, दिल से न भूलयो कभी।
पर्दा हटा दुई मिटा, उस ने भुला दिया कि यूं ॥ २ ॥
मैं ने कहा कि रंजो[6]-ग़म, मिटते हैं किस तरह कहो।
सीना[7] लगा के सीने से, माह[8] ने बता दीया कि यूं ॥ ३ ॥

---

[४६]

(१) जैसे साफ पानी में वस्तू पूरी तरह नज़र आती है, इस तरह अपने भीतर अपना प्यारा (प्रियात्मा) देख कर मैं ऐसा चकित हो गया कि खुशी के मारे मुख से कुछ बोल न सका।

(२) जब मैंने उस प्यारे से रो कर प्रार्थना की " कि मुझे कभी न भूलना ", तो उस ने द्वैत का पर्दा बीच से हटा दिया और मेरे से अभेद होकर अर्थात् मेरा ही स्वरूप बन कर झट मुझे भुला दिया (क्योंकि परस्पर एक दूसरे का स्मरण तो द्वैत में ही हो सकता है)।

(३) मैंने उस प्यारे से कहा कि " शोक-चिन्ता कैसे मिटते हैं ? " तो उस ने छाती से छाती मिला कर (अर्थात् पूर्ण अभेद हो कर) कहा कि ऐसे मिटते हैं, और तरह से नहीं।

---

१ हाथ, पाओं. २ सब शरीर. ३ साफ शीशा. ४ आश्चर्य. ५ प्रार्थना. ६ दुःख पीड़ा. ७ छाती. ८ चन्द्र मुख प्यारे ने.

गरमी हो इस बला कि हाय, भुनते हों जिस से मर्दो-ज़न[1] ।
अपनी ही आबो[2]-ताब है, खुद हि हूं देखता कि यूं ॥ ४ ॥
दुन्या-ओ-आक़बत[3] बना, वाह वा जो जहल[4] ने किया ।
तारों सा मिहरे[5]-राम ने, पल में उड़ा दिया कि यूं ॥ ५ ॥

[४७]

ग़ज़ल ताल दादरा

हस्ती-ओ[6]-इल्म हूं, मस्ती हूं, नहीं नाम मेरा ।
किबरयाई[7]-ओ-खुदाई, है फ़क़त[8] काम मेरा ॥ १ ॥
चश्मे[9]-लैला हूं, दिले-क़ैस[10], व दस्ते[11]-फ़रहाद ।
बोसा[12] देना हो तो दे ले, है लबे-जाम[13] मेरा ॥ २ ॥

(४) गरमी इतनी भारी (तीक्ष्ण) हो कि दाने की तरह पुरुष-स्त्री भुन रहे हों, परन्तु मुझे ऐसा भान होता है कि यह सब मेरा ही तेज़ और ताप है और मैं ही स्वयं भुना जा रहा हूं ।

(५) लोक और परलोक जो कुछ अज्ञान से बना था, राम ने उसे ऐसे उड़ा दिया जैसे सूर्य तारों को उड़ा देता है ।

१ स्त्री-पुरुष. २ चमक और दमक. ३ लोक और परलोक. ४ अविद्या, अज्ञान. ५ सूर्य रूपी राम. ६ सच्चिदानन्द हूं. ७ आत्म अभिमान या महात्मता और ईश्वरता. ८ केवल. ९ प्रिया लैली की आंख. १० प्रिय मजनूं का चित्त (लैली मजनूं दो आशिक़ माशूक़ पंजाब देश में हुए हैं और मजनूं का चित्त प्रिया लैली की चक्षु (वा दृष्टि) पर अत्यन्त आसक्त था, इसलिये लैली की चक्षु का उदाहरण यहाँ दिया है. ११ (प्रिया शीरीं का प्यारा आशक) फरहाद का हाथ (जिसने पर्वत को फोड़ डाला था). १२ चुम्बन देना अर्थात् चूमना हो तो चूमले. १३ मेरा मुंह रूपी प्याला तेरे पास है.

गोशे[1]-गुल हूं, रुख़े-यूसफ[2], दमे-ईसा[3], सरे-सरमद[4] ।
तेरे सीने[5] में वसूं हूं, है वही धाम[6] मेरा ॥ ३ ॥
हलक़े-मंसूर[7], तने-शम्स[8], व इल्मे-उलमा[9] ।
वाह या वैहर[10] हूं और बुदबुदा[11] इक राम मेरा ॥ ४ ॥

[४८]

८ राग झिला ताल दादरा

क्या पेशवाई[12] बाजा, अनाहद[13] शब्द है आज ।
वैलकम[14] को कैसी रौशनी, समवान्या[15] है आज ॥ १ ॥

---

[४८]

(१) स्वागत करने वाला प्रणव ध्वनि का बाजा क्या उत्तम बज रहा है, और सुवागत के वास्ते कैसा उत्तम वा स्वच्छ प्रकाश जगमगा रहा है । अभिप्राय यह है कि:—प्रणव-उच्चारण अर्थात् अहंग्रह उपासना से आत्म-साक्षात्कार होता है और साक्षात्कार से पूर्व चारों ओर भीतर प्रकाश ही प्रकाश भान होता है, इस लिये साक्षात्कार से थोड़ा पूर्व की अवस्था को दर्शाते समय प्रणव ध्वनि और प्रकाश उस (अनुभव) का स्वागत करने वाले वर्णन हुए हैं ।

---

१ फूल का कान. २ यूसफ का मुख. ३ ईसा का श्वास. ४ सरमदका सिर. ५ हृदय. ६ घर. ७ मंसूर (ब्रह्मज्ञानी) का कंठ. ८ शम्स तब्रेज़ का तन (शरीर). ९ विद्वानों की विद्या. १० समुद्र. ११ बुलबुला. १२ आगे चल कर लेने वाला. १३ अनहद ध्वनी, ॐ (प्रणव). १४ मुबारकबादी-(स्वागत). १५ उत्तम, शुद्ध, पवित्र.

चक्कर से इस जहान के फिरे असल घर को हम।
फुट-बाल सब ज़मीन है, पा[1] पर फ़िदा है[2] आज ॥१॥

चक्कर में है जहान, मैं मर्कज़[3] हूं मिह्र[4] साँ।
धोके से लोग कहते हैं, सूरज चढ़ा है आज ॥ २ ॥

---

(२) इस संसार-चक्कर से निकल कर हम जब अपने असली धाम (निज स्वरूप) की ओर मुड़े, तो पृथ्वि हमारे लिये एक फुट-बौल अर्थात् खेलका गेंद हो गई और अब वह हमारे चरणों पर वारे जाती है। अभिप्रायः—जब वृत्ति आत्मस्वरूप से विमुख थी और संसार वा संसार के विषयों में आसक्त थी तो संसार दूर भागता था, पर जब वृत्ति संसार से मुँह मोड़ कर अन्तर्मुख हुई तो संसार हमारे चरणों पर गिरने लग पड़ा।

(३) संसार तो चक्कर में है, पर सूर्यवत् मैं उस चक्कर का केन्द्र हूं और लोग धोके से कहते हैं कि आज सूर्य चढ़ा है (क्योंकि सूर्य तो नित्य स्थित रहता है)। अभिप्रायः—लोग इस भूल में हैं कि ईश्वर कहीं बाहिर है और उस के ढूंडने में चक्कर लगाते फिरते हैं, पर आत्मदेव सूर्यवत् सब का केन्द्र हुआ सब के भीतर स्थित है, केवल अज्ञान के बादल से आच्छादित है और उस के दूर हटने पर वह नित्य उपस्थित आत्मा वा आत्म-ज्ञान विद्यमान होता है, परन्तु लोग धोखे से यह कहते हैं कि हमने उसे ढूँढ पाया।

---

१ पाद, पावों, २ प्राण दिये हुए, अर्पित. ३ केन्द्र ४ सूर्य के समान.

शहज़ादे[1] का जलूस[2] है, अब तख्ते-ज़ात[3] पर।
हर ज़र्रह[4] सदक़ा[5] जाता है, नग़मा[6]-सरा है आज ॥४॥

हर बर्गो-मिहरो[7]-माह का रक़्सो-सरोद[8] है।
आराम अमन चैन का तूफ़ाँ बपा है आज ॥ ५ ॥

---

(४) युवराज अर्थात् सूर्य का अपने स्वराज्य की गद्दी पर बैठने का अब शुभ समा हो रहा है अर्थात् उदयकाल अब हो रहा है, इस वास्ते एक २ (परमाणु) उस पर प्राण दे रहा वा क़ुर्बान जा रहा है। अभिप्राय:—वृत्ति का अपने परम स्वरूप में लय होने का अब समय आरहा है, इस लिये प्रत्येक परमाणु उस ज्ञानी पर वारे न्यारे जा रहा है।

(५) इस समय प्रत्येक पत्ता, सूर्य और चन्द्र का नाच–राग हो रहा है, और सुख आनन्द शान्ति का समुद्र बह रहा है। अभिप्राय:—इस साक्षात्कार पर प्रत्येक पत्ता, चन्द्र और सूर्य प्रसन्नता में नृत्य कर रहे हैं और चारों ओर प्रसन्नता, शान्ति और सुख का समुद्र बह रहा है।

---

१ युवराज. २ राज तिलक. ३ स्वराज्य की गद्दी. ४ परमाणु. ५ वारे जाता, प्राण देता या क़ुर्बान होता है. ६ आवाज़ दे रहा है, गीत गा रहा है. ७ प्रत्येक पत्ते और चन्द्र सूर्य का. ८ नाच, राग.

किस शोखे-चश्म[1] की है यह आमद[2] कि नूरे-बर्क़[3]।
दीदों[4] को फाड़ फाड़ के राह देखता है आज ॥ ६ ॥

आता करम[5]-फशां, शाहे-अब्र[6] दस्त है।
बारश की राह[7] पानी छिड़कता खुदा है आज ॥ ७ ॥

---

(६) किस तीक्ष्ण-दृष्टि प्यारे का यह आगमन है कि जिस की इन्तज़ार में बिजली का तेज आँखें फाड़ २ कर देख रहा है? अभिप्राय:—ऐसा आनन्द का समय देख कर साधारण मनुष्य के चित्त में संशय उठ पड़ता है कि ऐसा कौन प्रभाव शाली अब आ रहा है जिस की प्रतीक्षा में विद्युत भी आँखें फाड़ २ देख रहा अर्थात् घोर प्रकाश कर रहा है।

(७) जिसके हाथ में बादल है वा जिस का हाथ कृपा-वृष्टि बादल के समान करने वाला है, ऐसा कृपालु महाराजाधिराज (सूर्य) आ रहा है और वर्षा के स्थान पर आनन्द रूपी जल की वृष्टि कर रहा है। अभिप्राय:—जो कृपा का अधिष्ठान वा समुद्र है, ऐसे प्रकाश स्वरूप आत्मा का अनुभव हो रहा है और बादल के स्थान पर अब ईश्वर स्वयं आनन्द की वृष्टि कर रहा है।

---

१ तीक्ष्णदृष्टि वाला प्यारा, (आत्मा). २ आगमन. ३ बिजली का तेज वा प्रकाश. ४ आँखों को. ५ कृपालु, कृपा वृष्टि करने वाला. ६ वह बादशाह जिस के हाथ में बादल हो अर्थात् सूर्य, वा जिसका हाथ बादल के समान कृपावृष्टि करता हो. ७ वर्षा के स्थान पर.

झुक झुक सलाम करता है अब चाँदे-ईद है।
इक़बाल[1] राम राम का खुद हो रहा है आज ॥ ८ ॥

[४६]

राग ज़िला ताल दादरा

गुल[2] को शमीम[3], आब[4] गौहर[5] और ज़र[6] को मैं।
देता बहादरी हूं बला शेरे-नर[7] का मैं ॥ १ ॥
शाहों को रोब[8] और हसीनां[9] को हुसनो-नाज़[10]।
देता हूं जबकि देखूं उठा कर नज़र[11] को मैं ॥ २ ॥
सूरज को सोना चाँद को चाँदी तो दे चुके।
फिर भी त्वायफ[12] करते हैं देखूं जिधर को मैं ॥ ३ ॥
अब्रूए[13]-कैहकशां[14] भी अनोखी[15] कमन्द है।
बे क़ैद हो असीर[16] जो देखूं इधर को मैं ॥ ४ ॥

(८) ईद का जो चाँद अर्थात् द्वितीया का चन्द्र निकला है वह मानो राम को नमस्कार झुक झुक कर कर रहा है। इस प्रकार राम अपना स्वागत (मान-प्रतिष्ठा) स्वयं आप हो रहा है। अभिप्रायः—इस साक्षात्कार के बाद तो द्वितीय का चाँद जिस के आगे लोग झुकाते हैं, वह स्वयं उस आत्मज्ञानी के आगे झुक २ कर नमस्कार करता है। इस प्रकार राम स्वयं अपना स्वागत (यश) आप हो रहा है।

१ स्वागत, प्रताप, प्रभाव. २ पुष्प. ३ सुगन्ध. ४ चमक. ५ मोती. ६ स्वर्ण. ७ नर शेर, सिंह. ८ दबदबा, प्रभाव. ९ सुन्दर लोग या सुंदरियों को. १० सौन्दर्य और नखरा. ११ दृष्टि. १२ मुजरा, नाच. १३ आँखों की भवें. १४ आकाश में एक लम्बी सफेदी जो रात्रि के समय नज़र आती है जिस को (Milky Path) दूधिया रास्ता या आकाश गंगा कहते हैं. १५ विचित्र. १६ क़ैद, बद्ध, आसक्त.

तारे झमक झमक के बुलाते हैं राम को।
आँखों में उन की रहता हूं, जाऊँ किधर को मैं ॥ ५ ॥

[५०]

राग भैरवी ताल चलन्त

यह डर से मिहर[1] आ चमका, अहाहाहा, अहाहाहा।
उधर मह[2] बीम[3] से लपका, अहाहाहा, अहाहाहा ॥ १ ॥
हवा अटखेलियां करती है मेरे इक इशारे से।
है कोड़ा[4] मौत पर मेरा, अहाहाहा, अहाहाहा ॥ २ ॥
अकाई[5] ज़ात[6] में मेरी असंखों रंग हैं पैदा।
मज़े करता हूं मैं क्या क्या, अहाहाहा, अहाहाहा ॥ ३ ॥
कहूं क्या हाल इस दिल का कि शादी[7] मौज[8] मारे है।
है इक उमडा हुआ दरया, अहाहाहा, अहाहाहा ॥ ४ ॥
यह जिस्मे[9]-राम, पे बद[10] गो! तसव्वर[11] मैहज़[12] है तेरा।
हमारा बिगड़ता है क्या, अहाहाहा[13] अहाहाहा ॥ ५ ॥

[५१]

ग़ज़ल ताल पशतो

पीता हूं नूर[14] हर दम, जामे-सरूर[15] पे हम।
है आस्माँ[16] प्याला, वह शराबे-नूर[17] वाला ॥ टेक

१ सूर्य. २ चाँद. ३ भय. ४ चाबुक. ५ एक, अद्वैत. ६ वास्तव स्वरूप ७ खुशी, आनन्द. ८ लैहरें मारना. ९ राम का शरीर. १० बुरा बोलने वाले या ताना मारने वाले; अभिप्राय भेदवादी से है. ११ भ्रम, अनुमान. १२ केवल. १३ यह शब्द आश्चर्य और हर्ष का वाचक है. १४ प्रकाश. १५ अनंद का प्याला. १६ आकाश. १७ प्रकाश रूपी मदा या ज्ञानामृत.

है जी[1] में अपने आता, दूं जो है जिस को भाता।
हाथी, गुलाम, घोड़े, ज़ेवर, ज़मीन, जोड़े ॥
ले जो है जिस को भाता, मांगे बिग़ैर दाता ॥ पीता हूं० १
हर क़ौम की दुआयें[2], हर मत की इल्तजायें[3]।
आती हैं पास मेरे, क्या देर क्या सवेरे ॥
जैसे अज़ानों गायें जंगल से घर को आयें ॥ पीताहूं० २
सब ख्वाहशें, नमाज़ें, गुण, कर्म, और मुरादें।
हाथों में हूं फिराता, दुन्या हूं यूं बनाता ॥
मेमार[4] जैसे ईंटें, हाथों में है घुमाता ॥ पीता हूं० ३
दुन्या के सब बखेड़े, झगड़े, फसाद, झेड़े।
दिल में नहीं अड़कते, न निगह को बदल सकते ॥
गोया गुलाल हैं यह, सुर्मा मसाल[5] हैं यह ॥ पीता हूं० ४
नेचर[6] के लाज़[7] सारे, अहकाम[8] हैं हमारे।
क्या मिहर[9] क्या सतारे, हैं मानते इशारे ॥
हैं दस्तो[10]-पा हर इक के, मर्ज़ी पे मेरी चलते ॥ पीता हूं०५
कशशे-सिक़ल[11] की क़ुद्रत, मेरी है मिहरो[12]-उलफत।
है निगह[13] तेज़ मेरी, इक नूर की अन्धेरी ॥
बिजली शफ़क़[14] अङ्गारे, सीने[15] के हैं शरारे ॥ पीताहूं० ६
मैं खेलता हूं हाली, दुन्या से गेन्द गोली।
ख्वाह इस तरफ को फेंकूं, ख्वाह उस तरफ चला दूं ॥

---

१ दिल. २ प्रार्थनायें. ३ निवेदन या दरख्वास्तें. ४ मकान बनाने वाला. ५ आंखों में सुर्मे की तरह. ६ प्रकृति (कुद्रत). ७ नियम, क़ानून. ८ आज्ञा, हुक्म, उपदेश. ९ सूर्य. १० हाथ और पाओं. ११ आकर्षण शक्ति (Law of gravitation). १२ कृपा (मिहरबानी). और प्यार. १३ दृष्टि १४ दोनों काल के मिलते समय आकाश में जो लाली होती है. १५ दिल.

पीता हूं जाम[1] हर दम, नाचूं मुदाम[2] थम थम।
दिन रात है तरन्नम[3], हूं शाहे-राम[4] बेग़म ॥ पीता हूं० ७

[५२]

ग़ज़ल ताल क़व्वाली

हबाबे[5]-जिस्म लाखों मर मिटे, पैदा हुए मुझ में।
सदा हूं बेहरे[6]-वाहद, लैहर है धोखा फ़रावाँ[7] का ॥ १ ॥
मेरा सीना[8] है मशरक़[9] आफ़ताबे[10]-ज़ाते-ताबाँ का।
तलू-ए-सुबह-ए-शादी[11], वाशुदन[12] है मेरे मिज़गाँ[13] का ॥२॥

---

[५२]

(१) मुझ में बुदबुदा रूपी शरीर लाखों मर मिटे और उत्पन्न हो गये, पर मैं नित्य अद्वैत रूपी समुद्र ही हूं, और मुझ में नानत्व-रूपी लैहरें केवल धोखा हैं

(२) मेरा जो हृदय है वह पूर्व है जहां से (प्रकाशस्वरूप आत्मा का) सूर्य प्रगट होता है और मेरे हृदय-नेत्र की पलकों का खुलनाही आनन्द की प्रातःकाल का चढ़ना है। अर्थात् हृदय आत्मा के साक्षात्कार का स्थान है और हृदय के नेत्र खुलने से (साक्षात्कार होने से) चारों ओर प्रसन्नता की प्रातः उदय होती है।

---

१ प्रेम-प्याला. २ नित्य, हमेशा ३ आनंद से आँसुवों का धीमे धीमे टपकना या बरसना. ४ बेग़म राम बादशाह हूं. ५ देह का बुदबुदा अर्थात देह या शरीर रूपी बुदबुदा. ७ अद्वैत का समुद्र अर्थात अद्वैत रूप समुद्र. ८ नानत्व, अगणित, ज्यादा, अर्थात द्वैत केवल धोखा है. ९ हृदय. १० पूर्व. ११ प्रकाशस्वरूप आत्मा (सूर्य) का पूर्व अर्थात् उदय स्थान है. १२ आनंद की प्रातः का उदय स्थान. १३ खुलना. १४ आँख अर्थात् ध्यान नेत्र की पलकें.

ज़ुबाँ अपनी बहारे[1] ईद का मुश़्दह[2] सुनाती है।
दुरों[3] के जगमगाने से हुआ आलम[4] चराग़ाँ का॥ ३॥

सरापा-नूर[5] पेशानी[6] पै मेरी मह[7] दरख़्शाँ[8] है।
कि झूमर[9] है जबीं[10] सीमीं पै गिर्जाये-ज़िमिस्ताँ[11] का॥ ४॥

---

(३) मेरी वाणी आनन्द की बहार की खुशखबरी सुनाती है और उन वाणी से शब्दरूपी मोतियों के झरने या जगमगाने से दीपमाला का समय बन्ध गया है। अर्थात् अविद्या या अन्धकार की रात्रि मेरी वाणी से प्रकाशित हो जाती है।

(४) मेरी चमकीली ललाट (पेशानी) पर अर्थात् पर्वतों की शिखर पर चाँद ऐसे चमक रहा है कि मानो पार्वती के चान्दी रूप चमकीले माथे पर झूमर लटक रहा है॥

---

१ ईद अर्थात निजानंद की बहार. २ खुशखबरी, आनंद की सूचना. ३ मोती, यहाँ अभिप्राय शब्दों से है. ४ (ज्ञान रूपी) दीपकों का लोक अर्थात चारों ओर ज्ञानका प्रकाश ही प्रकाश हो गया. ५ प्रकाशमान् या प्रकाश से पूर्ण. ६ माथा, मस्तक से अभिप्राय है. ७ चाँद. ८ प्रकाशमान. ९ माथे पर लटकने वाला ज़ेवर (गहना). १० चाँदी जैसी चमकीली पेशानी (बर्फ़) पर. ११ शीत स्वरूप पार्वती (उमा).

ख़ुशी से जान जामें[1] में नहीं फूली समाती अब ।
गुलों[2] के बार[3] से टूटा, यह लो दामाँ[4] बियाबाँ का ॥ ५ ॥
चमन में दौर[5] है जारी, तरब[6] का, चहचहाने का ।
चहकने में हुआ तबदील, शेवन[7] मुर्ग़-नालाँ[8] का ॥ ६ ॥
निगाहे[9]-मस्त ने जब राम की आमद[10] की सुन पाई ।
है मजमा[11] सैद[12] होने को यहां वहशी ग़ज़ालाँ[13] का ॥ ७ ॥

---

(५) आनन्द इतना बढ़ गया कि प्राण भी अब तन के भीतर फूले नहीं समाते, अथवा राम को पर्वतों में एक स्थान पर अब स्थित होने नहीं देते । बल्कि जैसे पुष्पों के बोझ से बन का पल्ला टूट गया कहलाता है या पुष्प अधिकता के कारण बन से बाहिर उड़ आते हैं, वैसे ही राम भी इस निजानन्द के बढ़ने से पर्वतों से नीचे उतरा कि उतरा ।

(६) इस संसार रूपी उपवन में आनन्द के चहचहाने का समय जारी है और इस (चहचहाहट) से पक्षियों का रोना भी चहकने में बदल गया है ।

(७) मस्त पुरुष की दृष्टि ने जब राम के आने की खबर सुनी तो दर्शन की प्रतीक्षा (इन्तज़ार) लोग ऐसे करने लगे कि मानो जंगली मृगों का समूह देखने को उत्सुक है (अर्थात् जैसे मृग जल की इन्तज़ार में टिकटिकी बान्धे रहते हैं, वैसे सर्व लोग राम की इन्तज़ार में लगे हैं).

---

१ भीतर के खाने रूपी पल्लेमें. २ पुष्प, फूल. ३ बोझ ४ पल्ला, मुराद जंगल का तट या किनारा. ५ समय, काल चक्कर. ६ ख़ुशी. ७ रुदन, शोक, खेद, विलाप. ८ रोते हुए पक्षियोंका. ९ मस्त पुरुषकी दृष्टि. १० आगमन. ११ समूह, हजूम. १२ शिकार होने, वद्ध होने अर्थात् मारे जाने को. १३ जंगली मृगों का.

[५२]

ग़ज़ल

मुझ बैहरे-ख़ुशी[1] की लैहरों पर दुन्या की किशती रहती है।
अज़[2] सैलें-सरूर धड़कती है छाती और किशती बैहती है॥
गुल[3] खिलते हैं, गाते हैं रो रो बुलबुल, क्या हंसते हैं नाले[4] नदियाँ।
रंगे-शफ़क़[5] घुलता है, बादे-सबा[6] चलती है, गिरता है छम छम बारां[7]। मुझ में! मुझ में!! मुझ में!!! ॥ १॥
करते हैं अंजम[8] जगमग, जलता है सूरज धक धक, सजते हैं बाग़ो-बियबाँ[9]।
बसते हैं नंदन पैरस, पुजते हैं कांशी मक्का, बनते हैं जिन्नतो-रिज़्वा[10]। मुझ में! मुझ में!! मुझ में!!! ॥ २॥
उड़ती हैं रेलें फर फर, बैहती हैं बोटें[11] झर झर, आती है आँधी सर सर।
लड़ती हैं फ़ौजें मर मर, फिरते हैं जोगी दर दर, होती है पूजा हर हर। मुझ में! मुझ में!! मुझ में!!! ॥ ३॥
चर्ख़[12] का रंग रसीला, नीला नीला; हर तरफ़ दमकता है, कैलास झलकता है, बैहर[13] डलकता है, चाँद चमकता है।
मुझ में! मुझ में!! मुझ में!!! ॥ ४॥

---

१ ख़ुशी का समुद्र. २ आनन्द के तीव्र तूफ़ान (धक्कों) से. ३ पुष्प. ४ धारा, चश्मे. ५ प्रातःकाल और सायंकाल जो आकाश में लाली बादलों में होती है. ६ पर्वा-वायु. ७ वर्षा. ८ तारे. ९ बाग़ और जंगल. १० स्वर्ग और स्वर्ग का अध्यक्ष. ११ बेड़ी, किश्ती. १२ आकाश. १३ समुद्र.

आज़ादी है, आज़ादी है, आज़ादी मेरे हाँ।
गुंजायशों-जा सब के लिये बेहदो-पायाँ[2] ॥

सब वेद और दर्शन, सब मज़हब, क़ुरआन, अन्जील
और त्रैपटकों[3]।
बुद्ध, शंकर, ईसा और अहमद, था रहना सेहना इन सब का।
मुझ में ! मुझ में !! मुझ में !!! मुझ में ! ॥ ५ ॥

थे कपल, कणाद और अफ़लातूँ, अस्पैंसर, कैंट[4] और हैमिलटन।
श्रीराम, युधिष्ठिर, अस्कन्दर, विक्रम, क़ैसर, अलज़बथ, अकबर।
मुझ में ! मुझ में !! मुझ में !!! मुझ में ! ॥ ६ ॥

मैदाने-अबद[5] और रोज़े[6]-अज़ल, कुल माज़ी[7], हाल
और मुस्तक़बिल।
चीज़ों का बेहद रद्दो-बदल[8], और तख़्ता[9]-ए-दहर का है हल चल,
मुझ में ! मुझ में !! मुझ में !!! मुझ में ! ॥ ७ ॥

हैं रिश्ता[10]-ए-वहदत दर कसरत[11], हैं इल्लतो-सिहत[12] और
राहत[13]।
हर विद्या, इल्म, हुनर, हिकमत; हर ख़ूबी, दौलत और बरकत।
हर निमत, इज़्ज़त और लज़्ज़त; हर कशिश का मर्कज़[14],
हर ताक़त।

---

१ स्थान की गुंजाइश (जगह). २ बेशुमार, अथाह. ३ बुद्ध मत की पुस्तक. ४ यूरप के फ़िलासफ़रों के ये नाम हैं. ५ अमर स्थान. ६ प्रथम काल का दिन. ७ भूत, वर्तमान और भविष्य. ८ बदलते रहना, विकार. ९ समय का पलड़ा. १० एकता का धागा. ११ अनेकता, नानत्व. १२ दुःख सुख, वा रोगिता-निरोगिता. १३ आराम. १४ केन्द्र.

हर मतलब, कारण, कारज सब; क्यों, किस जा[1], कैसे,
क्योंकर, कब,

मुझ में ! मुझ में !! मुझ में !!! मुझ में ! ॥ ८ ॥

हूं आगे, पीछे, ऊपर, नीचे, ज़ाहर, बातिन[2], मैं ही मैं।
माशूक़[3] और आशिक़[4], शाइर[5], मज़मून, बुलबुल, गुलशन[6],
मैं ही मैं ॥ ९ ॥.

नोटः—यह कविता हिन्दी या उर्दू कविता के ढंग पर नहीं; यह अमरीका देश के व्हाल्ट व्हिट मैनियन ढंग पर बनी हुई है और उन दिनों में लिखि गई जब राम से अन्त में अपना नाम देना बंद हो गया था। जिन पाठकों को व्हाल्ट व्हिट मेनियन ढंग से परिचय न होवे Leaves of grass by Whalt Whitman ऐसे नाम की पुस्तक को देखें।

(संम्पादक)

(नोटः—यह कविता अंग्रेज़ी कविता Drizzle Drizzle के अनुवाद के रूप में है और उन्हीं दिनों लिखी गई जब अन्त में अपना नाम देने का स्वभाव राम से छूट गयाथा).

[५४]

ग़ज़ल ताल पश्तो

ठंडक भरी है दिल में, आनन्द बेह रहा है।
अमृत बरस रहा है, झिम ! झिम !! झिम !!! (टेक)
फैली सुबहे[7]-शादी, क्या चैन की घड़ी है।
सुख के छुटे फ़व्वारे, फ़रहत[8] चटक रही है ॥

---

१ स्थान. २ अन्दर. ३ मित्र, इष्ट, दयितजन. ४ आसक्त वा भक्त. ५ कवि. ६ बाग़. ७ आनन्द की मातः. ८ खुशी, अनन्द.

क्या नूर[1] की झड़ी है, झिम ! झिम !! झिम !!!

शबनम[2] के दल ने चाहा, पामाल[3] कर दे गुल[4] को।

सब फ़िकर मिल कर आये, कि निढ़ाल करदें दिलको ॥

आया सबा[5] का झोंका, वह सबाये[6] रोशनी का।

झड़ती है शबनमे ग़म, झिम ! झिम !! झिम !!!

डट कर खड़ा हूं ख़ौफ़ से खाली जहान में।

तसकीने[7]-दिल भरी है मेरे दिल में जान में ॥

सूंघें ज़मां[8], मकां[9], मेरे पाओं मिसले[10]-सग।

मैं कैसे आसकूं हूं क़ैदे-बियान[11] में ॥

ठंडक भरी है दिल में, आनन्द बेह रहा है

अमृत बरस रहा है, झिम ! झिम !! झिम !!!

---

१ प्रकाश. २ ओस. ३ अधीन करदें पाओं में रौंद दें. ४ फूल. ५ प्र
अर्थात् वह वायु जो प्रभात में चल रही हो अथवा वह पवन जो प्रातः काल
है. ६ प्रकाश रूपी वायु, यहां अभिप्राय सूर्य से है. ७ दिल में चैन, शान्ति आराम,
८ देश. ९ काल. १० फ़र्श के समान वर्णन. ११ वर्णन के बन्धन.

[५५]

गज़ल ताल कवाली

(१) जब उमड़ा दरया उल्फ़त[1] का, हर चार तरफ आबादी है।
हर रात नयी इक शादी है, हर रोज़ मुबारिकबादी है।
खुश[2] ख़ंदः है रंगीं गुल का, खुश शादी शादमुरादी है।
बन सूरज आप दरख़शां[3] है, खुद जंगल है, खुद वादी[4] है॥
नित राहत है, नित फ़रहत है, नित रंग नये आज़ादी है १॥टेक॥

---

(५५)

(१) जब प्रेम का समुद्र बहने लग पड़ा तो हर तरफ प्रेम की बस्ती नज़र आने लग पड़ी। अब सुन्दर पुष्प की तरह हसना और खिलना रहता है, नित्य चित्त की प्रसन्नता और आनन्द है। आप ही सूर्य बन कर चमक रहा है और आप ही जंगल बस्ती बन रहा है, नित्य आनन्द, शान्ति, और नित्य सर्व प्रकार की खुशी आज़ादी हो रही है।

---

१ प्रेम. २ अच्छा खिला हुवा ३ प्रकाशमान. ४ आबाद स्थान.

(२) हर रग रेशे में, हर मू[1] में, अमृत भर भर भरपूर हुआ।
सब कुलफ़त[2] दूरी दूर हुई, मन शादी[3] मर्ग से चूर हुआ।
हर बर्ग[4] बधाइयां[5] देता है, हर ज़र्रह[6] ज़र्रह तूर[7] हुआ।
जो है सो है अपना मज़हर[8], ख्वाह आबी[9] नारी[10] बादी[11] है।
क्या ठंडक है, क्या राहत[12] क्या शादी[13] है आज़ादी है ॥ २ ॥

---

(२) हर रग और नाड़ी में और रोम रोम में आनन्द रूपी अमृत भरा हुआ है। जुदाई के सब दुःख और कष्ट दूर हो गये और मन (अहंकार के) मरने (मौत) की खुशी से चूर हो गया है। अब प्रत्येक पत्ता बधाइयाँ (स्वस्ति) दे रहा है, और परमाणु मात्र भी ज्ञानाग्नि से अग्नि के पर्वत की तरह प्रकाशमान हुआ। अब जो है सो सब अपना ही झाँकी-स्थान या ज़ाहर करने का स्थान है। ख्वाह वह पानी की शकल है ख्वाह अग्नि की और ख्वाह हवा की सूरत है (यह तमाम मुझ अपने को ही ज़ाहिर करने वाली हैं)।

---

१ सिर का बाल. २ जुदाई का कष्ट दुःख. ३ आनन्द के अनन्त मरने से जो खुशी होती है. ४ प्रत्येक पत्ता. ५ स्वस्ति वाचन. ६ परमाणु. ७ अग्नि का पर्वत. ८ झाँकी का स्थान, ज़ाहर होनेका स्थान. ९ पानी से उत्पत्तिवाला. १० अग्नि से उत्पन्न हुआ. ११ वायु से उत्पत्ति वाला. १२ आराम. १३ प्रसन्नता, खुशी.

(३) रिम झिम, रिम झिम आँसू बरसें, यह अब्र[1] बहारें देता है।
क्या खूब मज़े की बारिश में वह लुत्फ़ वसल[2] का लेता है।
किशती मौजों में डूबे है, बदमस्त उसे कब खेता[3] है।
यह ग़र्क़ाबी[4] है जी[5] उठना, मत झिझको, उफ़ बरबादी है।
क्या ठंडक है, क्या राहत है, क्या शादी है आज़ादी है ॥३॥

---

(३) आनन्द की वर्षा के आँसू रिम झिम बरस रहे हैं, और यह आनन्द का बादल क्या अच्छी बहार दे रहा है। इस ज़ोर की वर्षा में वह (चित्त) क्या खूब अभेदता (एकता) का आनन्द ले रहा है। (शरीर रूपी) किशती तो आनन्द की लहरों में डूबने लग रही है मगर वह बच्चा (आनन्द में) उन्मत्त उसे कब चलता है? (शरीर का ख्याल नहीं करता) क्योंकि (देहाध्यास) यह डूबना वास्तव में जी उठना है, इस लिये ऐ प्यारों! इस मौत से मत झिझको (झिझकने में अपनी बरबादी है)। इस मृत्यु में तो क्या ठंडक है क्या आराम है और क्या ही आनन्द और क्या ही स्वतंत्रता है (कुछ वर्णन नहीं हो सकता)।

---

१ बादल, २ अभेदता, एकता, ३ चलाता है, ४ डूब जाना, ५ ज़िन्दा होना,

(४) मातम, रंजूरी[1], बीमारी, ग़लती, कमज़ोरी, नादारी[2]।
ठोकर ऊंचा नीचा, मिहनत जाती (है) उन पर जाँ वारी।
इन सब की मददों के बाइस[3], चशमा मस्ती का है जारी।
गुम शीर[4], कि शीरीं तूफां में, कोह[5] और तेशा फ़रहादी है।
क्या ठंडक है, क्या राहत है, क्या शादी क्या आज़ादी है ॥४॥

---

(४) रोना पीटना, शोक चिन्ता, बीमारी, ग़लती, कमज़ोरी, निर्धनता, नीच ऊँच, ठोकर अरु पुरुषार्थ, इन सब पर प्राण वारे जा रहे हैं और इन सब की सहायता से मस्ती का समुद्र बह रहा है। प्रिया शीरीनी के इश्क़ (आसक्ति) में फ़र्हाद का तेशा और पहाड़ अरु शीरीं लोप हो रहे हैं। क्या शान्ति है, क्या आराम है, क्या आनन्द और क्याही आज़ादी हो रही है।

---

१ रोना पीटना शोक चिन्ता. २ निर्धनता जिस समय पास कुछ न हो. ३ कारण. ४ मीठी नदी जो फ़रहाद अपनी प्रिया (शीरीं) के इश्क़ (आसक्ति में पहाड़ पर से तोड़ कर मैदानों में लाया था. ५ पर्वत.

(५) इस मरने में क्या लज़्ज़त है, जिस मुंह को चाट[1] लगे इसकी।
धूके है शाहंशाही पर, सब नेऽमत दौलत हो फीकी।
मै[2] चाहो ? दिल सिर दे फूंको, और आग जलावो भट्टी की।
क्या सस्ता बादा[3] विकता है, "लेलो" का शोर मुनादी है।
क्या ठंडक है, क्या राहत है, क्या शादी क्या आज़ादी है ॥५॥

---

(५) इस मरने में क्या ही आनन्द (लज़्ज़त) है, जिस मुंहको इस लज़्ज़त की चटक (स्वाद) लग गयी वह शाहंशाही पर थूकता है और सर्व धन दौलत (वैभव) फीका हो जाता है। अगर यह (आनन्द की) शराब चाहो, तो दिल और सिर को फूंक कर (इस शराब के वास्ते) उसकी भट्टी जलाओ। वाह ! (निजानन्द की) क्या सस्ती शराब (अपने सिर के इवज़) बिक रही है, और (कबीर की तरह) "ले लो" "ले लो" का शोर हो रहा। इस शराब से क्या शान्ति, आराम, आनन्द, और आज़ादी है।

---

१ चटक, स्वाद, लज़्ज़त. २ शराब. ३ आनन्द रूपी शराब.

(६) इल्लत[1] मालूल[2] में मत डूबो, सब कारण कार्य तुम ही हो।
तुम ही दफ़्तर से ख़ारिज हो, और लेते चारज तुम ही हो।
तुम ही मसरूफ़ बने बैठे, और होते हारिज[3] तुम ही हो।
तू दावर[4] है, तू वुकला[5] है, तू पापी तू फ़र्यादी है।
नित फ़रहत है, नित राहत है, नित रंग नयी आज़ादी है ॥६॥

---

(६) हेतु (कारण) और फल (कार्य) में मत डूबो, क्योंकि सब कारण कार्य तुम ही हो, और जो दफ़तर से ख़ारिज होता है अथवा जो नौकर होता है वह सब तुम आप हो। तुम ही सब काम में प्रवृत्त होते हो। तुम ही उस में विक्षेप डालने वाले होते हो। तुम ही न्यायकारी, तुम ही वकील और तुम ही पापी औ फ़रयादी होते हो। आहा! नित्य चैन है नित्य शान्ती है और नित्य राग रंग और आज़ादी है।

---

१ कारण. २ कार्य. ३ किसी काम में हरज करने वाले. ४ न्याय कारी, मुंसिफ़, जज. ५ वकील.

(७) दिन शब[1] का झगड़ा न देखा, गो सूरज का चिट्टा सिर है।
जब खुलता दीदये-रोशन है, हंगामये-ख़ाब[2] कहां फिरहै ?।
आनन्द सरूर[4] समुद्र है जिसका आग़ाज़[5], न आख़िर है।
सब राम पसारा दुन्या का, जादूगर की उस्तादी है।
नित फरहत है, नित राहत है, नित रंग नये आज़ादी है॥७॥

यमनोत्री

ग़ज़ल तिताल

इस शिखर पर माया की दाल नहीं गलती और न दुन्या की दाल ही गलती है अत्यन्त गरम २ धारा, ईश्वर कृत लाल २ पुष्पों की सुन्दर फुलवाड़ी आबशारों (झरनों) की बहार, चमकदार चाँदी को शरमाने वाले श्वेत दोपट्टे (झाग, फेन) और उन के नीचे आकाश की रंगत को लजाने वाला यमना रानी का गात (तन) बात बात में काशमीर को मात करते हैं आबशार (झरने) तो तरंगबेखुदी (निराभिमानता की लटक) में नृत्य कर रहे हैं यमुना रानी साज़ बजा रही है राम शाहंशाह गा रहा हैः—

(७) सूर्य यद्यपि आप सफेद है, मगर दिन रात का झगड़ा अर्थात् श्वेत काले का भेद उस में नहीं देखा जाता, क्योंकि दिन रात तो पृथ्वि के घुमने पर निर्भर हैं। ऐसे ही जब आँख खुलती है तो स्वप्न फिर बाकी नहीं रहता, बल्कि चारों ओर अनन्त और नित्य आनन्द का समुद्र उमड़ता दिखाई देता है। यह संसार सब राम का पसारा है और जादूगर (राम) की यह उस्तादी है और यूं तो नित्य चैन है, शान्ति है और नित्य राग रंग और नयी आज़ादी है।

१ रात. २ खान चाक्षु. ३ स्वप्न की दुन्या, स्वप्न का झगड़ा फिसाद. ४ आनन्द, खुशी. ५ आदि, शुरू.

[५६]

ग़ज़ल ताल तीन

हिप हिप हुर्रे। हिप हिप हुर्रे॥ (टेक)

(१) अब देखन के घर शादी[1] है, लो! राम का दर्शन पाया है।
पा[2] ओं नाचते आते हैं, हिप हिप[3] हुर्रे हिप हिप हुर्रे॥

(२) खुश खुर्रम[4] मिल मिल गाते हैं, हिप हिप हुर्रे हिप हिप हुर्रे।
है मंगल साज़ बजाते हैं, हिप हिप हुर्रे हिप हिप हुर्रे॥

(३) सब ख़्वाहिश मतलब हासिल हैं, सब ख़ूबों[5] से मैं वासिल[6] हूं।
क्यों हम से भेद छुपाते हैं, हिप हिप हुर्रे, हिप हिप हुर्रे॥

(४) हर इक का अन्तर आत्म हूं, मैं सब का आक़ा[7] साहिब हूं।
मुझ पाये दुःखड़े जाते हैं, हिप हिप हुर्रे हिप हिप हुर्रे॥

(५) सब आँखों में मैं देखूं हूं, सब कानों में मैं सुनता हूं।
दिल बरकत मुझ से पाते हैं, हिप हिप हुर्रे, हिप हिप हुर्रे॥

(६) गह[8] इश्वा[9] सीमीं बर[10] का हूं, गह नारा[11] शेरबबर[12] का हूं।
हम क्या क्या स्वांग बनाते हैं, हिप हिप हुर्रे हिप हिप हुर्रे॥

(७) मैं कृष्ण बना, मैं कंस बना, मैं राम बना, मैं रावण था।
हां वेद अब क़समें खाते हैं, हिप हिप हुर्रे, हिप हिप हुर्रे॥

(८) मैं अन्तर्यामी साकिन[13] हूं, हर पुतली नाच नचाता हूं।
हम सूत्रतार[14] हिलाते हैं, हिप हिप हुर्रे, हिप हिप हुर्रे॥

---

१ खुशी. २ पाओं से नाचते आते हैं. ३ अंग्रेज़ी भाषा में अति प्रसन्नता का बोधक यह शब्द है. ४ आनन्द, मस्त हो कर. ५ सुन्दर लोग. ६ अभेद, मिला हुआ. ७ मालिक. ८ कभी. ९ नाज़, नखरा. १० चाँदी जैसी सूरत वाली प्यारी. ११ गर्ज़ १२ बबर शेर (सिंह). १३ स्थिर. १४ सूत्रधारी की तरह पुतली की तार हिलाते हैं.

(९) सब ऋषियों के आयीना[1] दिल में, मेरा नूर[2] दरखशां[3] था।
मुझ ही से शाइर[4] लाते हैं, हिप हिप हुर्रे, हिप हिप हुर्रे॥
(१०) मैं ख़ालिक़[5], मालिक दाता हूं, चशमक[6] से दहर[7] बनाता हूं।
क्या नक़शे रंग जमाते हैं, हिप हिप हुर्रे, हिप हिप हुर्रे॥
(११) इक कुन[8] से दुन्या पैदा कर, इस मन्दिर में खुद रहता हूं।
हम तनहा शैहर बसाते हैं, हिप हिप हुर्रे, हिप हिप हुर्रे॥
(१२) वह मिसरी हूं जिस के बाइस[9] दुन्या का अशरत[10] शीरीं[11] है।
गुल[12] मुझ से रंग सजाते हैं, हिप हिप हुर्रे, हिप हिप हुर्रे॥
(१३) मसजूद[13] हूं, क़िबला[14], काबा हूं, माबूद[15] अज़ा[16] नाकूस[17] का हूं।
सब मुझ को कूक बुलाते हैं, हिप हिप हुर्रे, हिप हिप हुर्रे॥
(१४) कुल आलम[18] मेरा साया है, हर आन बदलता आया है।
ज़िल[19] क़ामत[20] गिर्द घुमाते हैं, हिप हिप हुर्रे, हिप हिप हुर्रे॥
(१५) यह जगत हमारी किरणें हैं फैलीं हर सू[21] मुझ मर्कज़[22] से।
शाँ बूक़लमूं[23] दिखलाते हैं, हिप हिप हुर्रे, हिप हिप हुर्रे॥
(१६) मैं हस्ती[24] सब अशया[25] की हूं, मैं जान मलायक[26] कुल की हूं।
मुझ बिन बेबूद[27] कहाते हैं, हिप हिप हुर्रे, हिप हिप हुर्रे॥

---

१ अन्तःकरण रूपी शीशा. २ प्रकाश. ३ चमकता था. ४ कवि (अर्थात् मेरे आत्म स्वरूप से यह सब कवितादि निकलती है). ५ सृष्टि के रचने वाला. ६ आँखकी झपक में. ७ युग, समय. ८ आज्ञा हुक्म या संकेत. ९ सबब, कारण. १० विषय आनन्द, विषयभोग पदारथ. ११ मीठी. १२ पुष्प फूल. १३ उपास्य, पूजा कीया गया. १४ जिसकी तर्फ मुंह करके ईश्वर पूजा [ध्यान] की जाती है. १५ पूजनीय. १६ भांग. १७ शंख. १८ सब संसार. १९ साया, प्रतिबिम्ब. २० बिम्ब. २१ तरफ़. २२ केन्द्र. २३ नाना प्रकार के. २४ अस्ति, जान सब की. २५ वस्तु. २६ फरिश्तों (देवताओं) की. २७ न होना, असत, अविद्यमान.

(१७) वेजानों में हम सोते हैं, हैवान[1] में चलते फिरते हैं।
इन्सान में नींद जगाते हैं. हिप हिप हुर्रे, हिप हिप हुर्रे॥

(१८) संसार तजल्ली[2] है मेरी, सब अन्दर बाहर मैं ही मैं हूं।
हम क्या शोले[3] भड़काते हैं. हिप हिप हुर्रे, हिप हिप हुर्रे॥

(१९) जादूगर हूं, जादू हूं खुद. और आप तमाशा[4]-बीं मैं हूं।
हम जादू खेल रचाते हैं, हिप हिप हुर्रे, हिप हिप हुर्रे॥

(२०) है मस्त पड़ा अैहमां में अपनी. कुछ भी गैर अज़[5] राम नहीं।
सब कल्पित धूम मचाते हैं, हिप हिप हुर्रे, हिप हिप हुर्रे॥

नोट—यह कविता राम महराज ने उस वक्त लिखी गयी जिन दिनों में वह नितान्त अकेले टिहरी नगर से छै मील की दूरी पर, गोदी सिराईं ग्राम के समीप एक गुहा (गुफा) वसरोगी में कुछ दिन निराहार रहे थे, मस्ती से बेहोश हुए हुन्दा से बेखबर ऐक दो रात्री गंगा तट पर ही पड़े काटी थी और नारायणने उन को पा कर जगाया था.

[५७]

राग ग़ज़ल सुमाच ताल दादरा

(१) चलना सबा[6] का ठुम ठुमक, लाता प्यामे[7]-यार है।
टुक आँख कब लगने मिली, तीरे-निगह[8] तय्यार है॥

(१) प्रातःकाल की वायू का ठुमक ठुमक चलना अपने प्यारे यार (स्वरूप) का संदेशा ला रहा है। ज़रा सी आँख भी लगने नहीं मिलती, क्योंकि जब ज़रा लग जाती है (सोने लगता हूं) तो झट उस प्यारे (स्वरूप) की दृष्टि (प्रकाश) का तीर लगना आरम्भ होता है जिससे मैं सोने न पाऊं अर्थात् उसे भूल नजाऊं।

१ पशुओं. २ तेज, चमक. ३ अग्नि की लपटें. ४ तमाशा देखने वाला ५ राम से अतिरिक्त. ६ प्रातःकाल की वायु. ७ ईश्वर (प्यारे) का सन्देशा. ८ दृष्टि का तीर.

(२) होशो-ख़िरद[1] से इत्तफ़ाक़न, आँख गर दो चार हैं।
बस यार की फिर छेड़-ख़ानी का गर्म बाज़ार है॥

(३) मालूम होता है हमें, मतलब का हम से प्यार है।
सख़्ती से क्यों छीने है दिल, क्या यूं हमें इन्कार है?॥

(४) लिखने की नै[2], पढ़ने की फ़ुरसत, कामकी, नै काज की।
हम को निकम्मा कर दिया, वह आप तो बेकार हैं।

---

(२) अगर अकस्मात अक़ल और होश में आने लगता हूं या मन बुद्धि का संग करने लगता हूं, तो उसी समय प्यारा छेड़खानी करने लग पड़ता है, जिस से फिर बेहोश और आत्मानन्द से पागल हो जाऊं, अर्थात् मैं अब दुन्या का न रहूं, सिर्फ़ प्यारे (स्वस्वरूप) का ही हो जाऊं। (इस छेड़खानी से)।

(३) ऐसा मालूम होता है कि प्यारे का हम से एक मतलब (उद्देश) के कारण प्यार है और वह उद्देश हमारा दिल लेना है, भला सख़्ती से क्यों दिल छीनता है, क्या वैसे हमको इनकार है? (अर्थात् जब पैहिले से ही हम प्यारे के हवाले दिल करने को त्यार बैठे हैं तो अब सख़्ती से क्यों छीनना चाहता है?)।

(४) दिल को प्यारे के अर्पण करने से न लिखने की फ़ुरसत रही, और न किसी काम काज की आप तो वह बेकार (अकर्ता) था ही अब हमको भी वैसा ही बेकार कर दिया है।

---

१ होश और अक़्ल. २ नहीं.

(५) पैहरा मुहब्बत का जो आये, हमबग़ल होता है वह।
गुस्सा तबीयत का निकालें रूबरू दिलदार है॥
(६) सोने पै हाज़िर ख़्वाब में, जागे पै ख़ाको[1]-आब मे।
हँसने में हँस मिलता है, मिल रोता है लल् यार है॥
(७) गह बर्क़-वश[2] ख़ंदाँ[3] बना, गह अब्रेतर[4] गिरयाँ[5] बना।
हर सूरतो हर रंग में पैदा बुते-अय्यार[6] है॥
(८) दौलत ग़नीमत जान दर्दे-इश्क़ की, मत खो उसे।
मालो-मता[7], घर-बार, ज़र[8], सिदक़े मुबारिक नार[9] है॥

---

(५) जब प्रेम का समय आता है तो वह (प्यारा) झट हमबग़ल (संग या मूर्तिमान्) हो लेता है, ऐसी दशा में हम किस पर गुस्सा निकालें, क्योंकि सामने वह स्वयं खड़ा है।

(६) सोने में वह हाज़िर है, जाग्रत में भी साथ है, पृथ्वी, जल (अर्थात् जल थल) पर वह मौजूद है, हँसते समय वह साथ मिल कर हँसता है और रोते समय वह (अभेद हुआ) साथ रोता है।

(७) कभी बिजली की तरह चमकता है और हँसता है, और कभी बादल बरस कर रोता है, मगर हमें तो प्रत्येक रूप और रंग में वही प्रकट होता दिखाई देता है।

(८) ऐ प्यारे जिज्ञासु! इश्क़ (प्रेम) के धनको उत्तम जान, इसको मत खो, बल्कि इस प्रेम की आग पर सारे घर बार, धन दौलत को वार दे।

---

१ पृथ्वि और जल. २ कभी बिजली की मानिन्द. ३ हंसता हुआ. ४ बादल की तरह तरबतर. ५ रोते हुये. ६ तसवीर जिस से यार का अन्दाज़ा लगाया जावे, अथवा अपने प्यारे का तराज़ू. ७ माल अब असबाब. ८ धन. ९ मुबारिक आग इश्क़ की है.

(९) मंज़ूर नालायक़ को होता है, इलाजे-दर्दे-इशक़[1] ।
जब इशक़ ही माशूक़ हो, क्या सिहत में बीमार है ॥
(१०) क्या इन्तज़ार-ओ-क्या मुसीबत, क्या बला क्या ख़ारे-दश्त[2] ।
शोला[3] मुबारिक जब भड़क उट्टा, तो सब गुलनार[4] है ॥
(११) दौलत नहीं, ताक़त नहीं, तालीम नै[5] तकरीम[6] नै ।
शाहे[7]-ग़नी को तो फ़क़त, इर्फ़ाने-हक़[8] दर्कार है ॥
(१२) उमरों की उम्मीदें उड़ा, छोटी बड़ी सब ख्वाहिशें ।
दीदार[9] का लीजिये मज़ा, जब उड़ गयी दीवार है ॥

---

(९) इस प्रेम के दर्द का इलाज करना तो अज्ञानी पुरुष को मंज़ूर होता है, क्योंकि जब प्रेम ही माशूक़ (इष्ट देव) हो तो क्या ऐसी निरोगता में भी बीमार है ? ।

(१०) इन्तज़ार, मुसीबत, बला और जंगल का काँटा यह सब उसी समय जल कर फूल (आग का पुष्प.) हो गये, जिस समय ज्ञानाग्नि अन्दर प्रज्वलित हुई ।

(११) दौलत, बल, विद्या और इज्ज़त तो नहीं चाहिये, उस (अनन्य भक्त वा ब्रह्मवित्) बेपरवाह बादशाह को तो केवल आत्मज्ञान (ब्रह्म विद्या) की ही आवश्यकता है ।

(१२) कई बरसों की आशा (स्वरूप के अनुभव में जो पर्दे वा ओट का काम कर रही है) इन सब छोटी बड़ी आशाओं को (आत्मज्ञान से) जला दो, और जब इस तरह से इच्छाओं की दीवार उड़ जावे तो फिर प्यारे (स्वस्वरूप) के दर्शन का आनन्द लो ।

---

१ इश्क़ की दर्द (पीड़ा) का इलाज (औषधि). २ जंगल के कांटे. ३ प्रेमाग्नि वा ज्ञानाग्नि की शुभ ज्वाला. ४ अनार का फूल, यहां अग्नि के पुष्प से भी मुराद है. ५ नहीं. ६ इज्ज़, बज़ुर्गी. ७ अमीर, या सख़ीदिल बादशाह. ८ आत्म ज्ञान. ९ दर्शन.

(१३) मंसूर से पूछी किसी ने, कूचये-जानाँ[1] की राह।
खुब साफ़ दिल में राह बतलाती ज़ुबाने-दार[2] है॥
(१४) इस जिस्म से जाँ कूद कर, गंगाये-वहदत[3] में पड़ी।
कर लें महोत्सा जान्वर, लः वह पड़ा मुरदार है॥
(१५) तशरीफ़ लाता है जुनूं, चश्मों-सिरो-दिल फ़र्शे-राह।
पैहलू[4] में मत रखना ख़िरद[5] को, रांड यह बदकार है॥

---

(१३) मंसूर एक मस्त ब्रह्मवेत्ता का नाम है, जब वह सूली पर चढ़ाया गया तो उस समय एक पुरुषने उस से (प्यारे की गली) स्वस्वरूप के अनुभव करने का रास्ता पूछा॥ मंसूर तो चुप रहा क्योंकि वह सूली पर उस समय था, मगर सूली की नोक अथवा सिरे ने (जिस को ज़ुबाने दार कहते हैं) मंसूर के दिल में साफ़ छुवकर बतला दिया, कि यह रास्ता है अर्थात् प्यारे के अनुभव का (सिर्फ़ दिलके भीतर जाना ही) रास्ता है।
(१४) इस शरीर से शरीरक प्राण कूदकर तो अद्वैत की गंगा में पड़ गये हैं अब इस मृतक शरीर (मुर्दे) को (प्रारब्ध भोग रूपी) पक्षी आयें और महोत्सव कर लें (क्योंकि साधू के मरने के पश्चात भण्डारा (भोजन) होता है और मस्त पुरुष अपने शरीर को ही सर्व के अर्पण करना भण्डारा समझता है, इस वास्ते राम जब मस्त हुए तो शरीर को मृतक देखकर भण्डारे के वास्ते पक्षियों को बुलाते हैं।
(१५) जब इस निजानन्द के कारण पागलपन आने लगे तो उस समय अपने पास संसार की अक़ल न रक्खो, बलकि अपने दिल और आँखों के द्वारा उस बेबुद्धि को आने दो।

---

१ ईश्वर के घर का रास्ता. २ सूली की नोक से अभिप्राय है. ३ एकता की गंगा अद्वैत रूपी समुद्र. ४ अपने समीप ५ बुद्धि.

(१६) पल्ला छुटा इस जिस्म से, सिर से टली अपने बला।
वैल्कम ! ऐ तेगे ख़ूंचकां[1], क्या मर्ग[2] लज़्ज़तदार है॥
(१७) यह जिस्मो-जाँ नौकर को दे, ठेका सदा का भर दिया।
तू जान तेरा काम रे, क्या हम को इस से कार है॥
(१८) ख़ुश हो के करता काम है, नौकर मेरा चाकर मेरा।
हो राम बैठा बादशाह, हुश्यार ख़िदमतगार है॥
(१९) सोता नहीं यह रात दिन, क्या उड़ गयी दीदों[3] से नींद।
ग़फ़लत नहीं दम भर इसे, यह हर घड़ी बेदार[4] है॥

---

(१६) जब राम अति मस्त हुए तो बोल उट्ठे "इस शरीर से अब सम्बन्ध छूट गया है इस लिये इस की ज़िम्मेवारी की सिर से बला टल गयी। अब तो राम ख़ून पीने वाली तलवार (मुसीबत) को भी स्वागत करता है क्योंकि रामको यह मौत बड़ा स्वाद देती (या स्वादिष्ट) है।

(१७) यह देह प्राण तो अपने नौकर (ईश्वर) के हवाले करके उस से नित्य का ठेका लेलिया है, अब रे प्यारे (स्वस्वरूप)! तू जान तेरा काम, हम को इस (शरीर) से क्या मतलब है?

(१८) नौकर बड़ा ख़ुश हो के काम करता है, राम अब बादशाह हो बैठा है, क्योंकि ख़िदमतगार (सेवक) बड़ा हुश्यार है॥

(१९) नौकर ऐसा अच्छा है कि रात दिन ज़रा भी सोता नहीं, मानो उसकी आँखों में नीन्द ही नहीं, और दम भर भी इस को सुस्ती नहीं, हर घड़ी जगता ही रहता है।

---

१ ख़ून चलवाने वाली अर्थात ख़ून करने वाली तलवार. २ मृत्यु. ३ आँखें. ४ जागा हुआ.

(२०) नौकर मेरा यह कौन है ? आक़ा[1] हूं इस का कौन राम ?
ख़ादिम[2] हूं मैं या बादशाह ? यह क्या अजब इसरार[3] है ।

(२१) वाहिद[4]-मुजर्रद[5], लाशरीको[6], ग़ैर सानी[7], बे बदल ।
आक़ा कहां ख़ादिम कहां ? यह क्या लग़व गुफ़तार है ॥

(२२) तन्हास्तम[8], तन्हास्तम, दर वैहरो-वर[9] यकतास्तम[10] ।
नुतक़ो[11]-ज़ुबां का राम तक आ पहुँचना दुशवार[12] है ॥

(२३) ऐ बादशाहाने जहां ! ऐ अञ्जमे[13]-हफ़त आसमान ! ।
तुम सब पै हूं मैं हुक्मरान, सब से बड़ी सरकार है ॥

---

(२०) ऐ राम ! मेरा नौकर कौन है ? और मालिक उसका कौन है ? मैं क्या मालिक हूं या नौकर हूं ? यह क्या आश्चर्य भेद है (कुछ नहीं कहा जासकता है)

(२१) मैं तो अकेला अद्वैत नित्य असंग और निर्विकार हूं, मालिक और नौकर कहां ? यह क्या ग़लत बोल चाल है ।

(२२) अकेला हूं, मैं अकेला एक हूं, पृथ्वि जल पर मैंही अकेला हूं, वाणी और वाक इन्द्रिय का मुझ तक पहुंचना कठिन है (अर्थात वाणी इत्यादि मुझे वर्णन नहीं कर सकती) है ।

(२३) ऐ दुन्या के बादशाहो ! और ऐ सातों आसमानों के तारो ! मैं तुम सब पै राज्य करता हूं, मेरा राज्य सब से बड़ा है ।

---

१ मालिक. २ नौकर, सेवक. ३ भेद, गुप्त बात. ४ एकमेवाद्वितीयम. ५ संग रहित या असंग. ६ अपूर्व. ७ अद्वितीय और निर्विकार. ८ मैं अकेला हूं. ९ पृथ्वि समुद्र अर्थात् जल थल पर. १० अकेला हूं. ११ वाक वाणी, बात, और बोली. १२ कठिन, मुशकिल. १३ ऐ सातों आकाशों के तारो !

(२४) जादू निगाहे[1] यार हूं, नशा लबे[2]-मै-गूं हूं मैं ॥
आबे-ह्याते-रुख़ हूं मैं, अबरू मेरी तल्वार है ।

(२५) यह काकुले[3]-ज़ुलमाते- माया, पेच, पेचां[4] है, वले[5]
सीधे को जल्वा[6]-ए-राम है, उलटे को डसता मार[7] है ॥

---

(२४) मैं अपने प्यारे (स्वरूप) की जादूभरी दृष्टि हूं, निजानन्द भरी मस्तीकी शराब का नशा मैं हूं, अमृत स्वरूप मैंहूं, भवें (माया) मेरी तलवार हैं ।

(२५) यह मेरी माया की काली जुल्फ़ें (अविद्या के पदार्थ) पेचदार (आकर्षक) तो हैं मगर जो मुझ को (मेरे असली स्वरूप की ओर से) सीधा आनकर देखता है उस को तो वास्तविक राम के दर्शन हो जाते हैं, और जो उलट (पीछे को) होकर (मेरी माया रूपी काली जुल्फ़ों को) देखता है उसको ("राम" शब्द का उलट "मार") अविद्याका साँप काट डालता है ।

---

१ प्यारे की जादू भरी दृष्टि २ आनन्द रूपी शराब की क़िस्म वाले नशे को पीने वाला अमृत की ओर जाने वाला मार्ग या अमृत स्वरूप. ३ (माया रूपी) काली घंघोर ज़ुल्फ़ें. ४ पेचदार. ५ लेकिन. ६ राम का दर्शन. ७ साँप (सर्प).

[५८]

राग भैरवी ताल कैहरवा

(१) बिछुड़ती दुलहन[1] वतन[2] से है जब, खड़े हैं रोम और गला रुके है।
कि फिर न आने की है कोई ढब[3], खड़े हैं रोम और गला रुके है॥ १॥

---

[५८]

(१) जब लड़की पति के साथ विवाही जाकर अपने माता पिता के घर से अलग होने लगती है, तो लड़की और माता पिता के रोमांच हो जाते हैं और अश्रुयं हुए गला रुक जाता है। लड़की के घर वापिस फिर आने की कोई आशा मालूम नहीं होती, इसवास्ते सर्वदा की जुदाई होते देख कर माता पिता और लड़की के रोंगटे खड़े हो जाते हैं और गला रुक जाता है।

---

१ विवाहित लड़की, २ घर, ३ उपाय, रस्ता

(२) यह दीनों[1]-दुन्या तुम्हें मुबारिक, हमारा दुलहा[2] हमें
सलामत।
पै[3] याद रखना, यह आख़िरी छब, खड़े हैं रोम और गला
रुके है ॥ २ ॥

---

(२) (लड़की फिर मन में यह कहने लगती है) कि हे माता पिताजी! यह घर और आप की दुन्या तो आपको मुबारिक हो और हमारा पति हमको मगर यह (जुदा होते समय की) आख़री छय (अवस्था) ज़रूर याद रखनी, "कि रोंगटे खड़े हो रहे हैं और गला रुक रहा है" ॥ ऐसे ही जब पुरुष की वृत्ति रूपी लड़की (अपने) पति (स्वस्वरूप) के साथ विवाही जाती: अर्थात आत्मा से तदाकार होती है तो उसके मात पिता (अहं-कार और बुद्धि) के रोंगटे खड़े हो जाते हैं, और गला मारे से वसीके रुकता जाता है, और उस वृत्ति को अब वापिस आते न देखकर कर सर्व इंद्रियों में रोमांच हो जाता है, उस समय वृत्ति भी अपने संबन्धीयों से यह कहती मालूम देती है, कि ऐ अहंकार रूपी पिता! और बुद्धि रूपी माता! यह दुन्या अब तुम्हें मुबारिक हो और हमको हमारा दुल्हा (स्वस्वरूप)।

---

१ धर्म और संसार अर्थात् लोक परलोक. २ विवाहित लड़का. पति. ३ मगर.

(३) है मौत दुन्या में बस ग़नीमत[1], ख़रीदो राहत[2] को मौत के भाओ।
न करना चूं तक, यही है मज़हब[3], खड़े हैं रोम और गला रुके है॥ ३॥

(४) जिसे हो समझे कि जाग्रत है, यह ख़्वाबे-ग़फ़लत[4] है सख़्त, ऐ जाँ!।
कलोरोफ़ारम हैं सब मतालब[5], खड़े हैं रोम और गला रुके है॥ ४॥

---

(३) (अहंकार की) यह मौत दुन्या में अति उत्तम है, और इस मौत के दुन्या के सब आरामों के भाव खरीदलो, इस में चूं चरा (क्यों, कैसे) न करना ही धर्म है। यद्यपि इस (मौत) को ख़रीदते समय रोंगटे खड़े हो जाते हैं और गला रुक जाता है।

(४) ऐ प्यारे! जिसे आप जाग्रत समझ रहे हो वह तो घोर स्वप्न है, क्योंकि यह सब विषय के पदार्थ तो कलोरोफ़ारम दवाई की तरह हैं जिस को सूंघने (अर्थात भोगने) से सब रोम खड़े हो जाते हैं, और गला रुक जाता है।

---

१ उत्तम. २ आराम. ३ धर्म. ४ सुषुप्ति अवस्था है. ५ इच्छायें, प्रयोजन, उद्देश, मुरादें, मतलब.

(५) ठगों को कपड़े उतार देदो, लुटा दो अस्बाबो-मालोज़र सब।
खुशी से गर्दन पे तेग़[1] धर तब, खड़े हैं रोम और गला रुके है॥ ५॥

(६) जो आर्ज़ू को हैं दिल में रखते, हैं बोसा[2] दीवाना सग[3] को देते।
यह फूटी क़िस्मत को देख जब कब, खड़े हैं रोम और गला रुके है॥ ६॥

(७) कहा जो उसने[4] उड़ा दो टुकड़े, जिगर के टुकड़ों के प्यारे अर्जुन!।
यह सुन के नादाँ के खुश्क हैं लब, खड़े हैं रोम और गला रुके है॥ ७॥

---

(५) ठगों को कपड़े उतार कर देदो और माल अस्बाब सब लुटा दो, और (अहंकारकी) गर्दन पर खुशी से तल्वार रखदो, एवाह तब रोम खड़े हों और गला रुक जावे (मगर जब तक आनन्द से अपने आप अहंकार को नहीं मारोगे तब तक किसी प्रकार का भला आप का नहीं होगा।

(६) जो इच्छा मात्र को दिल में रखते हैं वह पागल कुत्ते को चुम्मा (बोसा) देते हैं, ऐसी फूटी प्रारब्ध को देख कर रोमांच हो जाते हैं और गला रुक जाता है।

(७) जब उस (कृष्ण) ने अर्जुन को कहा, कि सर्व संबन्धियों को टुकड़े २ कर दो, यह सुन कर उस अज्ञानी (अर्जुन) के खुश्क होंट हो जाते हैं, और रोमांच होते हैं, अरु गला रुकता है।

---

१ तल्वार. २ चूमना. ३ पगला कुत्ता. ४ यहाँ कृष्ण से अभिप्राय है.

(८) लहू का दरया जो चीरते हैं, हैं तख़्त पाते वोही हक़ीक़ी[1]।
तऽल्लुक़ों[2] को जला भी दो सब, खड़े हैं रोम और गला रुके है ॥८॥

(९) है रात काली घटा भियानक, ग़ज़ब दरिन्दे[3] हैं, वाये जंगल।
अकेला रोता है तिफ़्ल[4] या रब, ! खड़े हैं रोम और गला रुके है ॥ ९ ॥

(१०) गुलों[5] के बिस्तर पे ख़्वाब ऐसा, कि दिल में दीदों[6] में ख़ार[7] भर दे।
है सीनाः[8] क्यों हाथ से गया दब, खड़े हैं रोम और गला रुके है ॥ १० ॥

---

(८) (फिर कृष्ण जी कहते हैं कि ऐ प्यारे अर्जुन !) जो पुरुष लहू का दरया (अर्थात् संबधीयों को) चीरते हैं (मारते हैं) वह ही (स्वराज्य) असली तख़्त पाते हैं, इसलिये ऐ प्यारे ! सर्व संसारिक संबन्धों को जला भी दो, पर यह सुन कर उस अर्जुन के रोमांच होते हैं, और गला रुकता जाता है।

(१०) (ऐसा स्वप्न आ रहा है कि) रात काली है, भङ्गो घटा आ रही है, क्रूर वा रुधिर के प्यासे पशु (शेर इत्यादि) हैं और बड़ा भारी जंगल है, उस वन में लड़का अकेला रोता है रोमाञ्च हो रहे हैं, गला रुक रहा है। मगर पुष्पों के बिस्तर पर ऐसा भयानक ख्वाब आ रहा है कि दिलमें और आँखो में काँटे भर दे, परन्तु ऐ प्यारे! हाथ से छाती क्यों दब गयी ? जिस कारण ऐसा भयवीत स्वप्न आ रहा है, और रोमाञ्च होते जाते हैं तथा गला रुके जाता है।

---

१ वास्तव में या असली स्वराज्य. २ संबन्धों को. ३ पशू. ४ बच्चा. ५ फूलों के. ६ आंखों में. ७ कांटे. ८ छाती.

(११) न बाक़ी छोड़ेंगे इल्म कोई, थे इस इरादे से जम के बैठे।
है पिछला लिक्खा पढ़ा भी ग़ायब[1], खड़े हैं रोम और गला रुके है॥ ११॥

(१२) है बैठा पट्ठों में कच्चा पारा, रही न हिलने की ताबो-ताक़त[2]
न असर करता है नेशे-अक़रब[3], खड़े हैं रोम और गला रुके हैं॥ १२॥

(१३) पीये निगाहों के जाम[4] रज कर, न सिर की सुद्ध बुद्ध रही न तन की।
न दिन ही सूझे है, नै[5] तो अब शब[6], खड़े हैं रोम और गला रुके है॥ १३॥

---

(११) इस विचार (संकल्प) से (गंगा किनारे) जम कर बैठे थे कि अब बाक़ी कोई विद्या नहीं छोड़ेंगे, मगर अब तो पिछला लिखा पढ़ा भी गुम हो गया है; रोंगटे खड़े हो रहे हैं और गला रुक रहा है।

(१२) पट्ठों में ऐसा कच्चा पारा बैठ गया है (मस्ती का इतना जोश चढ़ गया) कि हिलने की भी ताक़त नहीं रही, और न अब बिच्छू का डंक ही कुछ असर करता है, बल्कि ऐसी हालत हो रही है "कि रोंगटे खड़े हो रहे हैं, और गला रुका जाता है"।

(१३) प्यारे की दृष्टि (दर्शन) रूपी अनुभव के प्याले ऐसे रज कर पिये हैं कि अपने सिर और तन की भी सुद्धिबुद्धि नहीं रही। अब न तो दिन सूझता है और न रात ही नज़र आवे है, बलकि रोमांच हो रहे हैं, और गला रुका जाता है।

---

१ भूल गया. २ हिम्मत और बल. ३ बिछू का डंक. ४ प्याले. ५ नहीं ६ रात.

(१४) हवासे ख़मसा:[1] के बन्द थे दर[2], किधर से क़ाबिज़ हुआ है आकर।
वला का नश्शा, सितम[3], तऽज्जुब खड़े हैं रोम और गला रुके है ॥ १४ ॥

(१५) यह कैसी आंधी है जोशे मस्ती की, कैसा तूफ़ाँ सरूर[4] का है!।
रही ज़मी मह[5] न मेहरो-कौकव[6], खड़े हैं रोम और गला रुके है ॥ १५ ॥

(१६) थीं मन के मन्दिर में रक़्स[7] करतीं, तरह तरह की सी ख़्वाहिशें मिल।
चिराग़े-ख़ाना[8] से जल गया सब, खड़े हैं रोम और गला रुके है ॥ १६ ॥

---

(१४) पाँचो ज्ञान-इन्द्रियों के दरवाज़े तो बन्द थे, मगर मालूम नहीं कि किस तरफ़ से यह (मस्ती का जोश) अन्दर आकर क़ाबिज़ हो गया है जो वला का नशा है और सितम ढा रहा है, जिससे रोमांच खड़े हो रहे हैं, और गला रुके जा रहा है।

(१५) यह ज्ञान की मस्ती की कैसी घटा आ रही है और निजानन्द का जोश कैसे बढ़ रहा है कि पृथ्वी, चाँद, सूर्य, तारे की भी सुद्धि बुद्धि नहीं रही, अर्थात् द्वैत बिलकुल भासमान न रही, बलकि रोंगटे खड़े हैं और गला रुका हुआ है।

(१६) मन रूपी मन्दिर में जो नाना प्रकार की इच्छायें नाच रही थीं, वह घर के दीपक से (आत्मानुभव से) सब जल गयीं, अर्थात् अपने अन्दर ज्ञान अग्नि ऐसे प्रज्वलित हुई कि सर्व प्रकार के संकल्प जल गये और रोंगटे खड़े हो गये और गला रुक गया।

---

१ पाँचों ज्ञान इन्द्रियों के. २ दरवाज़े. ३ बड़े ग़ज़बका आश्चर्य. ४ आनन्द ५ चाँद. ६ सूर्य और तारे. ७ नाच करती. ८ घर का दीपक स्वयमात्मा के प्रकाश.

(१७) है चौड़ चौपट यह खेल दुन्या, लपेट गंगा में इस को फैंका।
मरा है फ़ीला[1] उड़ा है अशहव[2], खड़े हैं रोम और गला रुके है॥ १७॥

(१८) पड़ा है छाती पे धर के छाती, कहां की दुई[3] कहां की वहदत[4]।
है किस को ताक़त बियान की अब, खड़े हैं रोम और गला रुके है॥ १८॥

(१९) यह जिस्मे-फ़र्ज़ी[5] की मौत का अब, मज़ा समेटे से नहीं समिटता।
उठाना दुभर[6] है वेहमे-क़ालिब[7], खड़े हैं रोम और गला रुके है॥ १९॥

---

(१७) यह दुन्या शतरञ्ज के खेल की तरह है, इस सारी को लपेट कर अब गंगा में फेंक दिया, वह फीला मरा और वह घोड़ा मरा, यह देख कर रोम खड़े हैं अरु गला रुके है।

(१८) अब प्यारा छाती पर छाती धर कर पड़ा है, अब तो कहाँ की द्वैत और कहाँ की एकता है। किस को बताने की अब ताक़त है, केवल रोंगटे खड़े हैं और गला रुके है।

(१९) (वह जो आनन्द आ रहा है यह क्या है?) यह संकल्पमयी (भासमान) शरीर की मौत का आनन्द है जो समेटे से भी नहीं सिमिटता है। अब तो (इस आनन्द के भड़कने से) यह पंचभौत्तिक शरीर उठाना भी कठिन हो गया है, क्योंकि आनन्द के मारे रोम खड़े हैं और गला रुक रहा है।

---

१ हाथी. २ घोड़ा. ३ द्वैत. ४ एकता. ५ कल्पित शरीर. ६ कठिन, मुश्किल. ७ भ्रम का शरीर.

(२०) कलेजे ठंडक है, जीं[1] में राहत[2], भरा है शादी[3] से सीनाये राम[4]।
हैं नैन[5] अमृत से पुर लवा लव, खड़े हैं रोम और गला रुके है॥ २०॥

[५६]

गज़ल भैरवी ताल पश्तो

कैसे रंग लागे खूब भाग जागे, हरी गयी[6] सब भूक और नंग[7] मेरी।
चूड़े साँच स्वरूप[8] के चढ़े हम को, टूट पड़ी जब कांच की वँग[9] मेरी॥
तारों संग[10] आकाश में लशकती[11] है, बिन डोर अब उड़ी पतंग[12] मेरी।
झड़ी नूर[13] की बरसने लगी ज़ोरों[14], चंद सूरमें एक तरंग मेरी॥

---

(२०) कलेजे (हृदय) में शान्ति है और दिल में अब चैन है, खुशी से राम का हृदय भरा हुआ है, और नैन (आनन्द के) अमृत से लबालब भरे हुये हैं अर्थात् आनन्द के मारे आँसू टपक रहे हैं, और रोम खड़े हैं तथा गला रुक रहा है।

---

१ चित्त में. २ चैन. ३ खुशी. ४ राम का हृदय. ५ चक्षु. ६ उड़ गयी दूर हो गयी. ७ नग्न. ८ सत्यस्वरूप. ९ पहनने का कड़ा यहां अभिप्राय अहंकार से है. १० साथ. ११ चमकती. १२ यहां वृत्ति से अभिप्राय है. १३ प्रकाश की वर्षा. १४ ज़ोर से.

[६०]

ग़ज़ल क़व्वाली

बिठा कर आप पेहलू[1] में, हमें आँखें दिखाता है।
सुना बैठेंगे हम सच्ची, फ़क़ीरों को सताता है ॥ १ ॥
अरे दुन्या के बाशिन्दो[2]! डरो मत बीम[3] को छोड़ो।
यह शीरीं[4]-रू तो मिसरी है, भवें नाहक़[5] चढ़ाता है ॥ २ ॥
यह सलवट[6] डालना चेहरे पे गंगा जी से सीखा है।
है अन्दर से महा शीतल, यह उपर से डराता है ॥ ३ ॥

---

[६०]

(१) राम का शरीर जब रोगी हुआ था तो राम अपने (प्रेमात्मा) स्वरूप से यूं कहते हैं:—ऐ प्यारे (प्रेमात्मा) अपने समीप बिठला कर हमें आँखें दिखलाता है, यह याद रख, हम सच्ची कह बैठेंगे, क्या फ़क़ीरों को सताता है ?

(२) ऐ संसारी लोगो ! मत डरो, भय को छोड़ दो, क्योंकि यह मधुर मुख वास्तव में मिसरी रूप है परन्तु भवें व्यर्थ चढ़ा लेता है (अर्थात् ऊपर २ से कोप में आ जाता है और वह भी व्यर्थ)।

(३) चेहरे पर बल डालना (त्योरी चढ़ाना) हमारा प्यारा स्वरूप गंगाजी से सीखा है (क्योंकि बैहते समय गंगा के जल पर भंवर पड़ते हैं मगर अन्दर से जल बिलकुल ठंडा होता है, ऐसेही यह प्यारा) अन्दर से महा शीतल है और ऊपर से डराता है।

---

१ अपने पास. २ बसने वाले, निवासी. ३ डर, ख़ौफ़. ४ मधुर मुख मीठे बोल वाला. ५ व्यर्थ. ६ माथे पर बल, त्यूरी.

बनावट की जबीं पुर[1] चीन है उलफ़त[2] से मुलबब[3] दिल।
बनावट चालबाज़ी से यह क्यों भर्रे में लाता है ॥ ४ ॥
अगर है ज़र्रः ज़र्रः[4] में बलकि लाखवें जुज़ में।
तो जुज़्व[5]-ओ-कुल भी सब वह है, दिगर[6] झट उड़ ही जाता है ॥५॥
निगाहे-ग़ौर रख क़ायम ज़रा बुरक़ाः[7] को ताके जा।
यह बुरक़ा साफ़ उड़ता है, वह प्यारा नज़र आता है ॥ ६ ॥
तलातम[8]-खेज़ बेहरे-हुसनो[9] खूबी है अहाहाहा।
हवास-ओ-होश की किश्ती को दम भर में बहाता है ॥ ७ ॥

---

(४) प्यारे की बलों से भरी ललाट केवल बनावटी है, क्योंकि दिल उस का प्रेम से लबालब भरा हुआ है, मगर मालूम नहीं कि यह बनावटी चालबाज़ी से लोगों को भर्रे में क्यों ले आता है।

(५) अगर परमाणु मात्र में वह है और उस के लाखवें भाग में भी वह है, तब व्यष्टि और समष्टि भी वोही सब है, उस से अतिरिक्त अन्य कुछ रह ही नहीं सकता।

(६) निरन्तर विचार-दृष्टि से (इस माया के) पर्दे को देखते जा, इस विवेक से यह पर्दा साफ़ उड़ जाता है और वह प्यारा (आत्मा) नज़र आने लगता है।

(७) अहाहाहा अपने सौन्दर्य का समुद्र क्या लहरें मार रहा है, जो होश और हवास की नौका को दम भर में बहा ले जाता है अर्थात् मन बुद्धि जिसे देख कर चकित हो जाते हैं।

---

१ बलवाली पेशानी से भरा हुआ माथा; २ प्रेम, ३ लबालब भरा हुआ, ४ परमाणु मात्र; ५ व्यष्टि और समष्टि, ६ दूसरा, ७ पर्दा, ८ लहरें मारने वाला, ९ सौन्दर्यता का समुद्र.

हसीनों[1] ! हुसन-ओ-खूबी है मेरी ज़ुलफ़े[2]-सियाह का ज़िल[3] ।
अबस[4] साया-परस्तों[5] का पड़ा दिल तलमलाता है ॥ ८ ॥
अरे शोहरत ! अरे रुसवाई ! अरे तोहमत[6] ! अरे अज़मत[7] ।
मरो लड़ लड़ के तुम अब राम तो पल्ला[8] छुड़ाता है ॥ ९ ॥

यह कविता पंजाबी भाषा में है इस में राम महाराज ईश्वर को सेवक का पद देकर पुरुष को उपदेश कर रहे हैं।—

[६१]

ग़ज़ल कैहरवा

वाह वा कामां[9] दे नौकर मेरा, सुघर सियाना[10] वे ।
नौकर मेरा (टेक)

---

(८) ऐ प्यारे सुन्दर पुरुषों ! (यह याद रखो) तुम्हारी खूबसूरती (सुन्दरता) जो है वह मेरी काली ज़ुलफ़ (माया) ही का केवल साया है, परछायीं (साया) को पूजने वालों का (रूप से मोहित या माया-आसक्त पुरुषों का) चित्त व्यर्थ तलमलाता (टमटमाता) है ।

(९) ऐ यश ! ऐ अपयश ! ऐ कलङ्क ! ऐ बड़प्पन ! तुम सब अब लड़ २ के मरो, राम तो तुम सब से साफ पल्ला छुड़ाता है (तुम से पृथक होता है) ।

[६१]

(टेक) वाह वाह काम करने वाले नौकर मेरे, शाबाश ! वाह रे बुद्धिमान् नौकर मेरे, शाबाश !

---

१ सुन्दर पुरुषो. २ काली ज़ुल्फ़ अर्थात् माया. ३ साया, प्रतिबिम्ब. ४ व्यर्थ है. ५ रूप से मोहित होने वाले यहां अभिप्राय मायासक्त से. ६ कलङ्क. ७ बुज़ुर्गी, बड़ाई. ८ अलग होता है. ९ काम करने वाला. १० बड़ा बुद्धिमान, अक़्लमन्द.

ख़िदमत करद्यां कदे न डरदा, रोज़े-अज़ल[1] तो सेवा करदा।
लूं लूं[2] दे विच रैंदा वरदा, हर शै-समाना[4] रे नौकर मेरा ॥ वाह वाह० १

जद मौला[5] मौला पन[6] छुडदा, नौकर नखरे टखरे फड़दा।
फिर भी टैहल[7] ओह पूरी करदा, हर नाच नचानारे[8] नौकर मेरा ॥ वाह वाह० २

---

(१) मेरा नौकर (ईश्वर) सेवा करने से कभी भी नहीं डरता है और अनादि काल से सेवा करता चला आता है और (यह ऐसा नौकर है कि) मेरे रोम रोम में बसता है और सर्व वस्तु में रम रहा है।

(२) जब ईश्वर अपने ईश्वरपन को छोड़ता है अर्थात् जब यह पुरुष अपनी ब्रह्मदृष्टि को त्यागता है तब ईश्वर रूपी नौकर भी उस समय नखरे टखरे करने लग पड़ता है, पर तौ भी वह सेवा पूरी करता है। वाह वाह ! हर तरह के नाच नाचने वाला (काम करने वाला) मेरा नौकर है।

---

१ अनादि काल से. २ रोम रोम में. ३ नौकर. ४ प्रत्येक वस्तु में रमने वाला, सर्वव्यापक. ५ ईश्वर. ६ ईश्वरपन, ऐश्वर्य. ७ सेवा. ८ हर नाच नाचने वाला और नचाने वाला.

बादशाही छड अर्दल[1] मल्ली, पर यह शाह कोलों कद चल्ली।
नौकर नूं उठ चौरी झली[2], हाय वीवा[3] रांना नौकर मेरा॥ वाह वाह० ३

ये समझी दा झगड़ा पाया, नौकर तों इतबार[4] उठाया।
विच दलीलां वक़्त गँवाया, विन्हे[5] ग़ज़ब निशाना रे नौकर मेरा, ॥ वाह वाह० ४

---

(३) जब इस ने अद्वैत तत्त्व-दृष्टि छोड़ कर द्वैत-दृष्टि (मैं पापी, मैं पापात्मा वाली दृष्टि) पकड़ी, अर्थात् ईश्वरपना छोड़ कर उसकी चपरास इख़त्यार करी और बजाये उस से सेवा कराने के उस की ख़ुद सेवा करनी शुरू की (उसे चँवर करना शुरू कीया), तो शाह (सर्व के मालिक पुरुष) से ऐसा कब तक सहन हो सकता था निदान (ईश्वर) उसे चोटें दे दे कर उस से यह ख़राब दृष्टि छुड़ा देता है) इस वास्ते मेरा यह नौकर (ईश्वर) बड़ा योग्य है।

(४) जो पुरुष अपने नौकर (ईश्वर) पर अपना विश्वास नहीं रखता वह मूर्खता से उलट अपने घर में झगड़ा डाल लेता है, और व्यर्थ तरह तरह की दलीलों में समय खो बैठता है, अरे प्यारे ! मेरा नौकर तो हर काम में ग़ज़ब का निशाना लगाता है।

---

१ चपड़ास. २ चंवर करा. ३ भोला भाला, नेक. ४ निश्चय, यक़ीन. ५ वेदे, बेधे.

लाया अपने घर विच डेरा, राम अकेला सूरज जेड़ा।
नूर जलाल[1] है नौकर मेरा, दिगर[2] न जाना रे नौकर मेरा ॥५॥
सुघड़ सियाना रे नौकर मेरा, वाह वाह क़मां रे नौकर (टेक)

[८२]

रागनी जै जै वन्ती ताल धापर

उड़ा रहा हूं मैं रंग भर भर, तरह २ की यह सारी दुन्या।
चे:[3] खूब होली मचा रखी थी, पै अब तो हो ली[4] यह सारी दुन्या ॥ १ ॥

मैं सांस लेता हूं रंग खुलते हैं, चाहूं दम में अभी उड़ा दूं।
अजब तमाशा है रंग रलियां, है खेल जादू यह सारी दुन्या ॥२॥

पड़ा हूं मस्ती में ग़र्क़ बेखुद, न ग़ैर[5] आया चला न ठैहरा।
नशे में ख़र्राटा सा लीया था, जो शोर वर्पा है सारी दुन्या ॥३॥

भरी है खूबी हर एक ख़राबी में, ज़र्रह ज़र्रह है मिहर[6] आसा।
लड़ाई शिकवे में भी मज़े हैं, यह ख़्वाब चोखा[7] है सारी दुन्या ॥४॥

---

(५) राम बादशाह ने, जो अकेला सूर्य है, जब अपने असली घर (स्वस्वरूप) में स्थिती की तो नौकर अपना स्वयं प्रकाश ही पाया, अन्य कोई नौकर नज़र न आया।

अरे! यह मेरा नौकर बड़ा बुद्धिमान् है। वाह वाह काम करने वाले मेरे नौकर।

---

१ तेज प्रकाश. २ अन्य, दूसरा. ३ क्या. ४ हो गयी, ख़तम हो गयी. ५ दूसरा, अन्य. ६ सूर्यवत्. ७ विचित्र स्वप्न.

लिफ़ाफ़ा देखा जो लम्बा चौड़ा, हुआ तहय्युर[1], कि क्या ही होगा।
जो फाड़ देखा, ओहो! कहूं क्या? हुई ही कब थी यह सारी दुन्या॥ ५॥
यह राम सुनियेगा क्या कहानी, शुरु न इस का, ख़तम न हो यह।
जो सत्य पूछो! है राम[2] ही राम॥ यह मेहज़[3] धोखा है सारी दुन्या॥ ६॥

वेदान्त

[६३]

आज़ादी

सोहनी ताल दीपचंदी

धन ये आज़ादा! ख़ुशी की रूह[4]! उम्मीदों की जान।
बुलबुल साँ दम से तेरे पेच खाता है जहान॥
मुलके-दुन्या के तेरे बस इक क़रशमा[5] पर लड़े।
ख़ून के दरया बहाये, नाम पर तेरे मरे॥
हाय मुक्ति! रुस्तगारी[6]! हाय आज़ादी! निजात[7]।
मक़सदे-जुमला मज़ाहब[8] है फ़क़त तेरी ही ज़ात॥

---

१ आश्चर्य हैरानी. २ राम कवि के नाम से मुराद है. ३ केवल. ४ आनन्द के स्वरूप. ५ नाज़, नख़रा टख़रा. ६ छुटकारा. ७ मुक्ति. ८ सब मतों या धर्मों का उद्देश्य या लक्ष्य.

उंगलियों पर बच्चे गिन्ते रहते हैं हफ़्ते[1] के रोज़।
कितने दिन को आयेगा यकशंबः[2] आज़ादी[3]-फ़रोज़ ॥
हम ग्रांडी के मुक़ैयद[4] सच्ची आज़ादी से दूर।
हो गये नशे पै लट्टू, बेहरे-आज़ादी[5]-सरूर ॥
साहिबो! यह नींद भी मीठी न लगती इस क़दर।
क़ैदे-तन से दो घड़ी देती न आज़ादी अगर ॥
क़ैदे में फँस कर तड़फता मुर्ग़ है हैरान हो।
काश[6]! आज़ादी मिले तन को, नहीं तो जान को ॥
लम्हा[7] जो लज़्ज़त मज़े का था वह आज़ादी का था।
सच कहें, लज़्ज़त मज़ा जो था वह आज़ादी ही था ॥
क्या है आज़ादी? जहां जब जैसा जी[8] चाहें करें।
खाना पीना ऐश[9] गुलछर्रों में सब दिन काट दें? ॥
राग शादी नाच अशरत[10]-जलसे रंगा रंग के।
बंगले, बाग़ातें-आली योरोपियन[11] ढंग के? ॥
क़ता[12] टोपी की नयी, फ़ैशन निराला बूट का।
दिलकशो[13]-बेदाग़ खिलना बदन पर वह सूट का? ॥
दिलको रंगत जिस की भाये शादी[14] बेखटके करें।
धर्म की आयीन[15] चुपके ताक पर ले कर धरें? ॥
सब्ज़ें फिटन के आगे कोचवान का पोश पोश।
अबलक़ों[16] का वह निकलना, हिनहिना जोश जोश? ॥

---

१ सप्ताह के दिन. २ रवि वार. ३ आज़ादी देने वाला. ४ आसक्त, क़ैदी. ५ आज़ादी के आनन्द की ख़ातिर. ६ ईश्वर करे. ७ काल, पल. ८ चित्त. ९ विषय भोग. १० विषयानन्द. ११ अंग्रेज़ों की तर्ज़ के मकान. १२ वज़ा तर्ज़. १३ चित्ताकर्षक. १४ ख़ुशी. १५ नियम, शास्त्र-आज्ञा. १६ घोड़े.

कोट पेहनाता है नौकर, जूता पेहनाये ग़ुलाम।
नाक चढ़ाता है आक़ा, जल्द बेतुतफ़ा हराम ! ॥
मुंह में गट गट सोडावाटर और सिगारों का धूंवा।
ज़ोफ़[1] की दिल में शिकायत, राम की अब जा[2] कहां ? ॥
क्या यह आज़ादी है ? हाय ! यह तो आज़ादी नहीं।
गोये[3]-चौगां की परेशानी है, आज़ादी नहीं ॥

अस्प[4] हो आज़ाद सरपट, क़ैद होता है स्वार।
अस्प हो मुतलक़[5] इनां,[6] हैरान रोता है स्वार ॥
इंद्रियों के घोड़े छूटे बाग डोरी तोड़ कर।
वह मरा वह गिर पड़ा, स्वार सिर मुंह फोड़ कर ॥

ताज़ी[7] तौसन तुंदखू[8] पर दस्तो-पा[9] ज़कड़े कड़े।
ले उड़ा घोड़ा मिज़प्पा,[10] जान के लाले पड़े ॥
जाने[11]-मन ! आज़ाद करना चाहते हो आप को।
कर रहे आज़ाद क्यों हो आस्तीं[12] के साँप को ? ॥

हाँ वह है आज़ाद जो क़ादिर[13] है दिल पर जिस्म पर।
जिस्का मन क़ाबू में है, क़ुदरत[14] है शकलो-इस्म पर ॥
ज्ञान से मिलती है आज़ादी यह राहत[15] सर बसर[16]।
वार के फेंकूं में इसपर दो जहां का मालो-ज़र[17] ॥

---

१ कमज़ोरी २ स्थान, जगह. ३ खेलने वाले गेंद. ४ घोड़ा. ५ पूरा, बिलकुल. ६ अपने वश में अर्थात लगाम डोरी से क़ाबू कीया हुआ. ७ अर्बी घोड़ा. ८ बद-मिज़ाज, तेज़. ९ हाथ पाँव जकड़े हुए. १० स्वार का नाम है. ११ ऐ मेरी जान (प्यारे). १२ बग़ल, कलरिवाली. १३ बलवान, वशी. १४ ताक़त, बल. १५ आराम. १६ लगातार. १७ धन, दौलत.

वेदान्त आलमगीर

[६४]

(१) गर कमिशनर हो, लाट साहब हो।
या कोई और ग़ैर साहब हो॥
हर कोई उस तलक नहीं जाता।
अधिकारी ही है दख़ल पाता॥
लेक[1] जब अपने घर में आना हो।
कौन है उस वक्त जो मानेः[2] हो॥
जब कोई अपने घर को आता है।
हैफ़[3] उस पर है, रोकता जो है॥
हो जो वेदान्त, ग़ैर से यारी।
तब तो कहना बजा था अधिकारी॥
यह तो जी! अपने घरकी विद्या है।
पाना इस को फ़र्ज़ सब का है॥
"मैं हूं खुद ब्रह्म" यह करो अभ्यास।
मैं नहीं जिस्मो[4]-इस्मो, नौकर, दास॥
"मैं हूं बेलौस[5], पाक[5], आला[6]-ज़ात"।
जैहल[7] की हो कभी न जिस में रात॥
मैं हूं खुर्शेदे[8] तेज़ अनवर[9] आप।
मैं था ब्रह्मा का बाप, सब का बाप॥

---

१ किन्तु. २ मना करने वाला. ३ अफ़सोस, शोक. ४ शरीर और नाम. ५ निष्कलङ्क बेदाग़, शुद्ध, पवित्र निर्लिप्त. ६ परम स्वरूप. ७ अविद्या, अज्ञान. ८ सूर्य. ९ प्रकाशों का प्रकाश.

वेद है मेरा एक ख़र्राटा।
भेद दुन्या का मेरा ख़र्राटा॥
राम कहता नहीं है सैकिंडहैंड[1]।
वह तो खुद है श्रुति, न सैकिण्डहैंड॥
वह जो कमज़ोर आप होते हैं।
लुक़माये[2] तीन ताप होते हैं॥
हों न पढ़ाने के जो अधिकारी।
उन को मिलता नहीं है अधिकारी॥
(२) एक दफ़ा देव-ऋषि नारद ने।
रैहम कर ख़ोक[3] से कहा उस ने॥
"चल तुझे ले चलेंगे हम वैकुंठ।
लीला अद्भुत विचित्र है वैकुंठ"॥
खूक बोला ग़ज़ब से तब नादाँ।
"क्या मुझे मिल सकेगा कीचड़ वाँ[4]?"॥
जब ऋषी ने कहा "नहीं यह तो"।
ख़ोक बोला "मैं जाऊं काहे को?"॥
यह न समझा वहां जो जाऊंगा।
जिस्म भी तो नया ही पाऊंगा॥
हविसे-दुन्या[5] के प्यारे शहतीरा!।
ऐ सतूनहाये दुन्या या बोह्तान[6]!॥
तुम न जी[7] में ज़रा भी घबराओ।
सदका मुतलक़ न दिल में तुम लाओ॥

१ दूसरे से सुनी सुनाई. २ ग्रास. ३ पराह, सूअर. ४ वहां से मुराद है. ५ दुन्या के लालच. ६ झूटे. ७ चित्त.

"हाय! वेदान्त क्या ही कर देगा।
ज़ेर[1] कर देगा, ज़बर[2] कर देगा॥
तुम रखो अपने जी में इतमीनान[3]।
शक नहीं इस में रत्ती भर तू जान॥
गर अवारज़[4] तेरे बदल देगा।
साथ तुम को भी और कर देगा॥
लोटना छोड़ियेगा कीचड़ में।
जालसाज़ी में, झूठ की जड़ में॥
ख़ाक दुन्या की मत उड़ाइयेगा।
असल अपना न भूल जाइयेगा॥
"मैं हूं यह जिस्म", फ़ोहश बोली है।
स्वांग छोड़ो, सितम[5] यह होली है॥
(२) मिसर की खोद लें जो मीनारें।
हाये! मुर्दों भरी वह मीनारें॥
ममी मुर्दे उन्हों में रक्खे थे।
ऐसी तरकीबों-अक़्लमन्दी से॥
गो हज़ारों बरस भी हों बीते।
मुर्दे आते नज़र हैं ज्यूं जीते॥
प्यारे भारत के हिन्दू बाशिन्दो!।
गुस्सा मत करना, ज़ाहिदो[6]! रिन्दो[7]॥
जी रहे हो कि मर गये हो तुम?।
ममी-मीनार बन गये हो तुम?॥

१ नीचा. २ ऊंचा. ३ धैर्य. हौसला, तसल्ली. ४ दर्द गिर्द, दुःख. ५ ग़ज़ब होली. ६ कर्मकाण्डी. ७ मस्त.

जीते तुम थे ऋषी मुनी थे जब।
मर्मी क्यों हो हज़ार साल के अब! ॥
क्यों हो ज़िन्दा[1] बदस्ते मुर्दा आप।
नाम रौशन डुबोया उन का आप ॥
वह तो ज़ीते थे, तुम भी जी उठ्ठो।
मुर्दा बच्चे न उन के हो बैठो ॥
नाम तो ले रहे हो व्यास का तुम।
काम करते हो अदना दास का तुम ॥
बेटा वही सपूत होता है।
बाप से बढ़ के जो पूत होता है ॥
छोड़ दो नाम लेना ऋषीयों का।
खुद ऋषी हो अगर न अब बनना ॥
जब यह कहता है एक नालायक़।
"भृगु मेरा बुज़ुर्ग था लायक़" ॥
भृगू मनसूब[2] उस से होता है।
शर्म से अर्क़[3] २ रोता है ॥
दुःख मत दो उन्हें सताओ मत।
शर्म से सर नगूं[4] बनाओ मत ॥
नाम-लेवे[5], अजब मिले ऐसे।
धब्बे यह नाम को लगे कैसे? ॥
मूछ दाढ़ी लगा के बुढ्ढे की।
बच्चा बूढ़ा नहीं कभी होगा ॥

---

१ जीते जी मौत के हाथ होना. २ नवल से निसबत रखना अर्थात् संबन्धी, ३ पसीना २ रोना. ४ नीचे सिर. ५ नाम लेने वाले.

उस को वाजिब है तरवीयत पाये।
वक़्त पर यूं बुज़ुर्ग ही होगा॥
उन की डाढ़ी लगाया चाहते हो।
तरवीयत[1] से गुरेज़[2] करते हो॥
है मुनासिब बुज़ुर्ग की ताज़ीम।
ख़ँदावर[3] चाहिये तकरीम[4]॥
बूढ़ा खाता है खिचड़ी पतली रोज़।
नक़ल से कब जवां हो यह पीरोज़[5]॥
प्यारे! बनियेगा आप ज़िन्दा पीर।
उन बुज़ुर्गों की मत बनो तस्वीर॥
नक़्श जब है उतारता नक़्क़ाश।
तकता रहता है असल को नक़्क़ाश
नक़्श यह गरचेः बादशाह का हो।
फिर भी मुर्दा है, ख़्वाह किसी का हो॥
फ़ेल[6] अतवार[7] ऋषीयों मुनीयों के।
ऋषी तुम को नहीं बना सकते॥
अमल ज़ाहिर जो उन को ज़ेबा थे।
वक़्त था और, और ही दिन थे॥
जिस्म उन के थे जो, उन्हीं के थे।
वह तुम्हारे नहीं कभी होंगे॥
करके तक़लीद[8] तुम बना ही लो।
सूरते-शेर, नारह[9] क्योंकर हो?॥

---

१ पालन पोषन, तालीम पाना. २ भागना. ३ बंदी करने वाली. ४ इज़्ज़त. ५ बुड्ढा. ६ धर्म. ७ विधियां. ८ ऊपर की देखा देखी, बग़ैर दर्याफ़्त के किसी की पैरवी करना, या नक़ल करना. ९ गर्ज़.

आओ तजवीज़ एक बतलायें ।
ऋषी बनने की बात जतलायें ॥
देह सूक्ष्म को और कारण को ।
चीर कर चढ़िये मेहरे[1]-रौशन को ॥
चढ़िये ऊपर को असल अपने को ।
ज़िंदगी तुम में भी ऋषी की हो ॥
मेहरे-रौशन जो आत्मा है तेरा ।
यह ही वासिष्ट कृष्ण राम का था ॥
उस में निष्ठा, नशस्त, कर मुख़्तार ।
छोड़िये ज़िकरो फ़िकर सब बेकार ॥
नक़ल मत कीजीये फ़ेले-बेरूनी[2] ।
आत्मा एक ही है अन्दरूनी ॥
ब्राह्मणो ! आप सीख लो विद्या ।
फिर यह घर घर फिरो पढ़ाते जा ॥
और क़ौमें तुम्हारे बच्चे हैं ।
गर शिकायत करें, वह सच्चे हैं ॥
जबर से, क़ेहर[3] से, मुहब्बत से ।
ज्ञान दीजे उन्हें मुरव्वत[4] से ॥
वक़्त उपदेश को अगर दोगे ।
तो ही क़ायम स्वरूप में होगे ॥
गंगा हर वक़्त बेहती रहती है ।
साफ़ निर्मल जभी तो रहती है ॥

---

१ प्रकाश स्वरूप सूर्य (आत्मा). २ बाहर के कर्मों की. ३ सख़्ती या गुस्से.
४ लिहाज़ से.

काँटे बोता है, फूट हो जिस में।
याद रखना, है मौत ही उस में॥

ज्ञान के विना शुद्धि नामुमकिन

[६५]

पिदरे[1]-मजनूं ने पिदरे-लैली[2] से।
गिरया[3]-ज़ारी से आ कहा उसने॥
मेरी सारी रियास्तें लीजे।
उमर भर तक गुलाम कर लीजे॥
मेरे लड़के को लैली आहू-चश्म।
दीजे, छोड़ दीजे, आख़िर ख़श्म[4]॥
पिदरे लैली ने फिर मुहब्बत से।
यूं कहा प्यार ही का दम भर के॥
मैं तो हाज़िर हूं लैली देने को।
उज़र कोई भी है नहीं मुझ को॥
पर वह आख़िर जिगर का टुकड़ा है।
न वह पत्थर शजर[5] का टुकड़ा है॥
वह भी इन्सां-शिकम से आयी है।
आस्माँ से तो गिर न आयी है॥
क़ैस[6] तुम को अज़ीज़ बेशक है।
पर वह मजनूं[7] है, इस में क्या शक है॥

---

१ मजनूं (एक आशिक़) का पिता. २ लैली (माशूक़ा) का पिता. ३ रोदे रोदे. ४ गुस्सा, ख़फ़गी. ५ वृष, दरख़्त. ६ मजनूं. ७ पागल.

ऐसी हालत में लड़की क्योंकर दूं ? ।
इक जनूनी के में गले मढ़ दूं ? ॥
मर्ज़ मजनू का पहले दूर करो ।
सिर से सौदा[1] अगर काफ़ूर करो ॥
शौक़ से लीजे, तब तुम्हारी है ।
लैली दौलत यह सब तुम्हारी है ॥
हाय ज़ालिम, सितमगर ! बे रैह्म ! ।
बाये नादाँ ग़रूर सूरते[2], ज़ैह्म ! ॥
देता लैली को बाये आज नहीं ।
और मजनू का तो इलाज नहीं ॥
और तो सब इलाज कर हारा ।
बचता मजनू नहीं यह बेचारा ॥
मारा मजनू बग़ैर लैली के ।
था न चारा[3] बग़ैर लैली के ॥
हिन्दू पंडित ! महात्मा साधो ! ।
जी कड़ा क्यों है ? रैह्म को राह दो ॥
जीव मजनू बना है दीवाना ।
दश्ते-ग़म छान्ता है वीराना ॥
दश्ते-दुन्या[4] में व्हैशी आवारह ।
लैली "आनन्द" के लिये पारह[5] ॥
लैली समझे गुलों को चुनता है ।
फिर पड़ा सिर को अपने धुनता है ॥
सर्व[6] को जान कर यह लैला है ।

---

१ पागल पन. २ दुःखरूप (तकलीफ़ देने की सूरत वाला). ३ इलाज. ४ दुन्या के जंगल. ५ बेक़रार अशान्त, अस्थिर. ६ एक वृक्ष का नाम है.

वहम से जान, अपनी खो दी है ॥
चश्मे-आहू[1] को चश्मे-लैली मान ।
पीछे भटका फिरे है हो हैरान ॥
असली आनन्द-ज्ञान से महरूम[2] ।
ख़ाको-ख़स[3] में मचा रहा है धूम ॥
गाह[4] आनन्द ज़र को माने है ।
यौल[5] में गाह ख़ाक छाने है ॥
लोग कहते न हों बुरा मुझ को ।
नंग रह जावे, नाक हाथी को ॥
राये लोगों की, अहो मुतग़य्यर[6] ।
इस के पीछे फिरे है मुतहय्यर[7] ॥
सारी वहशत,[8] यह वादियां[9]-गर्दी ।
लैली ख़ातिर है, जुमला[10] सिरदर्दी ॥
लैली मिलते जुनूं[11] जायेगा ।
ब्रह्म-विद्या बिदूं[12] न जायेगा ॥
शम दम आयेंगे ब्रह्म-विद्या से ।
फ़िकर जायेंगे ब्रह्म-विद्या से ॥
शम हो पहले, ज्ञान पीछे हो ।
सेर[13] हो लें, तआम[14] पीछे हो ॥
हाये पंडित ! ग़ज़ब यह ढाते हो ।
उलटी गंगा पड़े बहाते हो ॥

---

१ हिरन की आंख. २ रहित, विहीन बेख़बर. ३ ख़ाक मिट्टी में. ४ कभी. ५ ऐश, ऐयाश (अभिमान विषय भोग). ६ बदलने वाली. ७ आश्चर्यवान, हैरान हुए. ८ पशुपन. ९ जंगलों में घूमना. १० सब, कुल. ११ पागलपन. १२ बिना, बग़ैर. १३ तृप्त, सन्तुष्ट. १४ भोजन, खाना.

यह इसी पाप का नतीजा है।
डूबे दुःखों में आज जाते हो॥
वेद-दानों! यह मौत मत रखना।
धीः[1] को, बुद्धि को घरमें मत रखना॥

लड़की घर में न ज़ेब[2] देती है।
धन पराया, फ़रेब देती है॥
ब्रह्म-विद्या का दान अब कर दो।
वरना इज़्ज़त से हाथ धो बैठो॥

वक़्त देखो, समय को सिंभालो।
ज़ात क़ायम हो, काया[3] पलटा लो॥
नंगो-नामूस अब इसी में है।
बचना ज़िल्लत से बस इसी में है॥

डूबा तारा तुम्हारा पूरब को।
ब्रह्म-विद्या चली है यूरप को॥
हिंद मजनूं बना है दीवाना[4]।
तलमलाता है मिसले[5]-परवाना॥

मुज़्दए[6]-वसल अब सुना देना।
ख़ुशो ख़ुर्रम[7] अदा से गा देना॥
वेद का फ़र्ज़ यह चुका देना
फ़र्ज़ अपना यह कर अदा देना॥

---

१ लड़की रूपी बुद्धि. २ अच्छी लगती है. ३ शरीर. ४ पागल. ५ पतंग की तरह. ६ अभेदता (आत्म साक्षात्कार) की खुशख़बरी. ७ प्रसन्न मुखसे.

[६६]

गुनाह

पाप क्या है? गुनाह कितने हैं? ।
दाख़िले[1]-जैहल सारे फ़ितने[2] हैं ॥
आत्मा जिस्म ही को ठहराना ।
बूटा पापों का यह है लगवाना ॥
आत्मा पाक[3], हस्त[4], बरतर[5], है ।
इल्म-बाहिद[6], सरूरो-अकबर[7] है ॥
जिस्म[8] को शाने-आत्मा[9] देना ।
रात को आफ़ताब[10] कह देना ॥
किज़्बो-बुतलाँ[11] यही है पाप की जड़ ।
एक ही जैहल तीन ताप की जड़ ॥
क्या तकब्बुर[12] है? किब्रयाई[13]-ए-ज़ात (को) ।
बेच देना द्रोग़[14] जिस्म के हात ॥
क्रोध क्या है? जलाले[15]-वाहिदे ज़ात (को) ।
बेच देना द्रोग़-जिस्म के हात[16] ॥
क्या है शहवत[17]? सरूरे-पाके-ज़ात[18] ।
बेच देना हक़ीर[19] जिस्म के हात ॥

---

१ अज्ञान में प्रविष्ट. २ फ़िसाद, झगड़े. ३ शुद्ध, पवित्र. ४ सत्ता मात्र, वास्तव वस्तु. ५ परम, सर्वोपरि. ६ अद्वैत ज्ञान. ७ परमानन्द. ८ शरीर, देह. ९ आत्मा का पद. १० सूर्य. ११ झूठ झूठ, व्यर्थ झूठ, तुच्छ झूठ. १२ अभिमान, अहंकार. १३ स्वरूप की बड़ाई. १४ झूठा शरीर. १५ अद्वैत स्वरूप की महिमा वा रौनक़. १६ हाथ, कर. १७ विषयानन्द. १८ शुद्ध स्वरूप आत्मा का आनंद. १९ तुच्छ.

क्या अदावत[1] है? पाक वहदते-ज़ात[2]।
वेच देना हक़ीर जिस्म के हात॥
हिर्स[3] क्या? सब पै कबज़ा-ए-कुल्ली[4]-ए-ज़ात।
वेच देना हक़ीर जिस्म के हात॥
मोह क्या है? क़यामे-यक्साँ[5] ज़ात।
वेचदेना हक़ीर जिस्म के हात॥
बस गुनाह क्या है? आत्मा का हक़[6]।
जहल[7] को छीन देना हक़ नाहक़[8]॥
हस्ते[9]-मुतलक़ का जहल में संसर्ग[10]।
तोशा[11] है पाप का, गुनाह का वर्ग[12]॥

[९७]

कलियुग

सच्चे दिल से विचार कर देखो।
तुम ने पैदा किया है कलियुग को॥
"मैं नहीं हूं खुदा" यह कलियुग है।
"जिस्म ही हूं', यक़ीन यह कलियुग है॥
"जिस्म है आत्मा" यह कलियुग है।
चार वाकों का मत, यह कलियुग है॥

---

१ शत्रुता, दुशमनी. २ अद्वैत स्वरूप आत्मा. ३ लालच. ४ सर्व व्यापक की मिलकीयत (सर्वव्यापकता) का क़ब्ज़ा या अधिकार. ५ एक रस स्वरूप की स्थिरता. ६ अधिकार. ७ अविद्या, अज्ञान. ८ व्यर्थ, बिना प्रयोजन. ९ सतस्वरूप. १० प्रवेश, दख़ल ११ भार, असबाब, ज़खीरा. १२ पत्ता, फल.

खाऊं पीयूं मज़े उड़ाउंगा।
हां विरोचन[1] का मत, यह कलियुग है॥
बंदा-ए-जिस्म[2] ही बने रहना।
सब गुनाहों का घर, यह कलियुग है॥
जिस्म से कर नशिस्त[3] अपनी दूर।
हू[4] जीये आत्मा में खुद मसरूर[5]॥
जिस्म में गर निवास रक्खोगे।
ज्ञान से गर हिरास[6] रक्खोगे॥
पाप हरगिज़ न छोड़ेंगे, हरगिज़।
ताप हरगिज़ न छोड़ेंगे, हरगिज़॥
दूर कलियुग अभी से कीजेगा।
दान दीजेगा, दान दीजेगा॥
ठीक कर युग है, यह नहीं कलियुग।
दान कर दूर, कीजीये कलियुग॥
हिंद पर गेहन[7] लग गया काला।
दान देने से बोल हो बाला॥

[६८]

दान

दान होता है तीन क़िस्मों का।
अन्न का, इल्म का, व इरफ़ां[8] का॥

---

१ असुरों के राजा का नाम है, जो केवल शरीर को आत्मा कर के मानता और पूजता था. २ शरीर का अनुचर, गुलाम या देहासक्त बने रहना. ३ बैठक, स्थिति. ४ हो जाइये, या हो बैठिये. ५ आनन्द, मग्न. ६ भय. ७ ग्रहण. ८ आत्म ज्ञान (ब्रह्म-विद्या).

अन्न का दान एक दिन के लिये ।
जिस्मे-बेरूं[1] को तक़वीयत[2] देवे ॥
इल्म का दान उमर भर के लिये ।
जिस्मे-दायम[3] को कर धनी देवे ॥

दान इर्फ़ां का तो अबद[4] दायम ।
कर सरूरे[5]- अज़ल में दे क़ायम ॥
सब से बढ़ कर तो तीसरा है दान ।
दान इर्फ़ां का, ज्ञान ही का दान ॥

पंडितो ! ज्ञान दान दीजेगा ।
हिंद में आम दान दीजेगा ॥
गर[6] यह कलियुग का गैहन[7] है बाक़ी ।
कसर है ज्ञानदान देने की ॥

लो बला टल गयी है, वाह वाह वा ।
हिंद रौशन हुआ है, आहाहा हा ॥
जाओ कलियुग, यहां से जाओ तुम ।
भागो भारत से, फिर न आओ तुम ॥

हुक्मे-नातिक़[8] है राम का तुम पर ।
बंधिये बिस्तर को, अब उठाओ तुम ॥
हिंद ही रह गया है क्या तुम को ? ।
आग में, जलमें, सिर छिपाओ तुम ॥

---

१ बाह्य (स्थूल) शरीर. २ पुष्टि. ३ यहां अभिप्राय सूक्ष्म शरीर से है. ४ नित्य, सदा के लिये. ५ अनादि नित्यानन्द. ६ यदि, अगर. ७ ग्रहण. ८ अटल न टूटने वाला.

[६६]

नै

ख़ाली बिलकुल है बांस की यह नै[1] ।
चन्द सूराख़दार बेशक है ॥
बोसा[2] देता है उस को जब नाई[3] ।
निकस उस नै से सात सुर आई ॥
रागनी राग सब हुए ज़ाहिर ।
मुख़्तलिफ़ भाग सब हुए बाहिर ॥
एक ही दम[4] ने यह सितम ढाया ।
कलेजा अब बल्लीयों[5] उछल आया ॥
सब सुरों में जो मौज मारे है ।
दम वह तेरा ही कृष्ण प्यारे है ॥
दम तो फूंके था एक मुरलीधर ।
मुख़्तलिफ़ ज़मज़मे[6] बने क्योंकर ? ॥
सामया[7], बासरा[8], ख़्यालो-अक़ल ।
सब में वासिल[9] हुआ, करे है नक़ल ॥
मर्द, औरत, गदा[10] में, शाहों में ।
क़हक़हों, चेहचहों में, आहों में ॥
क़ुतब[11] तारे में, मेहर[12] में, माह[13] में ।
झोंपड़े में, मेहलसरा, राह में ॥

---

१ बांसुरी. २ चुम्बन, चूमना. ३ बांसुरी बजानेवाला ४ श्वास. ५ कलेजा आनन्द से इतना लैहराने लगा कि प्रसन्नता अन्दर न समा सकी. ६ राग, गीत, सुरें. ७ सुनने की शक्ति. ८ देखने की शक्ति. ९ अभेद हुआ. १० साधु, फ़क़ीर. ११ ध्रुव तारा. १२ सूर्य. १३ चाँद.

एक ही दम का यह पसारा है।
सब में वासिल है, सब से न्यारा है॥
दारे[1] दुन्या की इक तिही[2] नै में।
प्राण तेरे ने राग फूंके हैं॥
तू ही नाई है, कृष्ण प्यारा है।
सारी दुन्या तेरा पसारा है॥

[७०.]

शीश मन्दिर

शीश मन्दिर में इक दफा बुल[3]-डाग।
आ फँसा तो हुआ बगूला आग॥
जौक़[4] दर जौक़ पल्टनें सग[5] थे।
ठट[6] के ठट लग रहे थे कुत्तों के॥
सख़्त झुंजलाया यह, वह झुंजलाये।
चार जानिब[7] से तैश[8] में आये॥
बिगड़ा मुंह उस का, वह भी सब बिगड़े।
जब यह उछला, वह सब के सब कूदे॥
जब यह भौंका, सदाये-गुम्बज़[9] से।
क्या ही औसाँ[10] ख़ता हुए इस के॥
"मैं मरा, मैं मरा" समझ कर वाये!।
मर गया डाग, सिर को धुन कर वाये!॥

---

१ दुन्या का घर. २ ख़ाली (खोखली) बांसरी. ३ एक प्रकार का कुत्ता. ४ गिरोह के गिरोह. ५ कुत्ते ६ झुंड के झुंड. ७ चारों ओर से. ८ गुस्सा. ९ गुम्बज़ की आवाज़. १० आश्चर्यमय, घबराहट युक्त चित्त.

शीश मन्दिर में आ के दुन्या के।
जाहिले[1]-ग़ैर-दान् मरा भौंके॥
वहम में क्यों भरमता जाता है।
अपने आपे में क्यों न आता है॥

[७१]

द्रष्टान्त

गौड[2] मालिक मकान का आया।
मर्द-दाना[3] ने जल्वा[4] फ़रमाया॥
रूये[5]-ज़ेबा को हर तरफ़ पाया।
फ़र्त-शादी[6] से सीना भर आया॥
फ़र्श-अतलस नफ़ीस झालरदार।
अतरो-अंबर लतीफ़ खुशबूदार॥
तख़्ते-ज़री[7] पै रेशमी तकिये हैं।
गद्दे-मख़मल के ज़ेब देते हैं॥
बैठा ठस्से से ज़ीनते-ख़ाना[8]।
गुद गुदी दिल में, झूमता शाना[9]॥
जब नज़र चार सू[10] उठा देखा।
कुछ न अपने से मासिवा[11] देखा॥
गरचे वाहिद[12] था, पर हज़ारों जा[13]।
जल्वा[14] अफ़गन रूये-सफ़ा[15] देखा॥

---

१ द्वैत देखने वाला मूर्ख वा अज्ञानी. २ ईश्वर. ३ ज्ञानी पुरुष. ४ दर्शन दिया. ५ सुन्दर स्वरूप. ६ आनन्द की अधिकता. ७ सुनैहरी तख़्त. ८ घर को रौनक़ देने वाला स्वस्वरूप. ९ कंधे. १० तरफ़. ११ इतर, अतिरिक्त. १२ अद्वैत. १३ स्थान. १४ प्रकाशमान. १५ शुद्ध स्वरूप.

गाह[1] मूछों को ताओ दे दे के।
सूरते-वीर[2] रस में आ देखा॥
करके शृंगार कंघी पट्टी का।
पान होंटों तले दबा देखा॥
तेग़[3] मिसरी की देखने के लिये।
प्यारी प्यारी भवें चढ़ा देखा॥
खंदः[4]-गुल की दीद[5] की ख़ातिर।
क्या तहे-दिल[6] से खिलखिला देखा॥
अब्रे[7]-नेसां का लुतफ़ लेने को।
तार आँसू का भी लगा देखा॥
ग़ैर देखे है जैसे इस तन को।
इस तरह इस से हो जुदा देखा॥
अक्स[8] ईक छोड़ असल को आये।
सब वजूदों[9] में फिर समा देखा॥
गोलियां पीली काली सुर्ख़ और सबज़।
मुंह से अपने निकाल बाज़ीगर॥
आप ही देखता है अपने रंग।
आप ही हो रहा है मुतहय्यर[10]॥
बैठ हर तरह शीश मन्दिर में।
ठाठी पट्ठे ने बन बना देखा॥
(सुषुप्ति) मस्त कारण शरीर बन बैठा।
चार कूटों में लेटता देखा॥ (व्यष्टि)

---

१ कभी. २ वीर पुरुष के रूप में. ३ तलवार. ४ खिला हुवा पुष्प. ५ दृष्टि. ६ दिल भर कर. ७ वर्षा ऋतु का बादल. ८ प्रतिबिम्ब. ९ वस्तुओं (शरीरों) में. १० आश्चर्य, हैरान.

ऐ अज़ीज़ों ! यह इज़्ज़तो-दौलत ।
नफ़स नादिर है, पर सरे-उलफ़त ॥
दामे-तज़वीर[1] में न आजाना ।
आँ न भरें में फंस फंसाजाना ॥

ख़िलअ़ते-फ़ाखरह[2] से हो खुर्सन्द[3] ।
खो के हीरा बने हो दौलतमंद ॥
चैन पड़ने को है नहीं हरगिज़ ।
अमन हीरे बिना नहीं हरगिज़ ॥

ज़ाती[4] जौहर से ज़ाती इज़्ज़त है ।
बाकी मा-ओ[5]-मनी की इल्लत[6] है ॥
जब तू फ़ख़रे-ख़िताब लेता है ।
आत्मा को इताब[7] देता है ॥

तू करीमे-जहाँ[8] है, दाता है ।
छोटा अपने को क्यों बनाता है ॥
सब को रौनक़ है तेरे जल्वे[9] से ।
तुझ को इज़्ज़त भला मिले किस से ॥

सनद सर्टीफ़िकेट डिगरी की ।
आर्ज़ू में है क़ैदे-ग़म तन की ॥
तू तो मा़बूद[10] है ज़माने का ।
क़ैद मत हो किसी बहाने का ॥

---

१ दग़ा, फ़रेब का जाल. २ गर्व या मान का हेतु रूप वस्त्र या पारितोषिक. ३ प्रसन्न. ४ असली रत्न. ५ अहंकार और धन इत्यादि. ६ सबब, कारण. ७ ख़फ़गी, ग़ुस्सा, क्रोध. ८ जहान का सख़ी (दाता). ९ प्रकाश. १० पूजने योग्य, पूजनीय.

[७३]

ख़िताब ब नपोलियन[1]

वाह रे नपोलियन ! नडर शह-मर्द ।
टिड्डी दल फ़ौज तेरे आगे गर्द ॥
"हाल्ट[2] !" कह कर सिपाहे-दुश्मन को ।
लर्ज़ां[3] कर दे अकेला लश्कर को ॥
जां-बाज़ी में, शेर-मर्दी में ।
ख़ुश नुमां दश्ते-ग़मनवर्दी[4] में ॥
रोब[5] से और ग़ज़ब की सौलत[6] से ।
तू बराबर था हिन्दू औरत के ॥
राजपूतों की औरतों का दिल ।
न हिले, गरचे कोह[7] जायें हिल ॥
उन की जानिब से शेर को चैलंज[8] ।
लेक ख़ाहिश के नाम से है रंज ॥
पुश्ते-कुश्तों[9] के कर दिये हर सू[10] ।
ख़ूं के जूए[11] भर दिये हर सू ॥
मुल्क पर मुल्क तू ने मार लिया ।
पर कहो, उस से क्या सँवार लिया ? ॥
देना चाहता था राज को वुसअत[12] ।
पर मिली हिर्सो-आज़[13] को वुसअत ॥

---

१ नपोलियन बादशाह के नाम ख़िताब अर्थात् नाम पत्र. २ खड़े हो जाओ. ३ कम्पा देना. ४ ग़म दूर करने के जंगलों. ५ प्रभाव. ६ दबदबा, डर. ७ पर्वत. ८ बुलावा मुक़ाबले आने वास्ते. ९ मरे मुर्दों के ढेर. १० हरतरफ़. ११ नदियें, नहरें. १२ विस्तार, विशालता १३ लालच, लोभ, आशा.

दिल तो वैसा ही रह गया पियासा।
जैसा जंगो-जदल[1] से पहिले था॥

[७४]

सीज़र[2]

ऐ शहनशाहे-जूलयस सीज़र!।
सारी दुन्या का तू बना अफ़सर॥
इतना किस्से को तूल क्यों खेंचा?।
दिल ज़िमीं में फ़ज़ूल क्यों खेंचा?॥
सैल दिल में रहा तअ़ज्जब[3] खेज़।
खदशा[4] पेहलू में, मौजे-दर्द-अंगेज़[5]॥
आ! तेरी मंज़लत[6] को बढ़ायें।
हिन्दू[7]-ए-कैवान् से भी परे जायें॥
क्यों न इतना भी तुम को सूझ पड़ा।
जिस में शै[8] आये वह है शै से बड़ा॥
जुज़्व[9] कुल[10] से हमेशा छोटा है।
छोटा कमरे से बक्स-व-लोटा है॥
जबकि तुझ में जहान् आता है।
आँख में बेहरो[11]-बर समाता है॥
कोहो-दरया-ओ-शेहरो स्वहरा[12] बाग़।
बादशाहो-गदा-ओ-बुलबुलो-ज़ाग़[13]॥

---

१ लड़ाई. २ रूम के बादशाह का नाम. ३ आश्चर्य बढ़ाने वाला. ४ डर. ५ दर्द देने वाली लैहर. ६ पद. ७ शनी तारे के सिरे से भी दूर, ८ वस्तु. ९ टुकड़ा (हिस्सा). १० सारा, साबत; पूरा. ११ पृथिवी और समुद्र. १२ जंगल. १३ कौवा, काक.

इल्म में और शऊर[1] में तेरे।
ज़र्रे से चमकते हैं बहुतेरे॥
खुद को महदूद[2] क्यों बनाते हो।
मंज़ल अपनी पड़े घटाते हो?॥
तुझ में छोटे बड़े समाये हैं।
तू बड़ा है, यह जिस में आये हैं॥
मुलके-सरसब्ज़ और ज़मीन् शादाब[3]।
हैं, शुआ[4] में तेरी सुराबो[5]-आब॥
शम्स[6] मर्कज़[7] नज़ामे-शमसी[8] का।
है नहीं, तू है आश्रा सब का॥
नूर तेरे ही से ज़िया[9] लेकर।
मिहर[10] आता है, रोज़ चढ़ बढ़ कर॥
अपनी किरणों के आब में खुद ही।
डूब मत मर सुराब में खुद ही॥
जान अपने को गर लिया होता।
क़बज़ा आलम पे झट किया होता॥
सल्तनत में मती[11] चरिन्द व परिन्द।
राजे माहराजे होते ज़ाहद[12]-व-रिंद॥
ज़ात में हल[13] दिल किया होता।
हल उक़दा[14] को यूं किया होता॥

---

१ समझ, ज्ञान. २ परिच्छिन्न. ३ खुश, आनन्ददायक पृथिवी. ४ किरण. ५ मृगतृष्णा का जल. ६ सूर्य. ७ केन्द्र. ८ आकाश के तारे आदि का इन्तज़ाम. ९ प्रकाश. १० सूर्य. ११ अधीन, सेवक. १२ परहेज़गार और मस्त अथवा कर्म कांडी और विरक्त. १३ एकाग्र, लीन. १४ गुह्य भेद.

हाथ में खड्ग हो कि खंडा हो।
क़लम हो या बलन्द झंडा हो॥
जुदा अपने को इन से जानते हैं।
इन के टूटे रंज न मानते हैं॥
आप को शूरवीर इस तन से।
जुदा माने हैं जैसे आहन[1] से॥
गर बला से यह जिस्म छूट गया।
क्या हुआ गर क़लम यह टूट गया॥
तू है आज़ाद, है सदा आज़ाद।
रंजो-ग़म कैसा? असल को कर याद॥
ऐ ज़मां[2]? क्या यह तुम में ताक़त है?।
ऐ मकां[3]! तुझ ही में लियाक़त है?॥
कर सको क़ैद मुझ को, मुझ को क़ैद,।
पलक से तुम हो कलअदम[4] नापैद[5]॥
फ़िकर के पाप के उड़ें धूएँ।
गर कभी हम से आन कर उलझें॥
पुर्ज़े पुर्ज़े अलग हुए डर के।
धज्जियाँ जैहल[6] की उड़ीं डर से॥

[७५]

शाहे-ज़मां[7] को वरदान

कैसरे-हिन्द! बादशाह दावर[8]।
जागता है सदा शाहे-खावर[9]॥

---

१ लोहा. २ काल. ३ देश. ४ नाश. ५ झूठा. ६ अज्ञान. ७ ज़माने अर्थात् वर्तमान समय के बादशाहों को वरदान. ८ मुनसफ़, न्याय कारी. ९ पूर्व का बादशाह अर्थात् सूर्य.

राज पर तेरे मग़रबो-मशरक़।
चमकता है सदा शाहे-मशरक़[1] ॥
शाहे-मशरक़ की ब्रह्म. विद्या है।
यानी विद्याओं की यह विद्या है ॥
जाहे-ज़ाती[2] रहे क़रीब तुम्हें।
शाह इल्मों का हो नसीब तुम्हें ॥
नूर[3] का कोह[4] दमाग़ में दमके।
हिंद का नूर ताज पर चमके ॥
तेरे फ़िकर-ख़ियाल के पीछे।
शीरीं चशमा[5] अजीब बहता है ॥
यह ही चशमा था व्यास के अन्दर।
ईसा अहमद इसी में रहता है ॥
इस ही चशमे से वेद निकले हैं।
इस ही चशमे से कृष्ण कहता है ॥
चलिये आबे-हयात[6] वां पीजे।
दुःख काहे को यार सहता है ? ॥
पिछले ऋषियों ने इसी चशमे से।
घड़े भर भर के आब[7] के रक्खे ॥
दुन्या पलटे, ज़माना बदलेगा।
पर यह चशमा सदा हरा होगा ॥
मिहर[?] डूबेगा, कुतब[?] टूटेगा।
पर यह चशमा सदा हरा होगा ॥

---

१ सूर्य २ स्वस्वरूप की विभूति या पदवी. ३ प्रकाश. ४ पर्वत, यहां कोहेनूर (ज्ञान के हीरे) से अभिप्राय है. ५ मीठा सरोवर. ६ अमृत, ७ जल, यहां अमृत से अभिप्राय है. ८ सूर्य. ९ ध्रुव तारा.

रस्मों[1]-मिल्लत तो होंगे मलिया मेट।
पर यह चशमा सदा हरा होगा॥
ऐसे चशमे से भागते फिरना।
बासी पानी को ताकते फिरना॥
तिशना[2] रखेगा बेहरे-खातरे-आब[3]।
जा बजा आग तापते फिरना॥
राम को मानना नहीं काफ़ी।
जानना उसका है फ़क़त शाफ़ी[4]॥
बर्कले, कैंट, मिल्ल, हेमिलटान्[5]।
जुस्तजू[6] में तिरी हैं सरगर्दान्[7]॥
बाईबल, वेद, शास्त्र, कुरआन।
भाट तेरे हैं, ऐ शाहे-रहान[8]!।
अपनी अपनी लियाक़तें ले कर।
तर-ज़ुबान्[9] गा रहे हैं तेरी शान्॥
मदाह-ख़्वाँ[10] शायरों को दो इनआम्।
वक़्ते-दरबारे-खासो-जलसा-ए-आम॥

[७६]

आनन्द अन्दर है

सग[11] ने हड्डी कहीं से इक पाई।
शेरे-नर देख फिकर यह आई॥

---

१ रस्म रिवाज. २ प्यासा. ३ जल अर्थात् अमृत के लिये. ४ आराम देने वाला. पाप से मुक्त करने वाला, ५ यह सब यूरप के फ़िलासफ़रों (तत्त्व वेत्ताओं) के नाम हैं. ६ तलाश. ७ भटकते फिरते. ८ कृपालु महाराजा. ९ मीठी वाणी से. १० स्तुति करने वाले. ११ कुत्ता.

कि कहीं मुझ से शेर छीन न ले।
हड्डी इक उस से शेर छीन न ले॥
लेके मुंह में उसे छुपा कर वह।
भागा खारी[1] को तुम दबा कर वह॥
अज़ीम[2] चुभती थी मुंह में जब रग को।
ख़ून लगता लज़ीज़ था सग को॥
मज़ा अपने लहू का आता था।
पर वह समझा मज़ा है हड्डी का॥
शेरे-नर, बादशाहे-तन्हा[3]-रौ।
हड्डी मुर्दे हों हर तरफ़ सौ सौ॥
वह तो न आँख भरके तकता है।
सगे-नादां[4] का दिल धड़कता है॥
स्वर्ग की नेमतें हों, दुन्या की।
हैं तो यह हड्डियां ही मुर्दे की॥
इन में लज्ज़त जो तुम को आती है।
दर असल एक आत्मा की है॥
ऐ शहनशाहे-मुलक! ऐ इन्दर!।
छीनता वह नहीं यह ज़रो-गौहर[5]॥
राज दुन्या का और स्वर्गो-बहिश्त।
बाग़ो-गुलज़ारो-संगमरमरे-खिशत[6]॥
नेमतें यह तुम्हें मुबारक हों।
बारे[7]-ग़म, यह तुम्हें मुबारक हों॥

---

१ खंदक. २ हड्डी. ३ अकेला चलने वाला राजा. ४ मूर्ख कुत्ता, ५ स्वर्ण (धन) और मोती, ६ संगमरमर की ईंटें. ७ ग़म का भार.

देखना यह तुम्हारे मक़्यूज़ात ।
क़ब्ज़ करते हैं क्या तुम्हारी ज़ात ॥
जाने-मन ! नूरे-ज़ात ही का नाथ[1] ।
फ़ौज रखता नहीं है सूरज साथ ॥
जो ग़नी[2] ज़ात में हैं हीरो-वीर[3] ।
जवांगर दर वजूदे-वर[4] ना पीर ॥
सब दहानों[5] से वह ही खाता है ।
स्वाद खाने भी बन के आता है ॥
"यह हूं मैं", "यह हो तुम", यह असनीयत[6] ।
मोजज़ा[7] है तिरा, न असलीयत ॥
सुवरो-अशकाल[8] सब करामत है ।
मेरी क़ुदरत की यह अलामत है ॥

[७७]

सिकन्दर को अवधूत के दर्शन

क्या सिकन्दर ने भी कमाल किया ।
गुलगुला शोरो[9]-शर का डाल दिया ॥
बर लबे-आब[10] सिन्ध जब आया ।
डट गया फौज लेके, झिल्लाया ॥
उन दिनों एक सालिको-मालिक[11] ।
से मुलाक़ी[12] हुआ, रहा हक़ दक़ ॥

---

१ मालिक. २ अमीर. ३ बहादुर योधा. ४ युवक. ५ मुंहों. ६ द्वैत. ७ करामात. ८ शकलें, सूरतें, नाम रूप. ९ शोर इत्यादि. १० दरया सिन्ध के किनारे. ११ ईश्वर-भक्त, सिद्धात्मा या महा पुरुष. १२ मिला.

क्या अजब था फ़क़ीर आलमगीर।
क़ल्ब[1] साफ़ी मिसाले[2]-गङ्गा नीर॥
उस की सूरत जमाले-सुरयानी[3]।
गुफ़्तगू में जलाले[4]-उरयानी॥
उस स्वामी ने कुछ न गिरदाना[5]।
ज़ोरो-ज़ारी[6]-ओ-ज़र से फुसलाना॥
शीशा आईनागर[7] को दिखलाया।
दंग जूं आईना वह हो आया॥
रह के शशदर वह बादशाहे-जहां।
बोला साधू से सूरते-हैरान॥
हिंद में क़द्र न परखते हैं।
हीरे को लीथड़ों में रखते हैं॥
चलियेगा साथ मेरे यूनां[8] को।
क़दम रंजा[9] करो मेरे हां को॥

[७८]

अवधूत का जवाब

क्या ही मीठी ज़ुबान से बोला।
रास्ती[10] पर कलाम को तोला॥
कोई मुझ से नहीं है खाली जा[11]।
पूर पूरण, ज़रा नहीं हिलता॥

---

१ शुद्ध अन्तःकरण. २ गंगा जल के समान. ३ अत्यन्त सुन्दरता. ४ स्पष्ट महिमा. ५ समझा. ६ ज़बरदस्ती, फुसलाना, भय और धन का लालच. ७ सिकन्दर की उपाधि है. ८ देश का नाम. ९ नगरीब को चलिये. १० सच्चाई. ११ जगह, स्थान.

जाऊं आऊं कहाँ किधर को मैं ? ।
हर मकाँ[1] मुझ में, हर मकाँ में मैं ॥
यह जो लाहूत[2] से निदा[3] आई ।
यवन[4] बेचारे को नहीं भाई ॥
फिर लगा सिर झुका के यूं कहने ।
इस के समझा नहीं हूं मैं मैंने ॥
"मुश्को-काफ़ूर, अतरो अम्बर बू ।
अस्पो-गुलज़ार[5], नाज़नीं-खुशरू[6] ॥
सीमो-ज़र[7], ख़िलअतों[8]-समा-ओ-सोद[9] ।
मेवे हर नौ[10] के, आबशारो-रवद[11] ॥
यह मैं सब दूंगा आप को दौलत ।
हर तरह होगी आप की ख़िदमत ॥
चलियेगा साथ मेरे यूनां को ।
चल मुबारक करो मेरे हां को" ॥
मस्त[12] मौला से तब यह नूर झड़ा ।
आस्मां से सितारह टूट पड़ा ॥
"झूठ झूठों ही को मुबारक हो ।
जैहल[13] नीचे दबे जो तारक[14] हो ॥
मैं तो गुलशन हूं, आप खुद गुलरेज़[15] ।
खुद ही काफ़ूर, खुद ही अम्बर[16]-रेज़ ॥

---

१ देश. २ ब्रह्म धाम, सत स्वरूप. ३ आवाज़. ४ सकन्दर से अभिप्राय है. ५ घोड़े और बाग़. ६ सुन्दर स्त्री, मित्र. ७ चाँदी सोना. ८ उत्तम वस्त्र. ९ राग रंग. १० हर प्रकार. ११ बहते हुए झरने. १२ मस्त फ़क़ीर फिर यूं बोला. १३ अज्ञान, अविद्या. १४ अन्धकार अथवा अन्धा. १५ पुष्प झड़ी, पुष्पों के गिराने वाला. १६ अंबर झाड़ने वाला अर्थात् सुगन्ध वाला.

सोने चांदी की आबो-ताब हूं मैं।
गुल की बू मस्ती-ए-शराब हूं मैं॥
राग की मीठी मीठी सुर मैं हूं।
दमक हीरे की, आबे-दुर[1] मैं हूं॥

खुश मज़ा सब तुआम[2] हैं मुझ से।
अस्प की खुश खराम[3] है मुझ से॥
रक्स[4] है आबशार[5] का मेरा।
नाज़ो-इश्वा[6] है यार का मेरा॥

ज़र्क बर्क सुनेहरी ताज तेरा।
मेरा मोहताज़ है, मोहताज़ मेरा॥
चान्दनी मुस्तार[7] है मुझ से।
सोना सूरज उधार ले मुझ से॥

कोई भी शै[8] जो तेरे मन भाई।
मैंने लज़्ज़त अता[9] है फ़रमाई॥
दे दिया जब फिर उस का लेना क्या।
शाहे-शाहां को यह नहीं ज़ेबा[10]॥

करके बख़शिश मैं बाज़[11] क्यों लूंगा?।
फेंक कर थूक चाट क्यों लूंगा॥
प्रकृति को तो ईद[12] मुझ से है।
मांगू अब मैं, वईद[13] मुझ से है॥

---

१ मोती की चमक. २ खुराक, भोजन. ३ उत्तम चाल. ४ नृत्य. ५ पानी का झरना. ६ नाज़ नख़रे. ७ मांगी हुई. ८ वस्तु. ९ बख़्शी. १० योग्य, उचित. ११ फिर वापस. १२ आनन्द मंगल. १३ दूर (अनुचित).

खुद खुदा हूं, सरूरे[1]-पाक हूं मैं ।
खुद खुदा हूं, ग़रूरे-पाक[2] हूं मैं ॥"
ऐसा ऐसा जवाब यह सुन कर ।
भड़क उठा ग़ज़ब से असकन्दर ॥
चेहरा गुस्से से तमतमा आया ।
खून-रग जोश मारता आया ॥
खैंच तलवार तान ली झट पट ।
"जानता है मुझे तू ऐ नट खट !" ॥
शाहे-ओ-जाहे-मुल्के दारा जम[3] ।
मैं हूं शाह सकन्दरे-आज़म[4] ॥
मुझ से गुस्ताख गुफ्तगू करना ।
भूल बैठा है क्यों अभी मरना ? ॥
काट डालूंगा सिर तेरा तन से ।
ज़रबे-शमशेर से अभी दम से ॥
देख कर हाल यह सिकन्दर का ।
साधु आज़ाद खिलखिला के हँसा ॥
"किज़ब[5] ऐसा तू ऐ शहनशाह ! ।
उमर भर में कभी न बोला था ॥
मुझ को काटे ! कहां है वह तलवार ? ।
दाग़ दे मुझ को ! है कहां वह नार[6] ? ॥
हां गलायेगा मुझे ! कहां पानी ? ।
बाद[7] सुखा ही ले । मरे नानी ॥

१ शुद्ध आनन्द, २ शुद्ध अहंकार, या शुद्ध आत्मा, ३ जमशेद और दारा बादशाह के मुल्कों का बड़ा भारी पद या मान-पाया बादशाह, ४ सबसे बड़ा, ५ झूठ, ६ अग्नि, ७ वायु.

मौत को मौत आ न जायेगी।
क़स्द[1] गंगा जो करके आयेगी॥
बैठ बालू में बच्चे गंगा तीर।
घर बनाते हैं शाद या दिलगीर॥
फ़र्ज़ करते हैं रेत में ख़ुद घर।
यह रहा गुस्लख़ा-व-दफ़्तर है दर[2]॥
ख़ुद तसव्वर[3] को फिर मिटाते हैं।
ख़ाना[4] अपना वह आप ढाते हैं॥
वहम का घर बना था वहम मिटा।
बालू था बाद[5] में जो पहिले था॥
रेग सुथरा था, नै[6] ख़राब हुआ।
फ़र्ज़ पैदा हुआ था ख़ुद बिगड़ा॥
रास्त तू उस ज़बान से सुनता है।
घर पड़ा आप जाल बुनता है॥
तू जो समझा यह जिस्म मेरा है।
फ़र्ज़ तेरा है, फ़र्ज़ मेरा है॥
सिर यह तन से अगर उड़ा देगा।
फ़र्ज़ अपने ही को गिरा देगा॥
रेत का कुछ न तो बुरा होगा।
ख़ाना[7] तेरा ख़राब ही होगा॥
मेरी वुसअ़त[8] को कौन पाता है।
मुझ में अर्ज़ो-समा[9] समाता है॥

---

१ इरादा. २ द्वार. ३ कल्पना या कल्पित. ४ घर, ५ पीछे. ६ नहीं. ७ घर. ८ चौड़ाई, विशालता. ९ पृथ्वी आकाश.

ताज जूते के दरम्यान् वाक्या।
मैं नहीं हूं, न तू है जाँ! वाक्या॥
इतना थोड़ा नहीं हदूद-अर्वा[1]।
पगड़ी ओड़ा नहीं हदूद-अर्वा॥
अपनी हत्तक यह क्यों करी तुमने?।
बात मानी मेरी बुरी तू ने?॥
क्यों तिनक[2] कर दिया है आत्म को।
एक जोहड़[3] बनाया कुलजम[4] को॥
खुद तो मग़लूब[5] तुम ग़ज़ब[6] के हो।
शाहे-जज़बात[7] से भी अड़ते हो॥
गुस्सा मेरा ग़ुलाम तुम उस के।
बन्दा-ए-बन्दगां[8], रहो बच के॥"
गिर पड़ी शाह के हाथ से शमशेर।
निगाहे[9]-आरफ से हो गया वह ज़ेर[10]॥
क्या अजब! यह तो ज़ेरे-आख़ताहे[11]-तेग़।
गरजता था मसाले-बारां-मेघ[12]॥
शाह के ग़ैज़ो-ग़ज़ब[13] को जूं मादर[14]।
नाज़ तिफलक[15] का जानता था गर॥
और वह शाह सकन्दरे-रूमी।
बात छोटी से हो गया ज़खमी॥

---

१ सीमा, चौहद्दी. २ तुच्छ, छोटा, मामूली ३ तालाब, छप्पर, तुच्छ परिच्छिन्न. ४ समुद्र. ५ अधीन, वशमें आये हुये. ६ क्रोध. ७ काम क्रोधादि को वश में रखने वाला बादशाह. ८ नौकरों के नौकर. ९ ज्ञानवान् की दृष्टि से. १० अधीन, नीचे; शर्मिन्दा. ११ खिंची हुई तलवार के तले. १२ वर्षा वाले बादल के समान. १३ गुस्से, क्रोध को. १४ माता के समान. १५ बच्चे का रोष, नख़रा.

पास उस वक़्त अपनी इज़्ज़त का।
हर रो आनर को एक जैसा था॥
लेक[1] शाह की थी जिस्म में आनर[2]।
शाहे-शाह[3] का था आतमा में घर॥

क़िला मज़बूत उस का ऐसा था।
ऊँचे सूरज से भी परे ही था॥
कर सके कुच्छ न तीर की बुछार।
खाली जाये बन्दूक़ की भर मार॥

इस जगह ग़ैर[4] आ नहीं सकता।
यहाँ से कोई भी जा नहीं सकता॥
इस बलन्दी से सरफ़राज़ी से।
क़िला-ए मज़बूत शेरे-ग़ाज़ी से॥

यह ज़मीन् और इस के सब शाहान्।
तारा साँ, ज़र्रह[5] साँ, कि नुक़ता साँ॥
नुक़ता मौहूम[6] बन, हुये नाबूद[7]।
एक वहदत[8] हूं, हस्तो-बाशदो-बूद[9]॥

उड़ गये जूं सपाहे-तारीकी[10]।
ताब किस को है एक झाँकी की? ॥
रुए-आलम[11] पै जम गया सिक्का।
शाहे-शाहां हूं, शाहे-शाहां शाह॥

---

१ परन्तु, लेकिन. २ इज़्ज़त. ३ यहाँ मुराद है फ़क़ीर से ४ अन्य, दूसरा. ५ परमाणु. ६ कल्पित. ७ मिथ्या, असत. ८ अद्वैत. ९ है, होगा, था; वर्तमान, भविष्य, भूत. १० अन्धकार की सेना (अर्थात् तारे) के समान. ११ समस्त संसार.

अहले-हैयत[1] ने भी पढ़ा होगा।
नुक़ता क्या खूब यह रियाज़ी का ॥
जबकि लाज़ुंब[2] एक सितारे का,
बैठ में हो हसाब या लेखा ॥
सिफ़र सौं यह ज़मीने-पेचां[3]-पेच।
हेच[4] गिन्ते हैं, हेच मुतलक़[5] हेच ॥
अब कहो ज़ाते-बेहत[6] के होते।
क्यों ना अजसाम[7] जान को रोते ? ॥

[७६]

जिस्म से बेतअ़ल्लुक़ी

(देहाध्यास रहित अवस्था)

बादशाह इक कहीं को जाता था।
उस तर्फ़ से फ़क़ीर आता था ॥
बादशाह को घमंड ताज का था।
मस्त को अपनी ज़ात का था ॥
मस्त चलता था चाल मस्ती की।
राह न छोड़ा सलाम तक न की ॥
बादशाह तुर्श[8] हो के यूँ बोला।
"सख़्त मग़रूर शोख़ गुस्ताख़ा ! ॥

---

१ नजूमी, ज्योतिष के जानने वाले. २ अचल. ३ पेचदार पृथिवी. ४ तुच्छ. ५ नितान्त. ६ शुद्ध स्वरूप. ७ शरीर, नाम रूप. ८ कड़वा होकर.

बादशाह हूं, तुझे सज़ा दूंगा।
जिस्म तेरा अभी जला दूंगा" ॥
तिस पै मोला कबीर[1] आलीजाह[2]।
शाहे-शाहां फ़क़ीर लापरवाह ॥
जिस का मुबद्दा-ओ[3]-कुतब आत्म था।
मह्वरे-गुफ़्तगू[4] भी आत्म था ॥
जिस्म पोयन्ट[5] से कुच्छ न करता था।
आत्मा ही था, नूर झरता था ॥
पास धक धक जले थी इक भट्टी।
टाँग उस में फ़क़ीर ने धर दी ॥
तब मुख़ातब हो शाह से बोला।
नक़्शे-तस्वीर! शेरे-क़िर्तासा[6]! ॥
मैं हूं क़िर्तास[7], उस पै तू तस्वीर।
ज़ाते-असली हूं, फ़र्ज़ है तस्वीर ॥
नक़्श दावा करे, तकब्बर[8] है।
क़िबराई[9] मेरी तो अज़हर[10] है ॥
जिस्म के इतबार ही से सही।
मैं हूं आज़ाद उस तरह से भी ॥
क़तल करने का क़दर है तेरा।
झिड़कना इख़्तियार है मेरा ॥

---

१ महान्. २ बड़े पद या दर्जे वाला, परम पूज्य. ३ शुरू और पूर्ण अथवा आदि और अन्त. ४ पूर्ण अर्थात वाणि का आधार. ५ शरीर की लिहाज़ या दृष्टि से. ६ ऐ काग़ज़ के शेर! ७ काग़ज़. ८ अहंकार. ९ बड़ाई, महत्व. १० ज़ाहर, विद्यमान, प्रकट.

क़तलो-धमकी का गर्म है बाज़ार।
सौदा मेरा है, मैं हूं ख़ुदमुख़तार॥
जान लेना नहीं तेरे बस में।
तेरी तम्बीह[1] है मेरे बस में॥
तू जलायेगा, दर्द क्या होगा?।
देख ले, पैर जल गया सारा॥
इस से बढ़ कर तू सज़ा क्या देगा।
मेरा इक बाल भी न हो बांका॥
आग में डाल दे, तू इस[2] तन को।
ख़्वाह शोलों[3] में डाल उस[4] तन को॥
दोनों हालत में मुझ को यकसां है।
कुछ न बिगड़ा न बिगड़ सकता है॥
तुम से बढ़ कर तुम्हारा अपना आप।
मैं ही तुम हूं, न तुम हो अपना आप॥
आग मेरा ही एक तजल्ला[5] है।
रोब[6] तेरा भी ज़ोर मेरा है॥
मुझ में सब जिस्म बुलबुले से हैं।
एक टूटेगा और क़ायम[7] हैं॥
साधू जब कर रहा था यह तक़रीर[8]।
शाह का दिल होगया वहीं नख़चीर[9]॥
दस्त बस्ता[10] खड़ा हुआ आगे।
सायाँ! आरफ़[11] हैं आप अल्ला के॥

१ सज़ा देना, क़ैद करना २ फ़क़ीर के शरीर से अभिप्राय है. ३ अग्नि की ज्वाला. ४ बादशाह के शरीर से अभिप्राय है. ५ तेज-प्रकाश ६ भय डर ७ स्थिर. ८ वक्तृता ९ शिकार गाह, घायल. १० हाथ, जोड़ कर ११ ब्रह्मवित्.

तर्क दुन्या की, आखरत[1] की तर्क।
तर्क मोला की, तर्क की भी तर्क॥
दर्जा अव्वल के आप त्यागी हैं।
बारे[2] दर्शन के हम भी भागी हैं॥

[८०]

फ़क़ीर का कलाम

क़दम-बोसी[3] को शाह झुका ही था।
कल्मा बेसाख़ता[4] यह तब निकला॥
ऐ शहनशाह! तुम मुबारक हो।
तुम ही सब से बड़े तो तारक[5] हो॥
अपनी कीजियेगा क़दम-बोसी खुद।
तुम ही त्यागी हो, तुम ही जोगी खुद॥
कुच्छ नहीं इस फ़कीर ने त्यागा।
ज़ात के राज पाठ में जागा॥
ख़ाक[6] ऊपर से जब हटा बैठा।
मादने-बेबहा[7] को पा बैठा॥
कूड़ा करकट उठा दिया इस ने।
महल सुथरा बना लिया इस ने॥
जेहल[8] को त्याग आप हो बैठा।
ज़ात तेरी तरह न खो बैठा॥

१ परलोक. २ एक बार. ३ चरण वन्दना को ४ तत्काल, बिना सोचे समझे, क. ५ त्यागी. ६ यहां देहाध्यास शरीर के अभिमान है. ७ सल्तनत राज की, अखण्ड-आत्म (स्वआत्मा) या आत्म तत्व. ८ अज्ञान, अविद्या.

लैक[1] तुम ने स्वराज्य छोड़ा है।
कूड़ा रक्खा है, महल छोड़ा है॥
राख को तुम अज़ीज़[2] रखते हो।
असल मादन[3] को तुम न तकते हो॥
खाक सारे लपेट ली तुम ने।
क्या रमाई भभूत है तुम ने॥
जुड़ गये हो अविद्या से आप।
जोगी कैसे जुड़े बला के आप॥
तुम ही जोगी हो, मैं न जोगी हूं।
ज़ाते-तन्हा[4] हूं, मैं वियोगी[5] हूं॥
सुन के शाह, यह फ़क़ीर की तक़रीर।
सकता[6] ग़श कर गया, बना तस्वीर॥

[८१]

गार्गी

जनक राजा की हुक्मरानी में।
उन विदेहों[7] की राजधानी में॥
नंगी फिरती थी गार्गी लड़की।
नूर चितवन में था जलाल भरी॥
चिहरे से रोब दाब बरसे था।
हुसन को माहताब[8] तरसे था॥

---

१ लेकिन, किन्तु. २ प्रिय. ३ खान, पदार्थ या तत्त्व. ४ अद्वैत तत्त्व. ५ अकेला, पृथक या असंगात्मा. ६ बेहोश, आश्चर्यचकित. ७ विदेह कुल. ८ चाँद.

ज्ञान की असल ज़ात की खूबी।
उस के हर रोम से चमकती थी॥
तक सके आँख भर के उस रू[1] को।
मारे दहशत[2] से ताब[3] थी किस को?॥
पाकबाज़ी[4] का वह मुजस्सम[5] नूर।
शप्पर[6] चश्म को भगाता दूर॥
एक दफ़ा मार्फ़त[7] की पुतली पर।
करती शक थी निगाहे-ऐब[8]-निगर॥
दफातन गार्गी यह भाँप[9] गयी।
आन कालब[10] में सब की काँप गयी॥
ऐब-बीनों[11] का कुफर तोड़ दिया।
रूए-[12]अजसाम-बीन को मोड़ दिया॥
शान से पुर दहान[13] यूं खोला।
नाफा तातार था, कि अग्नि था॥
मैं वह खंजर हूं, तेज़ दम ज़ालिम!।
लोहा माने है मिहरो[14]-माह अंजुम[15]॥
तीन जामों[16] में, या मियानों[17] में।
छिप के बैठी हूं तीन खानों में॥

---

१ मुख. २ मारे भय के. ३ शक्ति. ४ पवित्रता. ५ प्रकाश का शरीर अर्थात् प्रकाशस्वरूप. ६ चमगीदड़, प्रकाश में न देखने वाला. ७ आत्मज्ञान या ज्ञानस्वरूप. ८ बुराई देखने वाले की दृष्टि. ९ ताड़ गयी, समझ गयी. १० तन. ११ दोष देखने वालों का. १२ पृथिवी के पदार्थ (रूप) देखने वाले अर्थात् पाप दृष्टि वाले के मुख को. १३ मुंह. १४ सूर्य चन्द्रमा. १५ सितारे. १६ पर्दों (कपड़ों अर्थात् शरीरों). १७ कोश, ढक्कनों में.

दूर गर परदा-ए-हया[1] करदूं।
फ़ितना[2] मैहशर अभी बपा[3] करदूं॥
शम्स[4] कब ताब[5] फ़लक की लाये।
चकाचूंदी सी आँख में आये॥
देख मुझ को फ़लक[6] के सब अजराम[7]।
मिसले-शबनम[8] उड़ें, करें आराम॥
कोहर[9] ऐसे यह दुन्या उड़ जाये।
देखने की मुझे सज़ा पाये॥
काश[10]! देखो मुझे, मुझे देखो।
हर सरे[11]-मू से चश्मे-हैरत[12] हो॥
मैं ब्रहना[13] थी तुम ने समझा क्यों?।
ख़ाक इस समझ पर, यह समझा क्यों?॥
जिस्म में हूं, यह कैसे मान लिया?।
हाय! कपड़ों को जान ठान लिया॥
खप गया जिस के दिल में हुसन[14] मेरा।
दंग सकते[15] का एक आलम[16] था॥
जान जब हो चुकी हो नोछावर।
बोलो, वह फिर कहां रहा नाज़र[17]?॥
नाज़रो-नज़र[18] आप खुद मंज़ूर[19]।
वसल कैसे कहां हुआ महजूर[20]॥

---

१ लज्जा का परदा. २ क़ियामत (प्रलय) का समय. ३ अभी पैदा कर दूं. ४ सूर्य. ५ शक्ति, तेज. ६ आकाश के. ७ तारे इत्यादि. ८ ओस के समान. ९ धुंआ या ओस के समान. १० ईश्वर करे. ११ पांव के सिरे से. १२ हैरानी की निगाह, आश्चर्यमय दृष्टि. १३ नंगी. १४ सौन्दर्य. १५ आश्चर्य. १६ विचित्र अवस्था. १७ द्रष्टा. १८ द्रष्टा और दृष्टि. १९ दर्शन किया गया, या दृश्य. २० जुदा, पृथक.

टूटे पड़ता है, हाय हुसन मिरा।
पर न गाहक कोई मिला उस का॥
खुद ही माशूक़ आप आशक हूं।
नै[1] ग़लत! मैं तो इशक़े-सादक़[2] हूं॥
सारे कब नूर से नियारे[3] हैं।
तुम हमारे हो हम तुम्हारे हैं॥
ऐ अदू[4]! ऐंठ ले, बिगड़ तन ले।
सखत कह दे, कि सुस्त ही कह ले॥
जोशे-गुस्सा निकाल ले दिल से।
ताक़ते-तैश[5] आज़मा तू ले॥
मुझे भी इन तेरी बातों से रोक थाम नहीं।
जिगर में धाम न कर लूं, तो राम नाम नहीं॥

[८२]

गार्गी से दो दो बातें।

राम भी एक बात जड़ता है।
खंजरे-तेज़ दम से लड़ता है॥
हुसन की बेहर[6], ग़ैरते-खूबी[7], !!
इक नज़र हो ज़री इधर तो भी॥
माना, दीदों[8] में है तेरे लाली।
जोत आंखों में है कपल[9] वाली॥

---

१ नहीं नहीं यह ग़लत है. २ सच्चा असली इशक़ अथवा प्रेम मैं हूं. ३ जुदा। ४ शत्रु, दुश्मन, ५ गुस्से का बल। ६ समुद्र: ७ दूसरे को लजा देने वाली सुंदरता. ८ नेत्रों. ९ कपिल मुनी का नाम.

भसम करती है तू हज़ारों को ।
कौन रोके भला अंगारों को ॥
लेक[1] मैं एक हूं, हज़ार नहीं ।
राम पर तेरा इख्त्यार नहीं ॥
झांक आईने[2] में दिल के देख ले ।
तू ज़रा गर्दन झुका कर पेख ले ॥
क़ल्ब[3] किस से तेरा मुनव्वर[4] है ।
जल्वागर[5] कौन उस के अन्दर है ॥
च्यों जबीं[6] हो के कुटिल कर भृकुटी ।
तिर्छी चितवन नज़र कीये टेढ़ी ॥
क्यों ग़ज़ब तीर पास रखता है ।
राम भृकुटि में वास रखता है ॥
छोड़ दो घूर कर दिखानी आँख ।
राम बैठा है तेरी दाहनी आँख ॥
तलख[7] कामी से किस को दी दुश्नाम[8] ? ।
शोह[9]-रग और कंठ में है राम ॥
चल करो गर दिमाग़ में तकरार ।
राम बैठा है तेरे दसवें द्वार ॥
हर तरह राम से गुरेज़[10] नहीं ।
जुदा आहन[11] से तेग़[12]-तेज़ नहीं ॥

---

१ किन्तु. २ शीशा. ३ अन्तःकरण. ४ प्रकाशित. ५ प्रकाशमान, वा प्रकाश देने वाला, चमकाने वाला. ६ क्रुद्ध होकर, माथे पर बल डालकर. ७ गुस्सा होकर खराब बोली बोलना. ८ गाली, अपशब्द. ९ गले के भीतर की रग (नाड़ी). १० भागना. ११ लोहा. १२ तेज़ तलवार.

ऐ मुहीते-किनार[1] ना पैदा ! ।
हुसनो-ख़ूबी पे तेरी ख़ुदा शैदा[2] ॥
बैहरे-मव्वाज[3] है तलातम[4] में ।
हुसन तूफ़ां है तेरा आलम में ॥
"मैं ब्रैहना[5] नहीं" यह क्यों बोला ।
सामने मेरे कुफ़र क्यों तोला ? ॥
पहिन कर आज मौज की चादर ।
नख़रे टख़रे हमीं से यह नादर ! ॥
"मैं ब्रैहना नहीं" यह क्या मानी[6] ? ।
बुर्क़ा[7] ओढ़ा हुबाब[8] लायानि[9] ! ॥
तिनका भर, किश्ती भर, जहाज़ सही ।
कोह[10] भर, बैहर भर, यह नाज़ सही ॥
हाय तुम ने तो क्या सितम[11] ढाया ।
जुमला[12] आलम दरोग़[13] वह आया ॥
नून आँखों में कर दिया तुम ने ।
झूठ सच कर दिखा दिया तुम ने ॥
तेरे पर्दे सभी उठा दूंगा ।
झूठ बोले की मैं सज़ा दूंगा ॥
नाम रूपों की बू उठा दूंगा ।
हू ही[14] हू हूबहू दिखादूंगा ॥

---

१ ऐ अनन्त सीमा, अछूता वा विशालता रखने वाली ! २ आशक, क़ुर्बान. ३ लेहरों वाला समुद्र. ४ तूफान (लहराना). ५ नंगा. ६ मतलब. ७ पर्दा. ८ बुलबुला. ९ बग़ैर मतलब के, व्यर्थ. १० पर्वत सम. ११ अन्याय. १२ समस्त. १३ झूठा (असत्य). १४ ईश्वर ही ईश्वर वह सब है. (सर्वं खल्विदं ब्रह्म).

हाय ! इज़हार[1] आज लूं किस से ? ।
रू बरू हो पड़ा पाले किस से ? ॥
आप ही गार्गी हूं, आप हूं राम ।
कुच्छ नहीं काम, रात दिन आराम ॥

[८३]

चाँद की करतूत ।

अजब घूमते घूमते राम को ।
मिला इक तालाब सरे-शाम[2] को ॥
जुलाहे की थी पास इक झोंपड़ी ।
थी लड़की वहाँ खेलती इक पड़ी ॥
हवा चुपके से सरसराने लगी ।
उधर चाँदनी दम दमाने लगी ॥
मैं क्या देखता हूं कि लड़की वहीं ।
है बुत बन रही और हिलती नहीं ॥
खुला मुंह है भोले से मुसका[3] रही ।
है आँखों से क्या चाँद को खा रही ॥
उतर आँख से दिल में दाखिल हुआ ।
दिले-साफ में चाँद सब घुल गया ॥
कहो तो अरे चाँद ! क्या बात है ? ।
यह क्या कर रहे हो, यह क्या घात है ॥

---

१ बियान, २ सायंकाल के समय, ३ मुसकराना, धीमे २ हँसना.

पड़ा अक्स[1] ही तेरा तालाब पर ।
पै लड़की के दिल में किया तू ने घर ॥
दिया आलिमों[2] को न जिस राज़[3] को,
दिखाया न जो दूरबीन-बाज़[4] को ॥
रियाज़ी[5] का माहिर न जो पा सका ।
न हैयत[6] से जो भेद कुछ आ सका ॥
जुलाहे के घर में दिया सब बता ।
अरे चाँद ! क्योंजी ! हुआ तुझ को क्या ?
वह नन्हे[7] से दिल में यह आराम क्या ।
ग़रीबों के घर में तेरा काम क्या ? ॥

[८४]

आरसी

दुलहन को जान से बढ़ कर भाती है आरसी[8] ।
मुख साफ चाँद का सा दिखाती है आरसी ॥
हस्ती,-इल्म,-सरूर,[9] का मज़हर[10] तो ख़ूब है ।
हां इस से आबरू[11] को सजाती है आरसी ॥
हम को बुरी बला से यह लगती है इसलिये ।
वाहद[12] को क़ैदे-दुई[13] में लाती है आरसी ॥

---

१ प्रतिबिम्ब. २ बुद्धिमानों, ज्ञानियों को, ३ भेद, गुह्य बात. ४ दूरदृष्टा या त्रिकाल दर्शी. ५ गणित शास्त्र में निपुण. ६ शकल का इल्म, तस्वीर या रूप की विद्या या ज्योतिष शास्त्र. ७ छोटे से. ८ अंगूठे में डालने का ज़ेवर जिस में शीशा लगा होता है. ९ सच्चिदानन्द. १० ज़ाहिर होने का स्थान. ११ शान, इज़्ज़त, महिमा. १२ एकता. १३ द्वैत के बंधन में.

अज़ बस ग़नी[1] है हुसन में वह अपने माहरू[2] ।
हैरत है उस के सामने आती है आरसी ॥
खूबी है रूये[3]-खूब में, शीशे में कुच्छ नहीं ।
हाथों में रूनुमाई[4] को जाती है आरसी ॥
ज़ाहर में भोली भाली, हैराँ शकल वले[5] ।
क्या झूठ को यह रास्त[6] बताती है आरसी ॥
गैहनों में टुकड़ा आयीना का है हक़ीरतर[7] ।
रुतवा[8] वले सफाई से पाती है आरसी ॥
देखूं मैं या न देखूं, हूं आफताब[9] रू ।
ताहम हमारे दिल को लुभाती[10] है आरसी ॥
गंगा सुमेरू[11] अवर[12] सही, मिहर[13]-ओ माह[14] सही ।
मुखड़े का अपने दर्श[15] कराती है आरसी ॥
है शौक़े-दीद[16] चेहरा-ए[17]-तावां का राम को ।
यकसू[18]-दिली हरआन[19] बनाती है आरसी ॥

[८५]

सदाये आस्मानी (आकाशवाणी)

हाये चेचक[20] ने वाये चेचक ने ।
इस अविद्या के हाये चेचक ने ॥

---

१ सौन्दर्य में अत्यन्त धनी अर्थात अत्यन्त सुन्दर. २ चाँद के मुखड़े वाला (प्यारा). ३ सुन्दर रूप वा मुख. ४ रूप को दिखाने को. ५ लेकिन. ६ सच. ७ तुच्छ. ८ दरजा पद. ९ सूर्य मुख (प्रकाश रूप वाला). १० मोह लेती है. ११ पर्वत. १२ बादल. १३ सूर्य. १४ और चाँद. १५ दर्शन. १६ देखने का शौक़. १७ प्रकाशस्वरूप. १८ एकाग्रता. १९ प्रत्येक क्षण. २० माता नाम की बीमारी को कहते हैं (Small Pox), यहां द्वैत रूपी बीमारी से अभिप्राय है.

कर दिया आत्मा क़ीबुल[1] मर्ग।
क़ैदे-कसरत[2] में हो गया संसर्ग[3] ॥
चेहरा रौशन था साफ़ शीशा सा।
हो गया दाग़ दाग़ यह कैसा ? ॥
मिहरे-तलअ़त[4] पै दाग़ आन पड़े।
तारःसूरज पै कैसे आन चढ़े ? ॥
एक रस साफ़ रूये-ज़ेबा[5] था ॥
दाग़े-कसरत का लग गया धब्बा ॥
हो गया पुरुप माल माता[6] का।
यानि वाहन[7] यह शीतला का हुआ ॥
मर्ज़ ऐसा बढ़ा यह मुतअ़द्दी[8] ।
हिन्द सारे की खबर इसने ली ॥
वह दवा जिस से मर्ज़ जायेगा।
गौ-माता[9] के थन से आयेगा ॥
पुर ज़रूरी है वैक्सीनेशन[10] ।
वरना मरती है यह अभी नेशन[11] ॥
छोड़ दो तुम ज़री तअ़स्सव[12] को।
टीका लगवाइयेगा अब सब को ॥

---

१ मृत्यु के तुल्य. २ नानत्व के बन्धन में. ३ आवेश, प्रवेश. ४ सूर्य जैसे सुन्दर मुख पर. ५ सुन्दर रूप. ६ शीतला देवी की सवारी. ७ सवारी अर्थात् गधा क्योंकि माता का वाहन गधा होता है. ८ बढ़ जाने वाला, फैल जाने वाला. ९ यहां उपनिषद् से अभिप्राय है. १० (अद्वैत का) टीका लगाना. ११ जाति, मसल, क़ौम. १२ तर्फ़दारी, पक्ष.

गाये के थन से अलफ़[1] की नशतर।
ला रही है इलाज, लीजे कर॥
शहर हर इक में हर गली घर घर।
टीका अद्वैत का लगा देना॥
बच्चे लड़के बड़े हों या छोटे।
यह सराअत[2] भरा दवा देना॥
गर न मानें तो पकड़ कर बाज़ू।
टीका यह तीन[3] जा लगा देना॥
दर्द भी होगा पीड़ भी होगी।
डर का नोटस[4] न तुम ज़रा लेना॥
"शुद्ध तू है" "निरञ्जनोऽसि[5] त्वम्"।
लोरी रोते समय यह गा देना॥
फिर जो चेचक के ज़ख़म भर आयें।
शीतला भी ख़ुदा मना देना॥
ग़ैर[6]-बीनी-ओ-ग़ैर दानी[7] को।
मार कर फूंक इक उड़ा देना॥
फूंक कैलास से उठा है ओम्।
ओम् तत् सत् है, ओम् तत् सत् ओम्॥
प्यारे हिन्दुस्तान्! फलो फूलो।
पौदे[8] पौदे को ब्रह्म विद्या दो॥

---

१ अलफ़ से अभिप्राय यहां वह मासिक पत्र है, जिसके सम्पादक वास्तव में स्वामी रामजी महाराज थे और जिस पत्र के अन्त में यह कविता दर्ज है. २ जल्दी अन्दर घुस जाने वाला या शीघ्र प्रभाव डालने वाला. ३ तीन जगह (यहां तीन शरीरों से मुराद है, कारण, सूक्ष्म, स्थूल) ४ ख्याल, ध्यान. ५ तू कल्याण रूप है. ६ द्वैत दृष्टि, भेद दृष्टि. ७ भेद ज्ञान. ८ बूटे बूटे को, प्रत्येक पौधे को.

यह है वह आबे-गंग[1] मर्दुमे[2]-खेज़ ।
बूटे बूटे को कर जो दे ज़र[3]-रेज़ ॥
वन है या बाग़े-खूबसूरत है ।
सब को इस आब[4] की ज़रूरत है ॥
रौशनी यह सदा मुबारक है ।
जान सब की है, यह मुबारक है ॥
सर्व[5] हो, गुल, ग्याह[6], गन्दुम[7] हो ।
रौशनी बिन तो नाक में दम हो ॥
सिफलापन[8], दासपन, कमीनापन ।
छोड़ दे हिंद और चलता बन ॥
काशी, मक्का, युरूशलम[9], पैरिस ।
रूस, अफरीका, अम्रिका, फारस ॥
बैहरो-बर[10], तूल[11] व अर्ज़ो-अर्ज़े-बल्द[12] ।
और मरीखे-सुर्खो[13] माहे-ज़र्द[13] ॥
कुतब-तारा[15], फलक[16] के कुल अज्म[17] ।
काले अजराम[18] जो न जानें हम ॥
यह जगह, वह जगह, कहीं, हर जा ।
वह जो था, और है, कभी होगा ॥

---

१ गंगाजल २ आँख जगाने वाला अथवा आँख खोलने वाला या पुरुषों को जगाने वाला. ३ मालदार, हरा भरा. ४ पानी. ५ सरु वृक्ष का नाम है. ६ घास. ७ गेहूं अनाज. ८ कमीनापन, कंजूसी. ९ ईसाइयों का तीरथ. १० खुश्की और तरी (पृथ्वी समुद्र.) ११ समस्त लम्बाई. १२ समस्त चौड़ाई. १३ मंगल तारा. १४ बसन्त ऋतु का मास. १५ ध्रुव. १६ आकाश. १७ सारे तारे. १८ आकाश के पदार्थ.

मुझ में सब कुछ है, सब मुझी में है।
मैं ही सब कुछ हूं, ग़ैरे-मन ला शै[1] ॥
ऐ शिखर सीम-तन[2] हिमालय की।
ब्रह्म विद्या की तू ही माता थी॥
गोद तेरी हरी रहे हर दम।
गिरजा[3] पैहलू में खेलती हर दम॥
मौनसूनों[4] को यह बता देना।
इन्द्र और वरुण को सुझा देना॥
वर्षा जब देश में करेंगे जा।
नाज में यह असर खपा देना॥
चाख भी ले जो नाज मेवों को।
नशा वहदत[5] में मस्त फ़ौरन हो॥
खुद बखुद उस से यह कहा देना।
शक शुभा एक दम मिटा देना॥
कूक कैलास से उठा है ओम्।
ओम् तत् सत् है, ओम् तत् सत् ओम्॥
ऐ सबा[6]! जा गुलों की मैहफ़ल में।
शेर मर्दों के दल में बादल में॥
चौंक उट्ठें जो तेरी आहट[7] से।
कान में उन के सरसराहट से॥

---

१ मेरे विना सब तुच्छ है अर्थात् मेरे विना कुछ नहीं. २ चांदी के तन वाली अर्थात् बर्फ से ढकी हुई हिमालय की चोटी. ३ पार्वती, ब्रह्म विद्या से अभिप्राय है ४ ग्रीष्म ऋतु में जो तूफ़ान वायु का होता है मेघकाल की वायु. (Monsoons). ५ अद्वैत ६ पर्वा वायु (प्रातःकाल की वायु). ७ आवाज़

चुपके से राज़[1] यह सुना देना।
शक शुभा एक दम मिटा देना॥
कूक कैलास से उठा है ओम्।
ओम् तत् सत् है, ओम् तत् सत् ओम्॥
बिजली ! जा कर जहान पर कौंदो।
तीराखानों[2] को जगमगा तुम दो॥
दमक कर फिर यह तुम दिखा देना।
शक शुभा एकदम मिटा देना॥
कूक कैलास से उठा है ओम्।
ओम् तत् सत् है, ओम् तत् सत् ओम्॥
द्वैत के, पक्षपात के, भ्रम के।
कड़क कर राद[3] ! दो छुड़ा छक्के॥
गर्ज कर फिर यह तुम सुना देना।
शक शुभा एकदम मिटा देना॥
कूक कैलास से उठा है ओम्।
ओम् तत् सत् है, ओम् तत् सत् ओम्॥
आओ जुग[4] जुग जीयोगी गंगा जी।
ले अगर घूंट कोई जल का पी॥
उस के हर रोम में धसा देना।
शक शुभा एकदम मिटा देना॥
कूक कैलास से उठा है ओम्।
ओम् तत् सत् है, ओम् तत् सत् ओम्॥

---

१ गुप्त भेद. २ अंधेरी कोठी में रहनेवालों को ३ बिजली. ४ युग से अभिप्राय है.

गाओ वेदो ! सना[1] मेरी गाओ ।
आओ जीते रहो, सदा आओ ॥
पेहले-टिटबिट[2] हो, कोई पंडित हो ।
भक्ति तुमरी सदा अखंडित हो ॥
खैंच कर कान यह पढ़ा देना ।
शक शुभा एकदम मिटा देना ॥
कूक कैलास से उठा है ओम् ।
ओम् तत् सत् है, ओम् तत् सत् ओम् ॥
पेहले-अखबार ! अपने पेपर्स[3] पर ।
कूक कैलास की छपा देना ॥
पेहले-तालीम ! मदरस्सों में तुम ।
बच्चों कच्चों को यह पिला देना ॥
नाज़रीन[4] ! हिन्दुओं के जल्सों पर ।
कूक से सब के सब जगा देना ॥
चौक, मन्दिर में, रेल में जाकर ।
ऊँचे पञ्चम की सुर से गा देना ॥
कूक कैलास से उठा है ओम् ।
ओम् तत् सत् है, ओम् तत् सत् ओम् ॥
रिश्ता, नाता, कौम, समधी सब ।
शादी, जलसे पै हों इकट्ठे जब ॥
शादी[5]-जोयां हों, हेच दुन्या में ।
भूल बैठे हों यह कि "हूं क्या मैं" ॥

---

१ महिमा तारीफ़. २ वर्तमान काल का पढ़ा हुआ प्यारा. ३ अखबारों में. ४ हरा सोत, ऐ देखनेवालो. ५ ब्याह करनेवाले, आनन्द ढूंढनेवाले.

चोट नक्कारे पर लगा देना।
शक शुभा एकदम मिटा देना॥
कूक कैलास से उठा है ओम्।
ओम् तत् सत् है, ओम् तत् सत् ओम्॥
जानेमन! वक्ते-नज़ा[1], वालिद[2] को।
पाठ गीता का यह सुना देना॥
"तत्त्वमसि[3]" फूंक कान में देना।
"तू खुदाई[4]" का दम लगा देना॥
बैठ पैहलू में बाअदब[5] यह कूक।
आह में खूब पिस पिसा देना॥
हल आँसू में करके फिर इस को।
सीने पर बाप के गिरा देना॥
कूक कैलास से उठा है ओम्।
ओम् तत् सत् है, ओम् तत् सत् ओम्॥
मौत पर यह सबक सुना देना।
मातमी मुर्दा दिल जला देना॥
लाधड़क शंख यह बजा देना।
शक शुभा एकदम मिटा देना॥
कूक कैलास से उठा है ओम्।
ओम् तत् सत् है, ओम् तत् सत् ओम्॥
मरने लड़ने को फौज जाती हो।
सामने मौत नज़र आती हो॥

---

१ मृत्यु काल, २ पिता, ३ (तूही वह ब्रह्म है), ४ तू खुदा है. ५ इज़्ज़त के साथ, सत्कार पूर्वक.

मिस्ल अर्जुन के दिल बढ़ा देना।
मस्त बाजे में गीत गा देना॥
कूक कैलास से उठा है ओम्।
ओम् तत सत् है, ओम् तत् सत् ओम्॥
घुड़की तुम को जो दे कभी नाफ़ेह्म[1]।
तुम ने हरगिज़ भी छोड़ना मत रेह्म॥
धमकी गाली गलोच और अनबन।
प्यारे! खुद तू है, तू ही है दुश्मन॥
रमज़ आँखों से यह बता देना।
हाथ में हाथ फिर मिला देना॥
कूक कैलास से उठा है ओम्।
ओम् तत् सत है, ओम् तत् सत् ओम्॥
गर अदालत में तुम को लेजायें।
ईसा सुकरात तुम को ठहरायें॥
तुम तो खुद मस्तीये-मुजस्सम[2] हो।
दावा, अर्ज़ी, क़सूर, कैसे हो?॥
चीफ़ जस्टिस का दिल हिलादेना।
हां! गला फाड़ कर यह गा देना॥
कूक कैलास से उठा है ओम्।
ओम् तत् सत् है, ओम् तत् सत् ओम्॥
नीज़ मक़तल[3] में खुश खड़े होकर।
हाज़रीं[4] के दिलों में घर कर कर॥

---

१ नासमझ, कमअक़ल मूर्ख. २ आनन्द स्वरूप. ३ क़त्ल (फांसी) की जगह.
४ उपस्थित लोग.

उङ्गलियां उठ रही हों चारों तरफ़।
हर कोई रख रहा हो तुम पर हरफ़[1] ॥
क़ातलों का भरम मिटा देना।
"ग़ैर फ़ानी[2] हूं मैं" दिखा देना ॥
काटा जाने को सिर झुका देना।
नारह[3] से गूंज इक उठा देना ॥
शक शुभा एकदम मिटा देना।
कूक कैलास से उठा है ओम्।
ओम् तत् सत् है, ओम् तत् सत् ओम् ॥

माया और उस की हक़ीकत

[८६]

शाम।

(यह सारी कविता कलकत्ते नगर के वृत्तान्त की है और उसे माया के नाम से याद फरमाते हैं).

गंगा की ठंडी छाती से आती है खुश हवा।
है भीने भीने बाग़ का साँस इस में मिल रहा ॥
गंगा के रोम रोम में रचने लगा वह वेहर[4]।
आया जुवार[5] ज़ोर का लेहरों पे लेके लेहर ॥
देखो तो कैसे शौक़ से आते जहाज़ हैं।
मारे खुशी के सीटी बजाते जहाज़ हैं ॥

---

१ नुक़्स, इल्ज़ाम, दोष. २ न मरनेवाला, अमर. ३ गरज. ४ समुद्र. ५ समुद्र में तूफ़ान ज्वार भाटा यानी समुद्र में लहरों का चढ़ाव उतार.

शादी ज़िमी की ऐ लो! फलक[1] से हुई हुई।
वह सायबान क़नात है जब ही तनी हुई॥

दुल्हा के सिर पर तारों का सिहरा खिला खिला।
दुल्हन के बर्क़[2]-दिल ने चिराग़ाँ[3] खिला दिया॥

[८७]

मुक़ाम (कलकत्ते का ईडन बाग़)

है क्या सुहाना[4] बाग़ में मैदाने-दिलकुशा[5]।
और हाशिया[6] है बेञ्चों का सब्ज़ा पै वाह वा॥

मजमा[7] हजूम लोगों का भर कर लगा है यह।
मैदान आदमी से लबालब भरा है यह॥

बेञ्चों पै बाज़ बैठे हैं, अक्सर खुश खड़े।
बाँके जवान बाग़ में हैं टैहलते पड़े॥

मैदान पार सड़क पै है बग्गियों की भीड़।
घोड़ों की सरकशी[8] है, लगामों की दे नपीड़॥

शौक़ीन कलकत्ता के हैं, मौजूद सब यहाँ।
हर रंग ढंग वज़ा के मिलते हैं अब यहाँ॥

---

१ आकाश. २ दिल में रहने वाली बिजली इस जगह अभिप्राय पृथिवी से है. ३ बिजली की रौशनी फैल गयी. ४ दिलको अच्छा लगने वाला. ५ खुले दिल वाला अर्थात् विशाल. ६ किनारा. ७ गिरोह, भीड़. ८ सिर हिलाना, सिर हिलाकर लगाम तुड़वाना.

[८८]

काम।

अर्थात् (कलकत्ते के बाग़ में लोगों का क्या काम है ?)

हम सब को देखते हैं, यह देखते कहाँ ?।
आँखे तनी हुई हैं, क्या पीर क्या जवां॥
मर्कज़[1] सब निगाहों का उजला[2] चबूत्रा।
ख़ुश बैंड[3] बाजा गोरों का है जिस में बज रहा॥
गाते फुला फुला के हैं वह गालें गोरियाँ।
क्या रौशनी में सुर्ख़ दमकती हैं कुरतियाँ!॥
ऐ लोगो! तुम को क्या है? जो हिलते ज़रा नहीं।
क्या तुम ने लाल कुरती को देखा कभी नहीं?॥

[८९]

परदा।

इसरार[4] इस में क्या है, करो ग़ौर तो सही।
इस टिकटिकी में क्या है करो ग़ौर तो सही॥
गोरों की कुर्तियों को हैं गो तक रहे ज़रूर।
लेकिन नज़र से कुर्तियाँ गोरे तो सब हैं दूर॥
लेहरा रहा है परदा सा सब की निगाह पर।
इस परदे से घिरी है हर एक की नज़र॥

---

१ केन्द्र. २ रौशन. चमकीला. ३ अंग्रेज़ी बाजे का नाम है. ४ भेद, गुप्त भेद.

यह परदा तन रहा है, अजब ठाठ बाठ का।
जिस में ज़मीनो-ज़मानो-मकान[1] है समा रहा॥
परदा बला है, छेद कि सीवन[2] कहीं नहीं।
लेकिन मोटाई जो पूछो, तो असला[3] नहीं नहीं॥
परदा सितम[4] है, सेहर[5] के नक़्शो-निगार हैं।
हर आँख के लिये यां अलेहदा ही कार[6] हैं॥
सब सामयीन[7] के सामने परदा है यह पड़ा।
हर एक की निगाह में नक़्शा बना दिया॥
परदों से राम का है यह परदा अजब पड़ा।
गंधर्व शहर का है कि मिराज[8] का मज़ा॥
जादू है, पियानोटिङ्ग[9] है, परदा सुराब[10] है।
क्या सच है रंग ढंग, यह सब नक़्शे[11]-आब है?॥
रमिये तो यार परदे में देखें तो कैफ़ीयत[12]।
आँखें सिली हैं परदा से क्यों? क्या है माहीयत[13]?॥
दीदों[14] में और रंगों में क्या है मुनासबत?।

[६०]

विवाह।

यह नौजवां के रूबरू नूरी लिबास[15] में।
दुल्हन खिली है फूल सी फूलों की बास में॥

---

१ देश, काल, वस्तु २ सिया हुआ. ३ बिल्कुल, नितान्त. ४ जुल्म, आश्चर्य ग़ज़ब. ५ जादू. ६ काम. ७ सुनने वाले, श्रोतागण. ८ पदार्थ, तरक्की, बलंदी (यहां अभिप्राय स्वर्ग लोक से भी हो सकता है). ९ पियानो बाजे के बजाने का नाम है. १० रेत का मैदान जो धूप में पानी की तरह नज़र आवे (मृगतृष्णा का जल). ११ पानी के नक़्श. १२ हाल दशा. १३ असलीयत. १४ चक्षु, नेत्रों. १५ मकान की पोशाक या वस्त्र.

शादी के राग रंग में बाजा बदल गया।
ऐ लो! बरात बैठी है, जलसा बदल गया॥
दुल्हन का रंग है वह गोया गुलाब है।
और चश्मे[1]-नीम मस्त[2] से झड़ता शराब है॥
क्यों दायें से और बायें से मुड़ जायें न आँखें।
अब रंग ही ऐसा हो, तो जुड़ जायें न आँखें॥

[९१]

यूनीवर्स्टी कॉन्वोकेशन।

ऐनक लगाये लड़के को वह इस ही परदे पर।
हरकारह दौड़ता हुआ लाया है क्या खबर॥
लेते ही तार हाथ में लड़का उछल पड़ा।
"मैं पास होगया हूं, लो मैं पास हो गया"॥
"बी-ए-के इमतहान में बढ़ कर रहा हूं मैं।
इंगलिश में और हिसाब में अव्वल रहा हूं मैं"॥
है चांस्लर[3] से जलसा में इनाम पा रहा।
और फैलो-साहबान्[4] से है इकराम[5] पा रहा॥
क्यों दायें से और बायें से मुड़ जायें न आँखें।
अब रंग ही ऐसा हो तो जुड़ जायें न आँखें॥

---

१ आँखें. २ आधी मस्त. ३ यूनीवर्स्टी (विश्वविद्यालय) के भवन में प्रधान पुरुष (सभापति) ४ यूनीवर्स्टी के सभासद व मददगार ५ खिताब इत्यादि.

[६२]

बच्चा पैदा हुआ।

यह देखना किसी के लिये इस ही परदे पर।
पूरी हुई है आर्ज़ू, पैदा हुआ पिसर[1] ॥
मंगल है, शादियाना[2] है, खुशियाँ मना रहा।
दरवाज़े पर है भाट खड़ा गीत गा रहा ॥
नन्हा[3] है गोल मोल, कि इक कँमल फूल है।
नाज़ुक है लाल लाल, अचँवा अमूल[4] है ॥
अब तो बहू की चाँदी है घर भर में बन गयी।
सास भी जो रूठी थी लो आज मन गयी ॥
क्यों दायें से और बायें से मुड़ जायें न आँखें।
जब रंग ही ऐसा हो तु जुड़ जायें न आँखें ॥

[६३]

नैशनल कांग्रेस[5]।

यह देखना! किसी के लिये इसी परदे पर।
मण्डप है कांग्रेस का, ग़ज़ब धूम कर्रोफ़र[6]! ॥
लैक्चर वह दे रहा है धुंआँधार सिहरकार[7]।
जो तीर शको-शुबा को है जाता जिगर के पार ॥

---

१ पुत्र. २ खुशी के बाजे बज रहे हैं. ३ छोटा सा बच्चा. ४ अनंत मोल वाला अर्थात् अमूल्य. ५ राष्ट्रीय महासभा. ६ शान शौकत. ७ जादू की तरह असर करने वाला.

हक[1]-औ-दक मुकुत[2] में हैं पड़े हाज़रीन[3] तमाम।
हरदीदा शोलावार[4] है! बिजली है ख़ाशो आम॥
वह तालियों की गूंज में इक दिल हुये तमाम।
वह मोतियों से आँख का छलके पड़ा है जाम[5]॥
"गो आन, गो आन[6]"! कहते हैं सब अहले[7]-ज़िन्दगी।
हड्डी से खून से लिक्खेंगे तारीख हिन्द की॥
क्यों दायें से और बायें से मुड़ जायें न आँखें।
जब रंग ही ऐसा हो तो जुड़ जायें न आँखें॥
इस परदे पर है, ठेका में, इक लाख की बचत।
इस परदे पर है, सेठ को, दो लाख की बचत॥
इस परदे पर है सिंह जवान खूब लड़ रहा।
तन्हा है एक फौज से क्या डट के अड़ रहा॥
इस परदे पर जहाज़ हैं आते खुशी खुशी।
मक़सद[8] मुराद दिल की हैं लाते खुशी खुशी॥
इस परदे पर तरक्की है रुतबा बढ़ा बढ़ा।
इक दम है मेरे यार का दर्जा बढ़ा चढ़ा॥
इस परदे पर हैं सैरो-तमाशे[9] जहान के।
इस परदे पर हैं नक़शे बहिश्तो-जुनां[10] के॥
बिछुड़े हुए मिले हैं, मुर्दे भी उठ खड़े हैं॥
क्यों दायें से और बायें से मुड़ जायें न आँखें।
जब रंग हों दिलख्वाह[11] तो जुड़ जायें न आँखें॥

---

१ एकदक, आश्चर्य, हैरान। २ चुपचाप. ३ श्रोतागण. ४ सब की आँखें लाल हैं. ५ प्याला (मोतियों का). ६ आगे बढ़ो, आगे बढ़ो. ७ जानदार. ८ मुराद, मन्तव्य. ९ सैर और तमाशा. १० स्वर्ग नरक ११ दिलपसंद, मनोरञ्जक.

[६४]

सल्तनत हक़ीक़ी अवधूत।

वाह ! क्या ही प्यारा नक़शा है, आँखों का फल मिला ! ।
उस सोहने नौजवान् का जीना सफल हुआ ॥
महल उसका, जिस की छत पे हैं हीरे जड़े हुए ! ।
क़ौसे-क़ज़ाह[1]-व-अबर[2] के परदे तने हुए ॥
मसनद[3] बलन्द तख़त है, पर्वत हरा भरा।
और शजरे-देवदार[4] का है चँवर झुल रहा ॥
नग़मे[5]-सुरीले "ओम्" के हैं उस से आ रहे।
नदियां, परिन्दे[6], बाद[7] हैं, वह सुर मिला रहे ॥
बेहोशो-हिस है गर्चि पड़ा ख़ाल की तरह।
दुन्या है उस के पैर को फ़ुट-बाल[8] की तरह ॥
कैसी यह सल्तनत[9] है, अदू[10] का निशान् नहीं !
जिस जा[11] न राज मेरा हो ऐसा मकान् नहीं ॥
क्यों दायें से और बायें से मुड़ जायें न आँखें।
जब रंग हो दिलख़्वाह तो जुड़ जायें न आँखें ॥

[६५]

माया सर्व रूप।

माया का परदा फैला है क्या रंग रंग में।
और क्या ही फड़ फड़ाता है हर आबो-संग[12] में ॥

---

१ इंद्र धनुष. २ बादल. ३ बैठने की जगह ऊंची. ४ देवदार के वृक्ष. ५ आवाज़, शब्द ६ पक्षी. ७ वायु. ८ पाओं से खेलने की गेंद. ९ बादशाहत, राज्य. १० दुश्मन. ११ जगह. १२ पानी में, पत्थर में.

इस परदे पर हैं झील[1], जज़ीरे[2], खलीजो-बेहर[3] ।
इस परदे पर हैं कोह[4]-ओ-बियाबां[5] दियारो-शेहर[6] ॥
सब पीर[7] सब जवान इसी परदे पर तो हैं ।
बाशिन्दे और मकान इसी परदे पर तो हैं ॥
पैग़म्बर और किताब इसी परदे पर तो हैं ।
सब खाको-आस्मान इसी परदे पर तो हैं ॥
फील[8] अस्प[9] और गुलाम इसी परदे पर तो हैं ।
शाहंशाहों के शाह इसी परदे पर तो हैं ॥
क्या झिलमिलाता परदा है यह अनकबूत[10] का ।
यह है ख्याल (उगला हुआ) काम सूत का ॥

[६९]

नक़्शो-निगार और परदा एक हैं ।

यह दो नहीं हैं, एक हैं, परदा कहो कि नक़्श ।
नक़्शो-निगार[11] परदा हैं, परदा ही तो है नक़्श ॥
यह इस्तआरा[12] था, कि वह माया के रूप हैं ।
माया कहो कि यूं कहो यह नाम रूप हैं ॥
"इस्मो-शकल[13]" ही माया है, माया है इस्म-शकल ।
हममानी[14] माया के हैं, यह सब रंग रूप-शकल ॥

---

१ सरोवर. २ द्वीप. ३ खाड़ी और समुद्र ४ पर्वत ५ जंगल. ६ मुल्क और शहर. ७ वृद्ध, बुड्ढे. ८ हाथी. ९ घोड़े. १० मकड़ी जो तन्तु अपने मुंह से निकाल कर जाला तनती है. ११ नाना प्रकार के रंग रूप. १२ अभिप्राय, लक्षण दृष्टान्त, तमसील. १३ नाम रूप. १४ एक अर्थ वाले.

[६७]

फिलसफा[1] ।

परदा खड़ा है माया का यह किस मुक़ाम पर ? ।
है यह सर्वोपर ऊपर कि हवासे-अवाम[2] पर ? ॥
है भी कहाँ कि मबनी[3] है, यह वहमे-खाम[4] पर ।
क्या सच है, फ़स्तादा[5] है, यह मेरे राम पर ॥

[६८]

महले-परदा (दृष्टान्त) ।

है इस तरफ़ तो शोर सरोदों[6] समा का ।
और उस तरफ है ज़ोर शुनीदन[7] की चाह का ॥
इन दोनों ताक़तों का वह टकराना देखिये ।
पुर ज़ोर शोर लहरों का चकराना देखिये ॥
लहरें मिलीं मिटीं । पेलो ! पैदा हुए हुबाब[8] ।
यह बुलबुले ही बुर्क़ा[9] हैं, परदा बरूए[10]-आब ॥
मौजों ही का मुक़ाबला परदा का है महल[11] ।
मौजें है आब, कहते नहीं क्यों महल है जल ? ॥
हां यह तो रास्त[12] है कि सरोद[13] और सामयीं[14] !
दोनों मिले मिटे हैं, वह जल रूपे-राम[15] में ॥
और राम ही में परदा है नक़शो-निगार हैं ।
यह सब उसी की लहरों के मौजों[16] के कार[17] हैं ॥

---

१ दर्शन शास्त्र, तत्वज्ञान. २ सब इंद्रियमय. ३ पदारद लिये हुए, आश्रित. ४ कच्चा वहम अर्थात कल्पित भ्रम. ५ सीधा खड़ा हुआ. ६ राग रंग (आवाज़). ७ सुनना. ८ बुलबुला या बुदबुदे. ९ परदा. १० पानी के चेहरेपर अर्थात पानी की तह पर. ११ अधिष्ठान या आधार. १२ सच. १३ राग. १४ सुनने वाले. १५ जल रूपी राम में या राम जो जलरूपी है उस में. १६ चोइरें. १७ काम.

[६६]

अहसासे-आम (दृष्टान्त)।

महसूस[1] करने वाली इधर से आई लैहर।
महसूस होने वाली उधर से आई लैहर॥

दोनो के अक़दे[2]-शादी से पैदा हुए हुबाब[3]।
यानी नमूद[4] "शै[5]" हुई पानी में झट शिताब॥

लैहरें भी और बुलबुले सब एक आब[6] हैं।
इन सब में राम आप ही रमते जनाब हैं॥

माया तमाम इस की है हर फ़ेल[7]-ओ-क़ौल में।
मफ़ऊल, फ़ेलो[8]-फ़ाइल हैं हर डौल डौल में॥

आबशारों और फ़व्वारों की पुहारों की बहार।
चश्मासारां, सब्ज़ाज़ारों[9], गुलइज़ारों[10] की बहार॥

बैहरो-दरया[11] के झकोले और सबा[12] का खुश ख़राम[13]।
मुझ में मुतसव्वर[14] हैं यह सब "ओम्" में जैसे कलाम[15]॥

पसर[16] कर लेटा हूं जग में सुबह में और शाम में।
चाँदनी में रौशनी में, कृष्ण में और राम में॥

---

१ इन्द्रियगोचर पदार्थों को अनुभव करने वाली वृत्ति. २ दिवाह या मेल. ३ बुलबुला. ४ प्रकट, व्यक्त. ५ वस्तु रूप. ६ जल. ७ काम और इक़रार. ८ कर्ता, कर्म, और कर्त्ता. ९ बाग़ इत्यादि. १० पुष्प के कपोल वाले प्यारे. ११ समुद्र और नदी. १२ प्रातःकाल की वायु. १३ मटक दार चलना. १४ कल्पित, आरोपित हैं. १५ शब्द. १६ फैलकर.

[१००]

राम मुबर्रा[1]।

यह तो सब रास्त[2] है, बले[3] अज़ रूये[4]-ज्ञान भी।
देखो तो परदा नक़्श वग़ैरा न थे कभी॥
है मौज[5] ही में रद्दो-बदल[6] जिस के बावजूद।
क़ायम है ज्यूं का त्यूं सदा इक आब[7] का वजूद॥
अज़ इतबारे-ज़ात[8] यह कहना पड़ा है अब।
पैदा ही कब हुए थे वह अमवाज[9] और हुबाब[10]॥
अज़ रूये-राम पूछो तो फिर वह निगारो-नक़्श।
माया वग़ैरा का कहीं नामो-निशानो-नक़्श॥
हर्कत सकून[11] और तग़य्युर[12] का काम क्या?।
नुतको[13]-ज़ुबां को दख़ल, सिफ़ातों[14] का नाम क्या॥
इक़बाल[15] कहाँ, अदबार[16] कहाँ, यां बेशी कमी को बार कहां।
यां पुण्य कहां, अरु पाप कहां, अरु मुझ में जीतो-हार कहां॥
इक़रार कहां, इन्कार कहां, तकरार कहां, इसरार[17] कहां।
महसूस-हवास[18]-अहसास कहां, ख़ाक आब अरु बादो[19]-नार कहां॥
सब मर्कज़[20], मर्कज़, मर्कज़ है, इकतार[21] कहां, परकार[22]-कहां।

---

१ शुद्ध स्वरूप राम. २ सच. ३ किन्तु. ४ वस्तुतः भी ५ लहर. ६ बदलना इत्यादि. ७ जल. ८ वस्तु के लिहाज़ से कहना पड़ा. ९ लहरें. १० बुलबुला. ११ स्थिरता. १२ तबदीली. १३ वाणि. १४ गुण. १५ विभूति, महिमा. १६ बोझ. १७ हठ, ज़िद. १८ स्पर्श, इन्द्रिय. पदार्थ. १९ वायु और अग्नि. २० केन्द्र. २१ पंक्तियें. २२ पंक्तियें डालने वाला औज़ार.

[१०१]

नतीजा ।

गलतां[1] है मुहीत बेपायां[2], यहां वार कहां, अरु पार कहां ? ।
गंगा है कहां, अरु बाग़ कहां, है सुलह कहां, पैकार[3] कहां ? ॥
यां नाम कहां, अरु रूप कहां, अख़फ़ा[4] कहां, इज़हार[5] कहां ? ।
नहीं एक जहां दो चार कहां, अरु मुझ में सोच विचार कहां ? ॥
मां बाप कहां, उस्ताद कहां ? गुरु चेले का यां कार कहां ? ।
इहसान कहां, आज़ार[6] कहां ? यां ख़ादिम[7] और सरदार कहां ॥
न ज़मां[8] न मकां[9] का कभी था निशां, इल्लत[10] मालूल[11] अज़कार[12] कहां ।
नहीं ज़ेर[13], ज़बर[14], पस[15], पेश कहां ? तक़ती[16] और शेर अशआर[17] कहां ॥
इक नूर[18] ही नूर हूं झोलाफ़िशां[19], गुलज़ार[20] कहां और ख़ार[21] कहां ।
लैकचर तक़रीर उपदेश कहां ? तहरीर[22] कहां, प्रचार कहां ? ॥
तप दान और ज्ञान और ध्यान कहां ? दिल बेबस सीनाफ़िगार[23] कहां ॥
नहीं शोख़ी शोख़ी आर[24] कहां ? सिर टोपी या दस्तार[25] कहां ? ।
नहीं बोली ताना धमकी यहां, सूफ़ार[26] कहां और दार[27] कहां ॥

---

१ पेच खाता हुआ (ग़र्क़ या मग्न हुआ). २ बेहद (अनन्त) अथाह. ३ लड़ाई, जंग. ४ पोशीदगी (अव्यक्त). ५ व्यक्त ६ दुःख. ७ नौकर. ८ काल ९ देश. १० कारण. ११ कार्य. १२ ज़िकर, चरचा. १३ नीचे. १४ ऊंचे. १५ पीछे आगे. १६ टुकड़े करना, वज़न कविता का बनाना. १७ कविता नज़्में. १८ प्रकाश १९ दमकने वाला, जहाँ दमक मार रहा है. २० बाग़. २१ काँटा. २२ लेख. २३ सीना फाड़ने वाला या ज़ख़्मी दिल (आशिक़ या प्रेमवान). २४ लज्जा हया. २५ पगड़ी. २६ तीर का मुंह २७ सूली.

इक मैं ही मैं ही मैं ही हूं, शै[1] ग़ैर का दारो-मदार कहां।
आलायशे-क़ैदो-निजात[2] कहां? अहकामे[3]-रसन[4] और मार[5] कहां॥
घर बार कहां, कोहसार[6] कहां, मैदान कहां, और ग़ार[7] कहां।
मह[8], अंजुम[9], फ़र्श[10], और अर्श[11] कहां? यां ख़्वाब[12] कहां बेदार[13] कहां।
जब ग़ैर[14] नहीं, डर ख़ौफ़ कहां, उम्मेद से हालते-ज़ार[15] कहां?॥
मैं इक तूफ़ाने-वहदत[16] हूं, कहो मुझ में इस्तफ़सार[17] कहां।
इक मैं ही, मैं ही, मैं ही हूं, यां बन्दे[18] और सरकार[19] कहां॥

[१०२]

दुन्या की हक़ीक़त

क्या है यह? किस तरह हुए मौजूद?।
इक निगाह पर सब की हस्ती-ओ[20]-बूद॥
हां लागत है, सबूत दीजेगा।
इन्द्रियों पर यक़ीन न कीजेगा॥
(१) बेशक आती नज़र है दुन्या, पर।
है कहां, आप ही न देखें गर॥
माहो-माही[21]-व-शाहो-ज़रीन ताज।
अपनी हस्ती को हैं तेरे मोहताज॥

---

१ दूसरी वस्तु, भिन्न वस्तु. २ मुक्ति, बंद का लेश. ३ भ्रान्ति. ४ रस्सी. ५ सांप. ६ पर्वत. ७ कन्दरा, गुफा. ८ चांद. ९ तारे. १० पृथिवी. ११ आकाश. १२ स्वप्न. १३ जाग्रत. १४ अन्य. १५ रोने की दशा. १६ एकता का तूफ़ान. १७ प्रश्न करना या पूछना. १८ प्रजा, सेवक. १९ राजा, मालिक. २० स्थिती, होना. २१ चांद सूर्य (अथवा चांद से मछली पर्यन्त सब जीव जन्तु)

वर्क़[1] मौजूद है सभी शै में।
गो हवासों के हो न हलक़े[2] में॥
वक़्ते-इज़हार[3]. वर्क़-शोख़ी बाज़।
ख़ुद ही मुसव्वत है, ख़ुद ही मनफ़ी नाज़॥
तेरी माया है वर्क़[4]-वश चञ्चल।
यारो आगे कहां चलें छल वल॥
तू इधर देखता है आँख उठा।
तू उधर बन गया कोहो-सहरा[5]॥

(२) ख़्वाब में हैं ख़्याल की दो शान्।
जुज़्वी[6], कुल्ली[7] "यह एक मैं" "यह जहान्"
"मैं हूं इक मर्द" शाने-जुज़्वी है।
"जुमला आलम," यह शाने-कुल्ली है॥
ख़्वाबे-पुख़्ता शुदः है बेदारी।
जाग! सारी तेरी है गुलकारी[8]॥
तूही शाहिद[9] बना है, तू मशहूद[10]।
शान तेरी है आस्माने-कबूद[11]॥
ख़्वाब तेरा, ख़याल तेरा है।
जो ज़मीन-ओ-ज़मान् ने घेरा है॥
जल्वः तेरा यह अम्बसाती[12] है।
बीज माया ही फैल जाती है॥
क्या यह दुन्या ख़याल मात्र है।

---

१ बिजली. २ घेरा, हद ३ हृदय, ज़ाहिर होने के समय. ४ बिजली की तरह. ५ पर्वत और जंगल. ६ व्यष्टि। ७ समष्टि। ८ झाग, झूटा. ९ गवाह, साक्षी. १० हाज़िर किया गया, देखा गया, ११ नीला आकाश. १२ अज्ञान अथवा माया की विक्षेप शक्ति.

क्या यह सच मुच ख़याले-ख़ातिर[1] है ॥
अगर तुझे इसमें शक नज़र आवे ।
कुछ भी बिन ख़याल के दिखा तो दे ॥

(चित्त वृत्ति के फुरने बग़ैर कोई भी शै नमूदार[2] नहीं हो सकती)

हां यह ख़्वाबो-ख़याले-माया है ॥
'एक' कसरत[3] में आ समाया है ॥
(३) मरना जीना यह आना जाना सब ।
ठैहरना चलना फिरना गाना सब ॥
सब यह करतूत आंत माया की ।
मैहरे-तावां की एक छाया की ॥
पुर[4]-ज़िया आफ़तावे-रोशन राये ।
गंग लैहरों पै नाचता है आये ॥
साक्षी सूरज कहीं न हिलता है ।
आब बैहता है, यूं वह फिरता है ॥
छोटी बूंदों पै नूर सूरज का ।
क्या अनूप बन गया है अचरज सा ॥
शीश मंदिर में शमा[5] जो रक्खा ।
क्या समां हो गया चिराग़ों का ॥
फ़ितनागर[6] आयीना में चश्मे-निगार ।
झूट है, गो है यार से दो चार ॥

---

१ दिल (मन) का ख़्याल २ प्रगट. ३ नानात्व. ४ प्रकाश से भरपूर. ५ दीपक. ६ झगड़ा डालने वाला.

यह अविद्या में जो पड़ा आभास।
ब्रह्म कहलाया इस से जीव और दास॥
यूं जो संसर्ग[1] से हुआ अध्यास।
सानी[2] यकता का ला बढ़ाया पास॥
माया आयीना कैसी खुर्सन्द[3] है।
मज़हरे[4]-राम सच्चिदानन्द है॥
कुछ नहीं काम रात दिन आराम।
काम करता है फिर भी सब में राम॥
क्यों जी जब आप ही की माया है।
दिल पै अन्दोह[5] क्यों यह छाया है॥
हेच[6] दुन्या के वास्ते फिर क्यों।
भाई भाई से तीरह-ख़ातिर[7] हों ?॥
खटका कैसा ? झजक ख़तर क्या है ?।
बीमो[8]-उम्मेद कैसी ? डर क्या है ?॥
बादशाह का बुरा जो चाहता है।
सख़्त जुरमे-कबीरह[9] करता है॥
देखियेगा हक़ीक़ी शाहंशाह।
राज जिस का है माह से ता माह[10]॥
तेरे नस में रगों में नाड़ों में।
ऐहले[11]-सौदागरी हैं राहों में॥
जिस का ऐहदे-हकूमते-बर्कत।
चैन दे सिर में अक़्ल को हर्कत॥

---

१ अन्दर प्रवेश. २ दूसरा. ३ खुश, अच्छी ४ राम के दिखाने वाली, ज़ाहिर होने का स्थान. ५ दुख, फ़िकर. ६ नाचीज़, तुच्छ. ७ ख़राब दिल, द्वेष भरा चित्त. ८ डर. ९ बड़ा भारी पाप. १० तृण से चन्द्रमा तक. ११ खून दम इत्यादि.

ऐसा सुलतान् अज़ीमे-आली जाह।
तेरा ही आत्मा है, जाये-पनाह ॥
ऐसे सुलतां से जो हुआ ग़ाफ़िल।
हाये ख़ुदकुश[1] है, शाहकुश[2] क़ातिल ॥
क्यों जी कुछ शर्मो-आर[3] भी है तुम्हें।
क्यों यह कङ्गलों से दान्त लिलके हैं? ॥
रींगना क्यों? कमर यह टूटी क्यों?।
हाये क़िस्मत तुम्हारी फूटी क्यों? ॥
रास्ती के गले छुरी क्यों है?।
हक़[4] ही जीतेगा, सत की है जै ॥
क्यों गुलामी क़बूल की तुमने।
दर-बदर ख्वार भीक ली तुमने ॥
थी यह लीला रची अनोखे ढब।
खेल में भूल क्यों गये मनसब[5]? ॥
ताजे-नूरी को सिर से फैंक दिया।
टोकरा रंजो-ग़म का सिर पे लिया ॥
अब जलालो-जमाले-ज़ात[6] सम्भाल।
उठो, शब सा हों सब विषय पामाल ॥
नैय्यरे-आज़म[7] हो, तुम तो नूर फ़िगन[8]।
ख़िदमते-माया में न ढूंडो धन ॥
वैह्म का मार[9] आस्तीन् से खोल।
मत फिरो मारे मारे डाँवां डोल ॥

---

१ आत्मघाती. २ आत्म स्वरूप रूपी बादशाहको मारने वाला. ३ लज्जा, हया. ४ सत्य. ५ पद, दर्जा. ६ स्वरूप का तेज और वैभव ७ सूर्य. ८ प्रकाश डालने वाले. ९ साँप.

[१०३]

ज़ाते-बारी[1] ।

लेक माया यह आ गयी क्योंकर ? ।
रूऐ-आलम[2] सज़ा गयी क्योंकर ? ॥
ज़ाते-वाहिद[3] को क्यों शरीक लगी ? ।
बे बदल हुस्न को क्यों यह लीक लगी ? ॥
बदर[4] को गैहन[5] यह लगा कैसे ? ।
ऐसा ज़िल्ले-ज़मीन[6] पड़ा कैसे ? ॥

[१०४]

जवाब ।

(१) ऐ ज़मीन्[7] दोज़ चश्मे-दुन्या बीं ! ।
तू ही ख़ुद है बनी ख़ुसूफ़[8] यहीं ॥
चाँद राहू ने जा न पकड़ा है ।
वैह्म तेरे ने तुझ को जकड़ा है ॥
ज़ाते-वाहिद[9] सदा है जूं की तूं ।
उस में रद्दो-बदल[10] है यों न यूं ॥
दायें बायें इधर उधर हर सू[11] ।
आप ही आप एक रस है हू[12] ॥

---

१ ईश्वर, असली स्वरूप. २ जगत, दुनियाँ. ३ एक अद्वितीय. ४ पौंदय का. चन्द्रमा. ५ ग्रहण. ६ साया, परछाईं पृथिवी की. ७ हे संसार को संसार की दृष्टि से देखने वालो. ८ ग्रहण या ग्रहण की छाया, (जगत में आसक्त) चक्षु या दृष्टि. ९ अद्वैत स्वरूप. १० विकार. ११ तरफ़. १२ ईश्वर, ब्रह्म.

ईन्[1] आन्[2], चूं[3] चुनं[4], चुनीं[5]-ओ चुनां[6] ।
लौट आते हैं वहां से हो हैरान् ॥
बरतर अज़ फ़ह्मो-अक़लो-होशो-गुमां[7] ।
लामकां[8] लाज़मां[9]-निशां-अमकान्[10] ॥

(२) रूये-खुर्शीद[11] पर नक़ाब[12] नहीं ।
दुपैहर को कोई हिजाब[13] नहीं ॥
आब[14] हायल नहीं, सहाब[15] नहीं ।
देखने की किसी को ताब नहीं ॥
मौजज़न[16] हो रही है उर्यानी[17] ।
तिस पै परदा है तुर्रह हैरानी ॥

(३) जूं रसन[18] में पर्दाहे-सूरते-मार[19] ।
मुझ में माया-नमूद है तूमार[20] ॥
यह स्वरूपाध्यास[21] है इज़हार ।
जान मुझको, रहे न यह पिंदार[22] ॥
और संसर्ग[23] को जो माना था ।
तब तलक ही था, जब न जाना था ॥
मारे[24]-मौहूम में मोटाई तूल[25] ।
तो वही है जो थी रसन में मूल ॥

---

१ यह. २ वह. ३ क्यों. ४ किस तरह. ५ ऐसा. ६ और वैसा. ७ समझ होश और अक़ल से भी दूर. ८ देश रहित. ९ काल रहित. १० चिन्ह रहित, निराकार व सम्भवता रहित. ११ सूर्य के मुख पर. १२ परदा. १३ परदा. १४ चमक ढांपे हुये नहीं. १५ बादल, परदा. १६ लैहरें लहरा रही है. १७ नंगापन. १८ रस्सी में. १९ साँप की सूरत नज़र आती है. २० लम्बी माया, भ्रम २१ अपने स्वरूप का भ्रम. २२ गुमान, समझ. २३ आरोप २४ कल्पित साँप. २५ लम्बाई.

यह हक़ीक़ी रसन का तूलो-अर्ज़[1]।
मारे-मौहूम में हो आया फ़र्ज़ ॥
इस तरह गरचे माया मिथ्या है।
उस में संसर्ग सत्त ही का है ॥
दूर रहते हैं मारे-दहशत[2] के।
नागनी काली से सभी हट के ॥
पर जो आकर क़रीब[3] तर देखा।
बेख़तर[4] हो गये, मिटा खटका ॥
माहीयत[5] पर निगाह गर डालो।
असले-हस्ती को खूब सम्भालो ॥
कैसी माया ? कहां हुआ संसर्ग ?।
कब थी पैदायश-व-कहां है मर्ग[6] ? ॥
काल वस्तु का देश का मुझ में।
नाम होगा न है हुआ मुझ में ॥
कौन तालिब[7] हुआ था, मुर्शद[8] कौन ?।
किस ने उपदेश करा, पढ़ाया कौन ? ॥
किस को संशय शकूक उट्ठे थे ?।
कब दलायल से हल फिर तै[9] हुये ? ॥
हस्ती-ओ-नेस्ती नहीं दोनों।
रुस्तगारी[10]-ओ-क़ैद क्योंकर हों ? ॥
क्या गुलामी, कहां की शाही है ?।
आली जाही[11] कहां ? तबाही है ॥

---

१ लम्बाई, चौड़ाई. २ डर, भय. ३ बहुत समीप. ४ निडर, निर्भय. ५ असल वस्तु, हक़ीक़त. ६ मृत्यु. ७ जिज्ञासु. ८ गुरु. ९ साफ़ हल हुये. १० आज़ादी, मुक्ति ११ उच्च पद या पदवी.

मैं कहां ? तू कहां ? सग़ीर[1]-ओ-कबीर ? ।
किस का सय्याद[2]-दाम दाना असीर[3] ? ॥
किस की वहदत[4] और उस में कसरत क्या ? ।
क्या खुदाई वहां ? इबादत[5] क्या ? ॥

किस की तशबीह[6] और मुशब्बाह[7] क्या ? ।
जैहल[8] क्या और इल्म हो कैसा ? ॥
कैसी गंगा यहां पे राम कहां ? ।
ज़ाते-मुतलक़ में मेरी नाम कहां ? ॥

कब खिली चाँदनी ? है ख्वाब कहां ? ।
रात कैसी हो ? आफ़ताब कहां ? ॥
कब रसन था ? यहां पे मार नहीं ।
कोई दुशमन हुआ न यार नहीं ॥

अक्स इस जा नहीं है, ऐन नहीं ।
नुक़ता पैदा नहीं है, ग़ैन नहीं ॥
कब जुदा थे, ? न पाई बीनाई[9] ।
खुद खुदाई है, वल वे रानाई[10] ॥

कुछ बियान कीजियेगा हाले-ज़ात ।
हाय कहने में आये क्योंकर बात ? ॥
कब कुंवारी के फ़ैहम[11] में आवे ।
लज़्ज़ते-वस्ल[12] कौन बतलावे ? ॥

---

१ छोटा, बड़ा. २ शिकारी और जाल ३ क़ैद. ४ एकता. ५ बन्दगी. ६ दृष्टान्त, दृष्टान्त. ७ जिस पर दृष्टान्त दिया जाय, बराबरी वाला. ८ अज्ञान. ९ चक्षु, दृष्टि. १० वे रंगी अथवा रंगामेज़ी ११ समझ में आवे. १२ विषयानन्द.

दस्पना[1] पकड़ता है अशया[2] को।
कैसे पकड़े जो उङ्गली क़ाबिज़[3] हो ? ॥
अक़ल बुद्धि हवास मन सारे।
मिस्ले चिमटा हैं, दुन्या असारे ॥
आत्मा अक़ल बुद्धि मन सब को।
क़ाबू रखता है, हाथ चिमटे को ॥
दुन्यवी शै पे अक़ल का बस है।
आगे मुझ आत्मा के खुद ख़स है ॥
अक़ल से ब्रह्म चाहो पेहचाना।
हाथ चिमटे के बीच में लाना ॥
ग़ैर मुमकिन, मुहाल ही तो है।
दम जो मारे मजाल किस को है ? ॥
नुत्क़[4]! मशहूर है तू कार[5]-आरा।
राम तक पहुँचने का है यारा[6] ? ॥
नुतक़ ने ज़ोर जान तक मारा।
गिर पड़ा आख़िरश थका हारा ॥
आँख ख़ाने[7] से अपने बाहर आ।
ढूंढ बैठी है बाग़ बन सेहरा[8] ॥
छान मारा जहान् को सारा।
कैसे देखियेगा आँख का तारा ? ॥
ऐ जुवान्! मोम तुझ से है ख़ारा[9]।
कुच्छ पता दे कहां पे है दारा[10] ? ॥

---

१ चिमटा. २ वस्तु. ३ जो उङ्गली चिमटे को खुद पकड़े हुए हो. ४ वाणी, बोलने की शक्ति. ५ काम पूरा करने वाली. ६ बल. ७ घर. ८ जंगल. ९ पत्थर. १० दारा बादशाह से भी अभिप्राय है और अपने घर से या स्वरूप से भी अभिप्राय है.

अपना सब कुछ ज़ुबान् ने वारा ।
चढ़ गया उड़ गया चले पारा ॥
यूं रोता क़लम है बेचारा ।
लिखते लिखते ग़रीब में मारा ॥
ऐ क़लम, नुतक़ ! ऐ ज़ुबान्, दीदा !
ज़ुस्तजू[1] में मरो, है निस्तारा[2] ॥
आँख की आँख, जान् की है जान् ।
नुतक़ का नुतक़, प्र.ण के है प्राण ॥
कौन देखे यहां दिखाये कौन ? ।
कौन समझे यहां सुनाये कौन ? ॥
लद गया होशो-अक़ल बनजारा ।
ओस[3] सां कर सका न नज़्ज़ारा[4] ॥
राम मीठा नहीं, नहीं खारा ।
राम खुद प्यार है, नहीं प्यारा ॥
राम हलका नहीं, नहीं भारा ।
राम मिलता नहीं, नहीं न्यारा ॥
खंड टुकड़ा नहीं, नहीं कियारा ।
ख्याले-तक़सीम[5] पर चला आरा ॥
राम है तेग़े-तेज़ की धारा ।
खेल ले जान् पर तू आ यारा[6] ! ॥
उस को आदिल[7], रहीम, ठहराना ।
उससे दुन्या में बेहतरी चाहना ॥

---

१ ढूंढ. २ छुटकारा. ३ शबनम, ओस. ४ किसी वस्तु का देखना. ५ बाँटने के ख्याल पर, भिन्नता के विचार पर. ६ ऐ प्यारे ७ मुंसिफ़, न्यायकारी

ख्वाहिशों का दिलों में भर लाना।
उनके बर आने की दुआ गाना॥
मतलबी यार उस का बन जाना।
चल परे हट! नहीं वह अंजाना॥
राम जारोब-कश[1] नहीं तेरा।
सिर से गुज़रो, विसाल[2] हो मेरा॥
ख्वाहिशों को जिगर से धो डालो।
हविसे-दुन्या[3] को दिल से रो डालो।
आर्ज़ू को जला के खाक करो।
लज्ज़तों को मिटा के पाक करो॥
बहके फिरना भटक भटक बातिल[4]।
छोड़ कर हूजिये अभी कामिल॥
तू तो माबूद[5] है ज़माने का।
देवताओं का देव तू ही था॥
एहले-इसलाम[6], हिन्दु, ईसाई!।
गिर्जा, मन्दिर, मसीत, दुहाई!॥
दे के दुहाई राम कहता है।
तू ही तो राम, गौड[7], मौला है॥
सब मज़ाहब में सब के मोबद[8] में।
पूजा तेरी है, नेक में, बद में॥
ऐ सदा मस्तराज मतवाला!।
बतवा औसाफ़[9] से तेरा बाला॥

---

१ झाड़ू देने वाला (भंगी). २ मेल, दर्शन. ३ दुनियाँ के पदार्थों का लालच. ४ झूटमूठ. ५ पूजनीय. ६ ऐ मुसलमानो! ७ God, ईश्वर. ८ मंदिर. ९ सिफ़तों, गुणों.

ऐ सदा मस्त लाल मतवाला !।
अपनी महिमा में मौज कर वाला ॥
एकमेवाद्वितीय[1] तेरी ज़ात।
वाहिदु[2]-लाशरीक[3] मेरी ज़ात ॥
पास तेरे फ़ड़क ले ग़ैरीयत।
ग़ैरमुमकिन है, बल्के मेहवीयत[3] ॥
एक ही एक, आप ही हूँ आप।
राम ही राम, किस की माला जाप ? ॥

[१०५]

आदमी क्या है ?

(१) दाना खशखश का एक बोया था।
बाबा आदम[4] ने इब्तदा[5] में ला ॥
एक दाना में ज़ोर यह देखा।
बढ़ गया इस क़दर, नहीं लेखा ॥
इस क़दर बढ़ गया, फला फैला।
जमा करने को न मिला थैला ॥
कुठले कुठली भरे हुए भरपूर।
बनिये, सौदागरों के कोठे पूर ॥
एक दाना हक़ीर[6] छोटा सा।
अपनी ताक़त में क्या बला निकला ॥

१-सिर्फ़ एक ही है, दो नहीं, एक के सिवाय और नहीं. २ एक, बिना दूसरे साथी के. ३ बल्कि अभेद होना. ४ हज़रत आदम जिसको ईसाई और मुसलमान अपना पहिला पैगम्बर दृष्टि रखने वाला मानते हैं. ५ आरम्भ में. ६ तुच्छ.

आज बोने को दाना लाते हैं।
इस की ताक़त भी आज़माते हैं॥
यह भी खशखाश ही का दाना है।
यह भी ताक़त में क्या यगाना[१] है॥
हूबहू है वुही तो इस में भी।
शक्ति आदम के बीज में जो थी॥
सच बतायें, है यह वुही दाना।
न यह फैला हुआ न दोगाना[२]॥
खूब देखो विचार करके आप।
माहीयत[३] बीज की क़लील[४] सा नाप॥
ग़ौर से देखिये हक़ीक़त को।
नज़र आता है बीज क्या तुम को?॥
असल दाना नज़र न आता है।
न वह घटता है, बढ़ न जाता है॥
मेरे प्यारे! तू ज़ाते-वाहिद[५] है।
तेरी क़ुदरत अगरचि बेअदद[६] है॥

(२) जान नन्हों[७] को जब कि साइंसदान्[८]।
इम्तिहान् को है काटता यकसान्॥
जिस्म गो होगया हो दो टुकड़े।
ठीक मरते नहीं वह यूं कीड़े॥

---

१ अकेला, अद्वितीय. २ दूसरे क़िस्म का. ३ असलीयत. ४ थोड़ा सा. ५ अद्वैतस्वरूप. ६ अगणित, बिना गिन्ती के. ७ कीड़ा सा (कीड़ा जो कि दो बराबर हिस्सों में काटे जाने से मरता नहीं बल्कि एक के बजाय दो कीड़े हो जाते हैं). ८ सायंस या पदार्थ विद्या का जानने वाला.

पेशतर काटने के एक ही था ।
जब दिया काट दो हुए पैदा ॥
दोनों वैसा ही ज़ोर रखते हैं ।
जैसे वह कीड़ा जिससे काटे हैं ॥
दो को काटें तो चार बनते हैं ।
चार से आठ बन निकलते हैं ॥
क्या दिखाती है, खोल कर यह बात ।
काटने में नहीं है आती ज़ात[1] ॥
गो मनु का शरीर छूट गया ।
पर करोड़ों हनूद हैं पैदा ॥
हर ऋषि की नसल[2] में है वुही ।
शक्ति आदि मनु में जो तब थी ॥
हां अगर कुछ कसर है ज़ाहिर में ।
दुर्रे-यक्ता[3] पड़ा है कीचड़ में ॥
झट निकालो यह हीरा साफ़ करो ।
ज़िद न कीजीयेगा, बस मुआफ़ करो ॥

(३) एक शीशे में एक ही रू[4] था ।
शीशा टूटा, अदद[5] बढ़ा रू का ॥
मुख़तलिफ़ हो गये बहुत अबदां[6] ।
इन में ज़ाहिर है एक ही इन्सां ॥
ज़ैद हो बकर हो उमर हो हो ।
मज़हरे[7]-आदमी है, कोई ही हो ॥

---

१ सत्य वस्तु. २ औलाद, कुल ३ अद्वितीय मोती. ४ चेहरा, मुख. ५ गिनती, नम्बर. ६ देह, शरीर. ७ मनुष्य के ज़ाहिर होने का स्थान, जताने वाला.

गो है नक़रे[1] का मारफ़ों[2] में ज़हूर।
नाम रूपों में है, वही मामूर[3]॥
पर यह नकरा बज़ाते-ख़ुद क्या है?।
इस में हिस्सों का दख़ल बेजा है॥
इस्म फरज़ी, शकल बदलती है।
पर जो तू है, सो एक रस ही है॥
तू ही आदम बना था, तू हव्वा[4]।
तू ही लाट साहब, तूही हौवा॥
तू ही है राम, तू ही था रावण।
तू ही था वह गड़रिया वृन्दावन[5]॥
झूठ तुम को सनम[6]! न ज़ेबा[7] है।
तू ही मौला है, छोड़ दे हैं हैं॥
सीमबर[8] का वह चाँद सा मुखड़ा।
तेरा मज़हर है, नूर का टुकड़ा॥
दिल जिगर सब का हाथ में है तेरे।
नूरे-मौफ़ूर[9] साथ में है तेरे॥
माहो-ख़ुर्शीद[10], वर्क़ो-अंजुमो-नार।
जान करते हैं राम पर ही निसार[11]॥

---

१ आम शब्द जो बोलने बरतने में आवे. २ गुणवाचक अथवा नामवाचक शब्द. ३ भरपूर. ४ आदम हव्वा मुसल्मानों के दो पैग़म्बर हैं जिन से वह सृष्टि की उत्पत्ति हुई मानते हैं. ५ कृष्ण से अभिप्राय है. ६ ऐ प्यारे! ७ उचित, ठीक. ८ चाँदी वाला. ९ बहुत ज़्यादा किया हुआ प्रकाश. यानी प्रकाश स्वरूप. १० चाँद, सूर्य, बिजली तारे और अग्नि. ११ न्यौछावर, अर्पण.

नोट—(नम्बर १, २, ३ से अभिप्राय तीन प्रकार (बीज, फोग़ा, सीआ) की युक्तियों से है जिनसे स्वामी जी ने सिद्धान्त (आत्मा सदा निर्विकार, अपरिवर्तनशील है, परिवर्तन, विकार केवल बाहर नाम रूपों में है) को दर्शाया है).

तीन शरीर और वर्ण

[१०६]

तीनों अजसाम[1]।

ग़ज़ल

जाने-मन[2]! जिस्म एक ख़िलता[3] है।
इस के उतरे न कुछ बिगड़ता है ॥
याद रख, तू नहीं यह जिस्मे-कसीफ़[4]।
और हरगिज़ नहीं तू जिस्मे-लतीफ़[5] ॥
जिस्म तेरा कसीफ़[6] ओवर-कोट[7]।
जिस्म तेरा लतीफ़ अंडर[8]-कोट ॥
जिस्म-बेरूनी[9] झट बदलता है।
जिस्म अन्दर का देरपा[10] सा है ॥
देह स्थूल मर गया जिस वक़्त।
देह सूक्ष्म चला गया उस वक़्त ॥
देह सूक्ष्म फिरे है आवागमन।
तू तो हर जा[11] है, आना जाना कौन? ॥
पक्की मट्टी के बेशुमार घड़े।
भर के पानी से धूप में धर दे ॥

१ शरीर. २ ऐ मेरी जान! ऐ मेरे प्यारे! ३ चोगा, कोट है. ४ स्थूल शरीर. ५ सूक्ष्म शरीर. ६ स्थूल. ७ कोट के ऊपर का कोट. ८ कोट के नीचे का कोट. ९ बाह्य शरीर (अर्थात् ओवर कोट.) १० देर तक रहने वाला. ११ हर जगह है.

जितने बर्तन हैं, अक्स[1] भी उतने।
मुख़तलिफ से नज़र आयेंगे॥
लेक सूरज तो एक है सब में।
और जो साथंस पढ़ा हो मकतब में॥
तब तो जानोगे तुम, कि यह साया।
आब[2] अन्दर कभी नहीं आया॥
नूर[3] बाहर है, लेक धोके से।
बीच पानी के लोग थे समझे॥
अब यह पानी घड़े बदलता है।
टूटते हैं सबू[4], यह रहता है॥
पानी जिस्मे-लतीफ को जानो।
मट्टी जिस्मे-कसीफ पहिचानो॥
जाने-मन! तू तो मिहरे-तावां[5] है।
एक जैसा सदा दरख़शां[6] है॥
जेहल[7] से है तू क़ैद क़ालिब[8] में।
तुझ में सब कुछ है, तू ही है सब में॥
गो यह जिस्मे-लतीफ पानी सा।
बदलता है हमेशा ही अबदान[9]॥
पर तेरी ज़ाते-कुद्से[10] वाला का।
बाल हरगिज़ न हो सका बाँका[11]॥
मेरे प्यारे! तू आफ़ताब ही है।
अक्स मुतलक़ नहीं, तू आप ही है॥

---

१ प्रतिबिम्ब. २ पानी, जल. ३ प्रकाश. ४ घड़े, ठलिया. ५ प्रकाश करने वाला सूर्य. ६ चमकने वाला, प्रकाशस्वरूप. ७ अविद्या, अज्ञान. ८ शरीर. ९ स्थूल शरीर, देह. १० तेरा परम शुद्ध स्वरूप (आत्मा.) ११ टेढ़ा.

रूये-अनवर[1] ज़रा दिखा तू दे।
पानी उड़ता है, अक्स हो कैसे ? ॥
कैसा पानी, कहां तनासख़[2] हो ?।
मैं खुदा हूं, यक़ीन रासख़[3] हो ॥
इल्मे-ऑप्टिक्स[4] से गर करो कुछ ग़ौर।
तो सुबू, आब, मिहर[5] से नहीं और ॥
यह ज़मीन् और सारे सय्यारे[6]।
चश्मा-ए[7]-नूर से नहीं न्यारे[8] ॥
नेबूलर[9] मसले को जाने दो।
एक सीधी सी बात यूं देखो ॥
यह जो आबो-सुबू-ओ-सहरा[10] है।
रात काली में किस ने देखा है ॥
चश्म जब आफताब ने डाली।
पानी बर्तन दिखाये बनमाली ॥
आप बर्तन है, आप पानी है।
क्या अजब राम की कहानी है ॥
आप मज़हर[11] है, साया अफ़गन[12] आप।
साया मज़हर कहां ? है आप ही आप ॥
क्या तहय्युर[13] है, हाये हैरत है।
ग़ैर से क्या ग़ज़ब की ग़ैरत है ॥

---

१ प्रकाश वाला स्वरूप. (अपना स्वरूप.) २ आवागमन (मरना और फिर जीना.) ३ पक्का, मज़बूत. ४ नज़र, दृष्टि का शास्त्र. ५ पानी और सूरज. ६ आकाश के तारे इत्यादि. ७ प्रकाश के स्रोत, खज़ाने से. ८ जुदा, पृथक. ९ आकाश के तारे इत्यादि की विद्या के भेद. १० जंगल. ११ जगह ज़ाहिर होने की. १२ प्रतिबिम्ब डालने वाला. १३ आश्चर्य.

फैसी माया, यह कैसा तिलिस्म[1] है।
दुनियाँ तो हैरते मुजस्सम[2] है॥
अब ज़रा और ख़ौज़[3] कीजेगा।
यह अचम्भा अजीब है माया॥
कहिये आश्चर्य क्या कहाता है।
इन्तहा का मज़ा जो आता है॥
इन्तहा का मज़ा है आनन्द घन।
यानी ख़ुद राम सच्चिदानन्द घन॥
पस यह माया भी आप ही है ब्रह्म।
नाम रूप हैं कहां? है ख़ुद ही ब्रह्म॥
उमड आयी हो गर स्पाहे[4]-वैहम।
फिर भगा दो उसे, न जाना सैहम[5]॥
माया माया की कुछ नहीं दरअसल।
वसल कैसे हो. अहद[6] में कब फसल[7]॥
इस को देखें बदतवारे-अबद[8]।
तब तो माया यह जैहल[9] है बेदर्द॥
प्राण, अव्यक्त और अविद्या भी।
इल्लते[10] औला हैं, नाम इस के ही॥
ख्वाबे[11]-ग़फलत है, घन सुषुप्ती है।
दीद[12] कारण भी यह कहलाती है॥
आलमे-ख्वाब और बेदारी[13]।
इस ही चशमे से होगये जारी॥

---

१ जादू. २ आश्चर्यरूप. ३ विचार, सोचा. ४ भ्रम की फौज (सेना). ५ डर, भय. ६ अद्वैत, एक. ७ फ़ासला, अन्तर. ८ जीव के लिहाज़ से, जीव दृष्टि से. ९ अविद्या, अज्ञान. १० सबसे पहिला कारण, इत्यादि. ११ स्वप्न. १२ दृष्टि. १३ जाग्रत.

[१०७]

कारण शरीर।

जौग्रफी[1] में नक़्शा दरिया का।
जूं शजर[2] सरनगूं[3] है दिखलाया॥
गरचि निसबत शजर से रखता है।
जड़ को ऊर्ध्वा तने से रखता है॥
(ऊर्ध्व मूल मधः शाखा, गीता)
बेख़[4] दरिया की तरफ़ जड़ क़ायम।
रहती कैलास पर ही है दायम[5]॥
मुर्तफ़ा[6] बेख़ की तरह कारण।
मुंजमिद[7] सर्द ठोस ज़र्रीन[8] तन॥
सख़्त मस्ती ग़ुरूर से भरपूर।
नेसती[9], लाशरीक[10] हर्कत दूर॥

[१०८]

सूक्ष्म शरीर।

इस ही कारण शरीर से पैदा।
यह लतीफ़ो-कसीफ़[11] जिस्म हुआ॥
ऊंचे कोहों[12] पै बर्फ़ सारे हैं।
सोने चान्दी की झलक मारे हैं॥

---

१ भूगोल. २ वृक्ष. ३ सिर के बल, उलटा मुंह ४ मूल, जड़. ५ नित्य. ६ ऊंचे उठी हुई अर्थात ऊंची जड़ वाले की तरह. ७ जमा हुआ. ८ सुनैहली तन वाली. ९ अव्यक्त: १० अद्वितीय. ११ सूक्ष्म और स्थूल. १२ पर्वत.

पिघलते पिघलते बर्फ़ यही ।
पर्वतों पर बनी है गंगा जी ॥
इस से शफ़्फ़ाफ़ नदियां बहती हैं ।
खेलती जिन में लहरें रहती हैं ॥

कोह का, फूल फल का, पत्तों का ।
सारा लहरों से लुत्फ़ है देता ॥
नन्हें, नन्हें[1] यह सब नदी नाले ।
बर्फ़ ऊंची के बाल के बाले ॥

देनी निसबत इन्हें मुनासिब है ।
देह सूक्ष्म से, ऐन वाजिब है ॥
देह सूक्ष्म है "फ़िक्रो-अक़लो-होश ।
इमत्याज़ो-ख़यालो-गुफ़्तो-गोश[2]" ॥

आलमे-ख़्वाब[3] में यही सूक्ष्म ।
चलता पुरज़ा बना है क्या चग खग ॥
टेढ़े तिर्छे कलोल करता है ।
चुहल पुहलों में क्या लचकता है ॥

बर्फ़ जड़ औ शरीर कारण है ।
नूरे-अन्वार[4] मिहरे-रौशन है ॥
देह सूक्ष्म इसी से ढलता है ।
जूं पहाड़ी नदी निकलता है ॥

---

१ छोटे छोटे. २ अक़ल, होश, तमीज़, ख़याल, वाणी और श्रोत्रादि इन्द्रि से मन (अन्तःकरण) सूक्ष्म शरीर कहलाता है. ३ स्वप्नावस्था, ४ प्रकाशस्वरूप सूर्य (आत्मा) के नूर (तेज) हैं.

[१०६]

स्थूल शरीर।

ख़्वाब गुज़रा तो जाग्रत आई।
नदी मैदान में उतर आई॥
ज्यूंही सूक्ष्म ने क़दम यहां रक्खा।
गदला खाकी कसीफ़[1] जिस्म लिया॥
या कहो यूं कि जिस्मे-नाज़ुक[2] ने।
सूफ़ मोटे के कपड़े पैहने॥
शब को शीरीं-बदन जो सोता है।
जामा[3] तन से उतार देता है॥
जब ज़मिस्तां[4] की रात आती है।
नँगा दरियां को कर सुलाती है॥
वरिया करके मुशाहदा[5] देखा।
खिर्क़ा[6] हर साल में नया ही था॥
ठीक इस तौर पर ही, जिस्मे-लतीफ़।
बदलता पैरहन[7] है जिस्मे-कसीफ़॥
यूं तो हर शब लिबासे-ज़ाहिर को।
दूर करता है बदने दरबर[8] को॥
लक़ा[9] फिर सुबह पैहन लेता है।
स्थूल देह में फिर आन रहता है॥

---

१ मोटा, स्थूल. २ सूक्ष्म शरीर. ३ कपड़ा, वस्त्र, लिबास. ४ सरद ऋतु, शीत काल. ५ दृष्टि, नज़र करना. ६ वस्त्र, लिबास. ७ पोशाक. ८ अपने ऊपर के शरीर को. ९ किन्तु.

[११०]

आवागमन ।

लेक मरने समय यह जिस्मे-लतीफ़ ।
बदलता मुतलक़न[1] है जिस्मे-कसीफ़ ॥
जब पुरानी यह हो गयी पोशाक ।
दे उतारी यह फैंक दी पोशाक ॥
कैंचली चोला को उतार दिया ।
और ही जिस्म फिर तो धार लिया ॥
इस को कहते हैं हिंदू आवागमन ।
बदलना जिस्म का है आवागमन ॥

[१११]

आत्मा ।

मिहर[2] जो बर्फ पर दरख़शां[3] था ।
साफ़ नालों पे नूर[4]-अफ़शां था ॥
वही स्थूल रवदे[5] मैदान् पर ।
जल्वा अफ़गन[6] था, आबे-हैरां[7] पर ॥
एक दरिया के तीन मौक़ों पर ।
मिहर है एक हाज़िरो नाज़िर ॥

---

१ बिलकुल, नितान्त. २ सूर्य. ३ चमकीला. ४ प्रकाश छिड़कता था. ५ मैदान की नदी. ६ प्रकाश अर्थात् अपना बिम्ब डालने वाला है. ७ चञ्चल जल.

बल्कि दुनियाँ के जितने दरिया हैं।
तेहते परतौ[1] सभों के सेह[2] जा हैं॥
आत्मा एक तीन जिस्मों पर।
जल्वा-अफ़गन है, हाज़िरो-नाज़िर॥
सारी दुन्या के तीन जिस्मों पर।
एक आत्म है बातनो-ज़ाहिर[3]॥
आना जाना नहीं आत्म में।
यह तो मफ़रूज़[4] सब हुए तन में॥
आत्मा में कहां की आवागमन।
आये किस जा को? और जाये कौन?॥

[११२]

तीन वर्ण।

असल को अपने भूल कर इन्सान्।
भूला भटका फिरे है, हो हैरान्॥
भरता खरगोश जबकि जाता है।
झाड़ी झाड़ी में सिर छुपाता है॥
है तअक़ब[5] में वेह्म का सय्याद[6]।
छोड़ता ही नहीं ज़रा जल्लाद[7]॥
गाह[8] बदने-कसीफ़ में आया।
गाह जिस्मे-लतीफ़ में धाया॥

---

१ मकाश के तले. २ तीनों स्थान. ३ अन्दर और बाहर. ४ दलिस्त, फ़र्ज़ किये गये. ५ पीछे जाना, भागे हुए का पीछा करना. ६ शिकारी. ७ मारने वाला या पोस्त उतारने वाला ज़ालिम. ८ कभी.

कभी कारण में है पनाहगुज़ीं[1] ।
वैस से बन गया है वामांदीं[2] ॥

[११३]

शूद्र ।

जिसने स्थूल में निशस्त[3] करी ।
"जिस्म[4]-वेह हूं" ठान जी[5] में ली ॥
नक़्दे-उलफ़त को बदन में रक्खा ।
ऐशो-इशरत हवास[6] में चक्खा ॥
करलिया जिस्म अपना पाय:-ए-तख़्त ।
खाने पीने में समझ रक्खा बख़्त[7] ॥
न रक्खी इल्मो-फ़ज़ल से कुछ ग़र्ज़ ।
एक तनपरवरी[8] ही समझा फ़र्ज़ ॥
ग़र्ज़ यह थी, चला जो चाल कहीं ।
कि न हो जिस्म को ज़वाल[9] कहीं ॥
जिसको परवाह नहीं है इज़्ज़त की ।
है फ़क़त आर्ज़ू[10] तो लज़्ज़त की ॥
डाल कर लङ्गरे-अनानियत[11] ।
समझा दुनिया फ़सीफ़ जमीयत[12] ॥

१ आश्रय लेने वाला. २ हारा हुआ, थका मांदा. ३ स्थिति, आसक्ति. ४ पाञ्च अर्थात् स्थूल शरीर. ५ चित्त. ६ इन्द्रिय. ७ पुण्य भाग्य, शुभ प्रारब्ध. ८ केवल प्राण रक्षा या देह का पालनपोषण. ९ गिरना पतन. १० इच्छा, ख्वाहिश ११ अहङ्कार का लंगर. १२ इकट्ठा किया हुआ ख़ज़ाना

बेदरम[1] देह कसीफ़ का चाकर ।
इस को कहना ही चाहिये शूदर ॥

[११४]

वैश्य ।

डेरा जिस ने लतीफ़ में रक्खा ।
राजधानी उसे बना बैठा ॥
कह रहा है ज़ुबाने-हाल[2] से वह ॥
"देह सूक्ष्म हूं मैं" जो हो सो हो ॥
जो टटोली से क़ाबू आता है ।
ताना खञ्जर सा चीर जाता है ॥
भूका काटेगा नंगा रह लेगा ।
ज़ाहरी पीड़ दुःख सह लेगा ॥
मौक़ा शादी का हो, कि मरने का ।
मर मिटेगा नहीं वह डरने का ॥
घर गिरौ रख के खर्च कर देगा ।
चोटी क़र्ज़ से भी जकड़ देगा ॥
कोई मेरे को बोली मार न दे ।
जिस्म सूक्ष्म को गोली मार न दे ॥
फ़िकर हर दम जिसे यह रहती है ।
देखूं क्या ख़ल्क़[3] मुझ को कहती है ॥

---

१ एक पैसा भी जिसका मूल्य न हो, अति तुच्छ. २ अपनी वाणी अर्थात वाणी और ख़मस से. ३ जनता, लोग.

जान जिस की है निन्दा-स्तुति में ।
हमनशीनों[1] से बढ़ के इज़्ज़त में ॥
पल में तोला, घड़ी में माशा है ।
पेंडूलम[2] की तरह तमाशा है ॥
राये लोगों की मिस्ले-चौगां[3] है ।
गेंद सां दौड़ता हरासां है ॥
रात दिन पेचो-ताब है जिस को ।
नंग का इज़्तराब[4] है जिस को ॥
रहता इसी उधेड़ बुन में है ।
पासे-नामूस[5] ही की धुन में है ॥
जीता औरों की राये पर जो है ।
ख़्याले-वेहशत[6] फ़ज़ाये पर जो है ॥
क़ियास में जिस के टेढ़ा येढ़ापन ।
तबा[7] जिस की सदा है मुतलव्वन[8] ॥
गाह चढ़ती है, गाह घटती है ।
रुख पहाड़ी नदी बदलती है ॥
ऐसा वेह्मी मिज़ाज है जिस का ।
देह सूक्ष्म से काज है जिस का ॥
वैश्य कहना बजा है ऐसे को ।
शक्लो-सूरत में ख़्वाह कैसे हो ॥

---

१ बराबर वाले साथियों से. २ घड़ी के नीचे जो धातु का टुकड़ा एक ओर से दूसरी ओर लटकता रहता है. ३ गुल्ली डंडा के खेल की तरह. ४ घबराहट, व्याकुलता. ५ इज़्ज़त (नाम) का ख़्याल, शर्म. ६ नफरत बढ़ानेवाले ख़्याल. ७ प्रकृति (तबीयत). ८ नाना रंग बदलने वाली.

[११५]

क्षत्रिय ।

जिस की निष्ठा है देह कारण में ।
है अचल, बज़्म[1] में हो या रण में ॥
दुनियाँ हिल जायें पर न हिलता है ।
मुस्तक़िल[2]-अज़्म क़ौल पक्का है ॥
ख़्वाह तारीफ़ ख़्वाह मुज़म्मत[3] हो ।
शादी और ग़म पै जिस की क़ुदरत[4] हो ॥
ताज़ से भय जिसे ना असला[5] हो ।
दो दिली से न काम पतला हो ॥
जो नहीं देखता है पबलिक[6] को ।
मद्दे-नज़र बातने-मुबारिक हो ॥
राये पर और की न चलता है ।
क़ौम को आप जो चलाता है ॥
लोग दुनियाँ के बन मुख़ालिफ़ सब ।
जान लेने को आयें उस की जब ॥
ज़हर सूली सलीब[7] या फांसी ।
हँस के सहता है जैसे हो खांसी ॥
जिस को तारीफ़ की नहीं परवाह ।
ख़ाली तारीफ़ से ही वह होगा ॥
पैर पूजेंगे, नाम पूजेंगे ।
लोग सब उस की बात बूझेंगे[8] ॥

---

१ सभा. २ दृढ़ निश्चय. ३ निन्दा, घृणा. ४ ताक़त. ५ बिलकुल ६ जन साधारण, लोग ७ सूली. ८ समझेंगे.

उस को अवतार करके मानेंगे ।
लोग जब उस की बात जानेंगे ॥
धर्म क्षत्रिय है, यह मुबारिक धर्म ।
बरतर अज़ ख़ौफ़ो-नंगो, आरो-शर्म[1] ॥
आज इस धर्म की ज़रूरत है ।
धर्म यह बरतर अज़ कुदूरत[2] है ॥
नाम को ब्राह्मण हो, क्षत्रिय हो ।
नाम को वैश्य हो, कि शूद्र हो ॥
राष्ट्र को दरकार है, यह क्षत्रिय धर्म ।
आज नेशन[3] की है यह क्षत्रिय धर्म ॥
इस को कहते हैं लोग कैरैक्टर[4] ।
देह कारण को जान, इस का घर ॥
उस तलेटी पै रहता है क्षत्रिय ।
राना प्रताप और शिवा जी ॥
जिस से नदियां तमाम आती हैं ।
वह व्योपार को सजाती हैं ॥
हैं चमक दमक और आबो-ताब ।
यह बलन्दी है गोया आलमे[5]-ताब ॥
इस ज़मीन पर यह है बुलन्द[6] तरीं ।
मसनद[7] शाही को है ज़ेब[8] यहीं ॥
चलना व्यवहार का है सम्भाला ।
राज है उस का, मरतबा आला ॥

---

१ लज्जा, शर्म. २ मलिनता, गदलापन. ३ क़ौम, जाति. ४ नेक आचरण, उत्तम एवं दृढ़ चरित्र. ५ सारे जगत को रोशन करने वाली (प्रकाश देने वाली). ६ बहुत ऊंची. ७ गद्दी, तख़्त. ८ शोभा.

जोश है और ख़रोश है जिस में ।
शूरमापन का होश है जिस में ॥
शेरे-नर को न लाये ख़ातर में ।
तहलका डाले फ़ौजो-लश्कर में ॥
गरज से कोह को हिलाता है ।
दिल बबर[1] का भी दहिल जाता है ॥
जौक़[2]-दरजौक़, फ़ौज दल बादल ।
मिथ्या, ला[3] शै है, हेच[4] और बातल[5] ॥
धर्म की आन पर है जान क़ुर्बान् ।
गीदी[6] बन कर न हो कभी हैरान् ॥
वही क्षत्रिय है, राम का प्यारा ।
देश पर जिस ने जान को वारा ॥
मस्त फिरता है ज़ोर में, बल में ।
कौन्द जाता है बिजली बन, पल में ॥
तोप बंदूक़ की सदा[7] बलन्द से डर ।
उङ्गली लेता नहीं वह कान में धर ॥
कपकपी में नहीं कभी आता ।
लाले जान के पड़ें, नहीं डरता ॥
गोचे घायल हो, फिर भी सीनास्पर[8] ।
शोक करता नहीं, ना कुच्छ डर ॥
तीरो-तल्वार की दना दन में ।
अभिमन्यु[9] सा जा पड़े रण में ॥

---

१ बड़ा भारी शेर. २ झुण्ड के झुण्ड. ३ असत्य. ४ कुछ नहीं, तुच्छ. ५ झूठी. ६ कमज़ोर दिल. ७ आवाज़. ८ उत्साह से भरा हुआ (छाती मज़बूत किये युद्ध में डटा रहने वाला). ९ अर्जुन के पुत्र का नाम.

जां बाज़ी ही जिस की राहत[1] हो।
जंगो-ज़ोरावरी ही फ़रहत[2] हो॥
रण हो, घमसान का क़यामत हो।
बला का हंगामा[3], और शामत हो॥
ज़ख़्म ज़ख़्मों पै खूब खाता है।
पैर पीछे नहीं हटाता है॥
सख़्त से सख़्त कारज़ारो-रज़्म[4]।
शान्ति दिल में हो, अज़्म हो बिलजज़्म[5]॥
जिस्म हर्कत में, चित्त साकिन[6] हो।
दिल तो फ़ारिग़ हो, कारकुन तन हो॥
हर दो जानिब समा भयङ्कर था।
तुन्द मोरो-मलख़[7] सा लश्कर था॥
हाथी घोड़ों का, शूर वीरों का।
शंख बाजे का, और तीरों का॥
शोर था आस्मां को चीर रहा।
गर्द से मिहर बन फ़क़ीर रहा॥
अफ़रा तफ़री में और गड़बड़ में।
वह दिलावर कमाल की जड़ में॥
क्या दिखाता जवां मर्दी है।
क्या ही मज़बूत दिल है, मर्दी है॥
गीत ठण्डक भरा सुनाता है।
फ़िल्सफ़ा[8] क्या अजब बताता है॥

---

१ आराम, शान्ति आनन्द. २ खुशी, आमोद ३ युद्ध, लड़ाई. ४ महाभारत. ५ बड़े मज़बूत (पक्के) इरादे वाला. ६ स्थिर, अचल. ७ अगणित, बेशुमार, अगणेय. ८ शास्त्र, तत्त्वज्ञान.

[2] जिस के ज़ुल्फ़ों को ता अबद[1] कामिल।
सोचा चाहें ग़ौर से मिल मिल॥
मस्त नाज़ों[3] में शान्त यह सुर है।
सच्चा यह मन चला बहादुर है॥

[११७]

ब्राह्मण।

कोह[4] पर शिव नज़र जो आता है।
बर्फ़ को आब[5] कर बहाता है॥
जिस से कैलास ही न ताबाँ[6] है।
रौनक़े-बहर[7] और बियाबाँ है॥
वैश्य क्षत्रिय को और शूद्र को।
दे है प्रकाश किह-ओ-मिहतर[8] को॥
ओम् आनन्द आत्मा चैतन्य।
तीनों देहों में है जो नूर अफ़गन[9]॥
निष्ठा इस में है जिस की कि "यह मैं हूं"।
"शिव हूं, सूरज हूं, लाल शङ्कर हूं"॥
रूए-आलम[10] पै नूर-अफ़शान[11] है।
यह ब्राह्मण है, यह ब्राह्मण है॥

---

१ सदैव. २ यहां भगवान् कृष्ण से अभिप्राय है ३ नाज़ों में, भीषण शब्दों में. ४ पर्वत ५ जल. ६ चमकीला. ७ समुद्र की शोभा. ८ छोटे और बड़े सब को, ९ प्रकाश (तेज) डालने वाला. १० सारे संसार पर. ११ प्रकाशमान.

मुक्त खुद, दर्शनों से मुक्त करे।
नूर और ज़िन्दगी से चुस्त करे॥
तीन गुण से परे है, पर सब को।
नूर देता है, ख्वाह क्या कुछ हो॥
जिस को फरहत न दे कभी पैसा।
ब्राह्मण है वोही जो हो ऐसा॥
खड़ा करता है, नहीं दस्ते-दुआ[1]।
है ग़नी[2] ज्ञान[3] ही में वह धनी हुआ॥
माँगता ख्वाब में भी कुछ न है।
उस की दृष्टि से काञ्च कुंदन है॥
विष्णु को लात मार देता है।[4]
वह ब्राह्मण है, वह ब्राह्मण है॥
तीनों अजसाम से गुज़र कर पार।
यां[5] अदू[6] है नहीं न कोई यार॥
गुलशन में अपने खुद दरख़शां[7] हूं।
मिहरे-तावां[8] हूं, मिहरे-तावां हूं॥
मिन्नतें[9] क्या मज़े से खाता हूं।
नौते चटनी मिर्च लगाता हूं॥
मेरी किरणों में हो गया धोखा।
आब[10] का था सुराबे-दुन्या[11] का॥
किला दुःखों का सर किया, ढाया।
राज़ अफलाको-मिहर[12] पर पाया॥

---

१ मांगने के लिये हाथ पसारना. २ बड़ा धनवान. ३ स्वरूपरूप. ४ भृगु ऋषि से अभिप्राय है. ५ यहाँ है ६ दुश्मन, शत्रु. ७ रौशन. ८ प्रकाशमान् सूर्य. ९ मत भेद पन्थ १०-जल. ११ मृगतृष्णा के जल का. १२ आकाश और सूर्य.

हस्ते-मुतलक़[1], सरूरे-मुतलक़[2] पर।
झंडा गाड़ा, फुरेरा लेहराया॥
कुछ न विगड़ा था, कुछ न सुधरा अब।
कुछ गया था न, कुछ नहीं आया॥

---

१ सत्य स्वरूप. २ आनन्द स्वरूप.

नोट

अब राम-वर्षा का दूसरा भाग आरम्भ होता है। इस में भिन्न २ कवियों के वह भजन दर्ज हैं जिन को उत्तम वा आनन्द दायक समझ कर स्वामी राम ने उन के अपने ही रूप में या कुछ बदल कर अपनी नोट बुकों तथा लेखों में स्थान दे रक्खा था। और कुछ ऐसे भी हैं जिन को राम जी के पट्ट शिष्य श्री १०८ स्वामी नारायण ने उत्तम समझ कर इस नाम की पुस्तक में छापा था।

मंत्री.

राम-वर्षा ।

(द्वितीय भाग)

मंगलाचरण

[१]

लावनी ।

शुद्ध सच्चिदानन्द ब्रह्म हूं, अजर, अमर, अज, अविनाशी ।
जास ज्ञान से मोक्ष होजावे, कट जावे यम की फांसी ॥
अनादि ब्रह्म, अद्वैत, द्वैत का जा में नामो-निशान् नहीं ।
अखंड सदा सुख, जा का कोई आदि मध्य अवसां नहीं ॥
निर्गुण, निर्विकल्प, निरुपमा, जा की कोई शान नहीं ।
निर्विकार, निर्व्यंच, माया का जा में रञ्चक भान नहीं ॥

यहीं ब्रह्म हूं, मनन निरन्तर, करें मोक्ष हित संन्यासी ।
शुद्ध सच्चिदानन्द ब्रह्म हूं, अजर, अमर, अज, अविनाशी ॥ १ ॥

सर्व देशी हूं. ब्रह्म हमारा एक जगह अस्थान[1] नहीं ।
रमा हूं, सब में मुझ से कोई भिन्न वस्तु इन्सान नहीं ॥
देख विचारो, सिवाय ब्रह्म के हुआ कभी कुछ आन नहीं ।
कभी न छूटे पीड़ दुःख से जिसे ब्रह्म का ज्ञान नहीं ॥
ब्रह्म ज्ञान हो जिसे उसे नहीं पड़े भोगनी चौरसी ।
शुद्ध सच्चिदानन्द ब्रह्म हूं अजर, अमर, अज, अविनाशी ॥ २ ॥

अदृष्ट, अगोचर, सदा दृष्ट में जा का कोई आकार नहीं ।
नेति, नेति, कह निगम ऋषीश्वर, पाते जिसका पार नहीं ॥
अलख ब्रह्म लियो जान, जगत् नहीं, कार नहीं कोई यार नहीं ।
आंख खोल दिलको टुक प्यारे, कौन तरफ़ गुलज़ार नहीं ॥
सत्य रूप आनन्द-राशी हूं कहें जिसे घट घट वासी ।
शुद्ध सच्चिदानन्द ब्रह्म हूं अजर, अमर, अज, अविनाशी ॥ ३ ॥

[२]

सवैया राग पजाबी

सब शाहों का शाह मैं, मेरा शाह न कोय ।
सब देवों का देव मैं, मेरा देव न होय ॥
चाबुक सब पर है मेरा, क्या सुल्तान[2] अमीर ।
पत्ता मुझ बिन न हिले, आन्धी[3] मेरी असीर[4] ॥

१ स्थान. २ राजा महाराजा. ३ वायु की घटा, झक्कर. ४ अधीन.

गुरु-स्तुति

[३]

दादरा राग विभास

नारायण सब रम रह्या, नहीं द्वैत की गंध।
वही एक वस्तु[1] रूप है, पहिला बोलूं छन्द ॥ १ ॥
कृपा सद्गुरु देव से, कटी अविद्या फंद।
मैं तो शुद्ध ब्रह्म हूं द्वितीया बोलूं छन्द ॥ २ ॥
सो स्वरूप राम[2] को लखूं एक सच्चिदानन्द।
वह मेरो है आत्मा, तृतीया बोलूं छन्द ॥ ३ ॥
श्वास श्वास अनुभव करूँ, राम कृष्ण गोविन्द।
सो मैं ही कोई भिन्न न, चतुर्थ यह बोलूं छन्द ॥ ४ ॥
सो[3] स्वरूप, सो मैं लख्यो, निजानन्द मुकन्द।
सो आनन्द में एक रस, पञ्चम बोलूं छन्द ॥ ५ ॥

[४]

राग केदार ताल रूपक रे राम !

रफ़ीकों[4] में गर है मुरव्वत[5] तो तुझ से।
अज़ीज़ों[6] में गर है मुहब्बत तो तुझ से ॥ १ ॥
ख़ज़ानों में जो कुछ है दौलत तो तुझ से।
अमीरों में है जाह-ओ-सौलत[7] तो तुझ से ॥ २ ॥

---

१ अनेक, नाना. २ राम भगवान् वा राम स्वामी से भी अभिप्राय है. ३ वही, ४ मित्रों. ५ सत्कार, लिहाज़, कृपा, शील. ६ प्यारों में. ७ पद, मान और वैभव.

हकीमों में है इल्मो-हिकमत[1] तो तुझ से।
या रौनक़े-जहां[2], या है बर्कत तो तुझ से॥ ३॥
है रोकर यह तकरारे-उलफत[3] तो तुझ से।
कि इतनी यह हो मेरी किस्मत तो तुझ से॥ ४॥
मेरे जिस्मो-जाँ[4] में हो हर्कत तो तुझ से।
उड़े मा-ओ[5]-मनी की यह शिर्कत[6] तो तुझ से॥ ५॥
मिले सदक़ा[7] होने की इज़्ज़त तो तुझ से।
सदा एक होने की लज़्ज़त तो तुझ से॥ ६॥
उड़ें टेढ़ी बांकी यह चालाकियाँ सब।
सिपर[8] फैंक, ढूंढू सलामत[9] तो तुझ से॥ ७॥

[५]

राग खम्बाच

क्या क्या रक्खे है राम! सामान तेरी क़ुद्रत।
बदले है रंग क्या क्या, हर आन[10] तेरी क़ुद्रत॥ १॥
सब मस्त हो रहे हैं, पैहचान तेरी क़ुद्रत।
तीतर पुकारते हैं, सुबहान[11] तेरी क़ुद्रत॥ २॥
कोयल[12] की कूक में भी, तेरा ही नाम हैगा।
और मोर की ज़टल[13] में, तेरा ही प्याम[14] हैगा॥ ३॥

---

१ विद्या और चिकित्सा. २ संसार की सुन्दरता. ३ प्रेम के झगड़े और विवाद. ४ देह और प्राण. ५ अहंकार, ६ अलहदगी, जुदाई. ७ अर्पण होना. ८ जिस पर. ९ यथार्थ, कल्याण, आरोग्य. १० समय. ११ तेरी माया का क्या कहना है. १२ पंछी का नाम. १३ घांस. १४ पैगाम, सन्देशा खबर, चिट्ठी.

यह रंग सोलहड़े[1] का जो सुबहो-शाम[2] हैगा।
यह और का नहीं है, तेरा ही काम हैगा॥ ४॥
बादल हवा के ऊपर, घंघोर नाचते हैं।
मेंडक उछल रहे हैं, और मोर नाचते हैं॥ ५॥
बोलें बींये[3] बटेरे, कुमरी पुकारे कू कू।
पी पी करें पपीहा, बगले पुकारें तू तूं॥ ६॥
क्या फाखतों की हक हक[4], क्या हुद हुदों की हू हू।
सब रट रहे हैं तुझ को, क्या पंख[5] क्या पखेरू॥ ७॥

[६]

बरवा ताल तीन

कहीं कैवां[6] सितारह हो के अपना नूर चमकाया।
ज़ुहल में जा कहीं चमका, कहीं मरीख[7] में आया॥
कहीं सूरज हो क्या क्या तेज़ जल्वा[8] आप दिखलाया।
कहीं हो चाँद चमका और कहीं खुद बन गया साया॥

तू ही बातन[9] में पिनहां[10] है, तू ज़ाहर हर मकान पर है।
तू मुनियों के मनों में है, तू रिंदों की ज़ुबान पर है (टेक)॥ १॥

तेरा ही हुक्म है इन्दर, जो बरसाता है यह पानी।
हवा अटखेलियां करती है तेरे ज़ेरे[11]-निगरानी॥

१ मपकू, प्रातः व सायं आकाश में लाली. २ प्रातः सायं. ३ पक्षी का नाम ४ फाखता का नाम. ५ पक्षी बड़े छोटे. ६ शनिश्चर तारा. ७ मंगल तारा. ८ प्रकाश. ९ अन्दर. १० छिपा हुआ. ११ निग्रानी के नीचे, रक्षा या इन्तज़ाम के तले,

तजल्ली[1] आतशे-सोज़ां[2] में तेरी ही है नूरानी[3]।
पड़ा फिरता है मारा मारा डर से मर्गे-हैवानी[4] ॥ तू ही० २

तू ही आँखों में नूरे-मर्दमक[5] हो आप चमका है।
तू ही हो अक़ल का जौहर सिरों में सब के दमका है॥
तेरे ही नूर का जलसा है क़तरा में जो नम[6] का है।
तू रौनक़ हर चमन[7] की है, तू दिलबर जामे-जम[8] का है॥ तू ही० ३

कहीं ताऊस[9] ज़री[10] बाल बनकर रक्स[11] करता है।
दिखाकर नाच अपना मोरनी पर आप मरता है॥
कहीं हो फ़ाख़्ता[12] कू कू की सी आवाज़ करता है।
कहीं बुलबुल है ख़ुद है बाग़बां फिर उससे डरता है॥ तू० ४

कहीं शाहीन[13] बना, शहपर[14], कहीं शक्करा[15] है मस्ताना।
शिकारी आप बनता है, कहीं है आब[16] और दाना॥
लटक से चाल चलता है कहीं माशूक़े-जानाना[17]।
सनम[18] तू; ब्रह्मण, नाक़ूस[19] तू ख़ुद तू है बुतख़ाना[20] ॥ तू ही० ५

तू ही याक़ूत[21] में रौशन, तू ही पुखराज और दुर में[22]।
तू ही लाल-ओ-बदख़्शां[23] में, तू ही है ख़ुद समुद्र में॥
तू ही कोह[24] और दर्या में, तू ही दीवार में, दर[25] में।
तू ही सैहरा[26] में आबादी में तेरा नूर नय्यर[27] में॥ तू ही० ६

---

१ रोशनी. २ जलती हुई अग्नि. ३ चमक. ४ पशु स्वभाव, मृत्यु देवता. ५ आँख की पुतली की रोशनी. ६ तरी. ७ बाग़. ८ बादशाह जमशेद का प्याला. ९ मोर. १० सुनैहरी बालों वाला. ११ नाच. १२ मुर्गी (मुर्गाबी) (१३, १४, १५) पक्षियों के नाम. १६ पानी और दाना. १७ स्त्रियों की तरह. १८ मित्र प्यारा. १९ शंख. २० मंदिर (२१, २२, २३) मोती और रत्न. २४ पर्वत. २५ द्वार, घर. २६ जंगल. २७ सूर्य.

[७]

राग खमाज ताल ठुमरी

तूं ही हैं, मैं नाहीं वे सजनां[1]! तूंहीं हैं, मैं नाहीं (टेक)
जां[2] सोवां, तां[3] तूं नाले[4] सोवें, जां चल्लां[5], तां तू राहीं[6] ॥ तूं० १
जां बोला तां तूं नाले बोलें, चुप करां, मन माहीं[7] ॥ तूं० २
सहक[8] सहक के मिलिया दिलबर, जिंदड़ी[9] घोल गंवाई[10] ॥ तूं०४

[८]

राग दोहनी

जो दिल को तुम पर मिटा चुके हैं,
मज़ाके-उल्फत[11] उठा चुके हैं।
वह अपनी हस्ती[12] मिटा चुके हैं,
खुदा को खुद ही में पा चुके हैं ॥ १ ॥
न सूये-काबा[13] झुकाते हैं सर,
न जाते हैं बुतकदा[14] के दर[15] पर।
उन्हें हैं दैरो-हरम[16] बराबर,
जो तुम को किबला[17] बना चुके हैं ॥ २ ॥
न हम से प्यारे छुड़ाओ दामां[18],
न देखो बागे-बहारो-रिज़वां[19]।

---

१ रे प्यारे. २ जब. ३ तब. ४ साथ. ५ जब चलने लगूं. ६ तब तूं साथ रास्ते में होता है. ७ चुप होऊं तो तू मन के भीतर होता है. ८ तड़प तड़प के. ९ जान. १० उसी के पाने में या स्मरण में खो दी. ११ प्रेम का स्वाद, लुत्फ या प्रेमानन्द. १२ जीवन, स्थिति. १३ काबा (ईश्वर के घर,) की ओर. १४ मन्दिर. १५ द्वार. १६ मन्दिर, मस्जिद. १७ काबा या इष्ट देव १८ पल्ला. १९ स्वर्ग.

कब उनको प्यारे हैं हूरो-गिलमां[1],
जो तुम को प्यारा बना चुके हैं ॥ ३ ॥
सुना रही है यह दिल की मस्ती,
मिटा के अपना वजूदे-हस्ती[2] ।
मरेंगे यारो ! तलब[3] में हक़[4] की,
जो नामे-तालिब[5] लिखा चुके हैं ॥ ४ ॥
न बोल सकते थे कुछ ज़ुबां से,
न याद उन को है जिस्मो-जां[6] से ।
गुज़र गये हैं वह हर मकां[7] से,
जो उस के कूचे में आ चुके हैं ॥ ५ ॥
गर और अपना भला जो चाहो,
यह राम अपने से कह सुनाओ ।
भला रखो या बुरा बनाओ,
तुम्हारे अब हम कहा चुके हैं ॥ ६ ॥

[६]

राग पीलू ताल दीप चन्दी

जो तू है, सो मैं हूं, जो मैं हूं, सो तू है ।
न कुछ आर्ज़ू[8] है, न कुछ जुस्तजू[9] है ॥ १ ॥ (टेक)
बसा राम मुझ में, मैं अब राम में हूं ।
न इक है, न दो है, सदा तू ही तू है ॥ २ ॥

---

१. अपसरा और दास (लौंडे). २ जीवन या मांस की स्थिति. ३. जिज्ञासा. ४ सत्य स्वरूप, अपने प्यारे की. ५ जिज्ञासु का नाम. ६ देह माण. ७ स्थान, दर्जे, सीनों. ८ इच्छा. ९ जिज्ञासा.

उठा जब कि माया का परदा यह सारा ।
किया ग़म ख़ुशी ने भी मुझ से किनारा ॥ ३ ॥
ज़ुबां को न ताक़त, न मन की रसाई[1] ।
मिली मुझ को अब अपनी बादशाही ॥ ४ ॥

उपदेश

[१०]

शशि[2] सूर[3] पावक[4] को करे प्रकाश सो निजधाम[5] वे ।
इस चाम[6] से त्यज[7] नेह[8] तू, उस धाम कर विश्राम[9] वे ॥१॥
इक दमक तेरी पाय के सब चमकदा संसार वे ।
टुक[10] चीन्ह ब्रह्मानन्द को, जगनीर[11] से होय पार वे ॥ २ ॥
मंसूर[12] ने सूली सही, पर बोलता वही वयन[13] वे ।
बन्दा[14] न पायो ख़ल्क़[15] में, जब देखियो निज[16] नयन वे ॥ ३ ॥
आशिक़ लखावें सैन[17] जो, लख[18] सैन को कर चैन वे ।
तू आप मालिक ख़ुद ख़ुदा, क्यों भटकदा दिन रैन[19] वे ॥ ४ ॥
भाखे[20] ज्ञानी, सुन प्राणी, नीर[21] न, धर धीर वे ।
आपा[22] भुलायो, जग बनायो, सब अपनी तक़सीर[23] वे ॥ ५ ॥

---

१ पहुंचा. २ चन्द्रमा. ३ सूर्य. ४ अग्नि ५ अपना असली घर, परम धाम, अर्थात् आत्म-स्वरूप. ६ चमड़ा. अर्थात् देह. ७ छोड़. ८ प्रीति, आसक्ति. ९ आराम, चैन. १० ज़े, अनुभव कर. ११ भव जल, जगत रूपी समुद्र से पार हो, १२ एक मस्त ब्रह्मज्ञानी का नाम है. १३ कलमा, मंत्र, रमज़. १४ जीव, दास. १५ सृष्टि, जगत. १६ अपने नेत्र. १७ इशारा, संकेत. १८ समझ, याद कर. १९ रात्रि. २० कहे. २१ जल, २२ अपना स्वरूप. २३ क़सूर, दोष, अपराध.

[११]

झिंझोटी ताल दादरा

ग़फ़लत से जाग देख क्या लुतफ़ की बात है } (टेक)
नज़दीक यार है मगर नज़र न आत है }
दूई की गर्द[1] से चश्म[2] की रौशनी गई।
महबूब[3] के दीदार[4] की ताक़त नहीं रही॥
इसी बात से दुन्यां के तू फंदे में फाथ[5] है॥ गफ़० १
बिसियार[6] तलब[7] है अगर तुझे दीदार की।
मुर्शद[8] के सखुन[9] से चलो गली विचार की॥
जिस से पलक में सब फंद टूट जात है॥ गफ़० २
जिस के ज़ुलूस[10] से तेरा रौशन वजूद[11] है।
खलक[12] की सभी खूबियों का भी जो खूब है॥
सोई है तेरा यार यह सब वेद गात है॥ गफ़० ३
कहते हैं ब्रह्मानंद नहीं तेरे से जुदा।
तु ही है तू कुरान में लिखा है जो खुदा॥
जिगर में लेक[13] समझाना मुश्किल की बात है॥ गफ़० ४

[१२]

झिंझोटी ताल दादरा

गाफिल! तू जाग देख क्या तेरा स्वरूप है।
किस वास्ते पड़ा जन्म मरण के कूप[14] है॥ (टेक)

---

१ धूल. २ आँख, नेत्र. ३ प्यारा, मशूक़. ४ दर्शन. ५ फाँसा, फंसा हुआ ६ अधिक, बहुत. ७ जिज्ञासा, ढूंढ, चाह. ८ गुरु. ९ उपदेश, नसीहत. १० दरबार, उपस्थिति अर्थात् मौजूदगी. ११ शरीर. १२ सृष्टि. १३ किन्तु. १४ कुआँ, गढ़ा.

यह देह गेह नाशवान है नहीं तेरा।
वृथाभिमान ज्ञात में फिरे कहां घेरा॥
तू तो सदा विनाश से परे अनूप[1] है॥ गाफ़िल तूं० १
मंद दृष्टि कौन जभी दीन हो गया।
स्वभाव अपने से ही आप हीन हो गया॥
विचार देख एक तू भूपों[2] का भूप है॥ गाफ़िल० २
तेरे प्रकाश से शरीर चित्त चेतता[3]।
तू देह तीन दृश्य का सदा है देखता॥
द्रष्टा नहीं होता कभी दृश्यरूप है॥ गाफ़िल० ३
कहते हैं ब्रह्मानंद, ब्रह्मानंद पाइये।
इस बात को विचार सदा दिल में लाइये॥
तू देख जुदा करके जैसे छाया धूप है॥ गाफ़िल० ४

[१३]

झंझोटी ताल दादरा।

अजी मान, मान, मान, कहा मान ले मेरा।
जान, जान, जान, रूप जान ले तेरा॥ (टेक)
जाने बिना स्वरूप, ग़म न जावे है कभी।
कहते हैं वेद बार बार बात यह सभी॥
हुशियार हो आज़ाद, बार[4] डार में मेरा॥ मान, मान १
आता है देखने जिसे काशी द्वारका।
मुक़ाम है बदन में तेरे उसी यारका॥

१ समुद्र, आनन्द भरा. २ स्वामी, बादशाह ३ हरकत करता, चिन्तवन करता ४ भार.

लेकिन बिना विचार किसी ने नहीं हेरा[1] ॥ मान० २
नयनन[2] के नयन जो है सो बैनन[3] के बैन हैं ।
जिस के बिना शरीर में न पलक चैन है ॥
पिछान ले बखूब[4] सो स्वरूप है तेरा ॥ मान० ३
ऐ प्यारी जान ! जान तू भूपों की भूप है ।
नाचत है प्रकृति सदा मुजरा अनूप है ॥
संभाल अपने को, वह तुझे करे न घेरा ॥ मान० ४
कहते हैं ब्रह्मानन्द, ब्रह्मानन्द तू सही ।
बात यह पुराण वेद ग्रन्थ में कही ॥
विचार देख मिटे जन्म मरण का फेरा[5] ॥ मान० ५

[१४]

राग भैरवी ताल ठुमरी ।

दिलबर पास वसदा, ढूंडन किथे[6] जावना ॥ टेक०
गली ते[7] बाज़ार ढूण्डो, शहर ते द्यार[8] ढूंडो ।
घर घर हज़ार ढूंडो, पता नहीं पावना ॥ दिलवर पास० १
मक्के ते मदीने जाईये, मथे चा मसीत[9] घसाईये ।
उची कूक बांग सुनाईये, मिल नहीं जावना ॥ दिलवर० २
गंगा भावें[10] जमुना नहावो, काशी ते प्रयाग जावो ।
बद्री केदार जावो, घुड़[11] घर आवना ॥ दिलवर पास० ३

---

१ पाया. २ चक्षु, आँखें. ३ ज्ञान-चक्षु अथवा अन्तरीय दृष्टि, बुद्धि इत्यादि. ४ अच्छी तरह से. ५ आवागमन का चक्कर. ६ कहाँ. ७ और ८ देश. ९ मसजिद. १० चाहे, चाहे. ११ वापिस.

देस ते इसौर ढूंडो, दिल्ली ते पशौर ढूंडो ।
भावें ठौर ठौर ढूंडो, किसे न बतावना ॥ दिलबर पास० ४
बनो जोगी ते वैरागी, संन्यासी जगत त्यागी ।
प्यारे से न प्रीत लागी, भेस की वटावना ॥ दिलबर पास० ५
भावें गले माला डाल, चंदन लगावो भाल ।
प्रीत नहीं साईं नाल, जगत नूं दिखावना ॥ दिलबर पास० ६
मोमनांदी[1] शकल बनावें, काफरां दे कम्म कमावें ।
मथे[2] ते मेहराब[3] लगावें, मौलवी कहावना ॥ दिलबर पास० ७

[९५]

राग भैरवी ताल तीन ।

बराये-नाम[4] भी अपना न कुच्छ बाक़ी निशां रखना ।
न तन रखना, न दिल रखना, न जाँ[5] रखना, न जां रखना ॥ १ ॥
तअ़ल्लुक़[6] तोड़ देना, छोड़ देना उस की पाबंदी[7] ।
खबरदार अपनी गर्दन पर न यह बारे-गिरां[8] रखना ॥ २ ॥
मिलेगी क्या मदद तुझ को मददगाराने-दुनियाँ[9] से ।
उमेदे-यावरी[10] उन से न यहां रखना, न वहां रखना ॥ ३ ॥
बहुत मज़बूत घर है आक़बत[11] का दारे-दुनियाँ[12] से ।
उठा लेना यहां से अपनी दौलत और वहां रखना ॥ ४ ॥

---

१ सन्तों की. २ पेशानी पर, माथे पर. ३ दहलीज़ की राख, या. मंदिर के पत्थरों की राख, भस्म. ४ नाम मात्र भी. ५ चित्त. ६ सम्बन्ध. ७ क़ैद, मजबूरी, विवशता. ८ भारी बोझ. ९ संसार के सहायकों. १० फल की आशा. ११ परलोक. १२ संसार के घर से.

उठा देना तसव्वर[1] ग़ैर[2] की सूरत का आँखों से।
फ़क़त सीने के आईने[3] में नक़्शे-दिलस्तान्[4] रखना ॥ ५ ॥
किसी घर में न घर कर बैठना इस दारे-फ़ानी[5] में।
ठिकाना बे ठिकाना और मकाँ बर लामकाँ[6] रखना ॥ ६ ॥

[१६]

राग सोहनी ताल तेवरा।

दुनियाँ अजब बाज़ार है, कुछ जिन्स[7] यहां की साथ ले।
नेकी का बदला नेक है, बद से बदी की बात ले ॥
मेवा खिला, मेवा मिले, फल फूल दे, फल पात ले।
आराम दे, आराम ले, दुःख दर्द दे, आफ़ात[8] ले ॥

कलजुग नहीं करजुग है यह, यहां दिन को दे और रात ले। }
क्या खूब सौदा नक़द है, इस हाथ दे उस हाथ ले ॥ } टेक

काँटा किसी के मत लगा, गो मिस्ले-गुल[9] फूला है तू।
वह तेरे हक़[10] में तीर है, किस बात पर भूला है तू ॥
मत आग में डाल और को, क्या घास का पूला है तू।
सुन रख यह नुक़ता बेख़बर, किस बात पर भूला है तू ॥

कलजुग नहीं० ॥२॥

---

१ भ्रम, खियाल. २ द्वैत भावना. ३ अन्तःकरण के शीशे में. ४ दिल रूपी प्यारे (आत्मा, यार) की सूरत (का ध्यान) रखना. ५ मृत्युलोक. ६ देशातीत या स्थान रहित. ७ वस्तु, चीज़. ८ दुःख, मुसीबत. ९ पुष्प की तरह. १० तेरे वास्ते, तेरे लिए.

शोख़ी शरारत मक्रो-फ़न[1], सब का बसेरा[2] है यहां ।
जो जो दिखाया और को, वह ख़ुद भी देखा है यहां ॥
खोटी खरी जो कुछ कही, तिस का परेखा[3] है यहां ।
जो जो पड़ा तुलता है मोल, तिल तिल का लेखा है यहां ॥
कलजुग नहीं० ॥३॥

जो और की बस्ती[4] रखे, उस का भी बसता है पुरा ।
जो और के मारे छुरी, उस के भी लगता है छुरा ॥
जो और की तोड़े घड़ी, उस का भी टूटे है घड़ा ।
जो और की चीते[5] बदी, उस का भी होता है बुरा ॥
कलजुग नहीं० ॥४॥

जो और को फल देवेगा, वह भी सदा फल पावेगा ।
गेहूं से गेहूं, जौ से जौ, चाँवल से चाँवल पावेगा ॥
जो आज देवेगा यहां, वैसा ही वह कल पावेगा ।
कल देवेगा कल पावेगा, फिर देवेगा फिर पावेगा ॥
कलजुग नहीं० ॥५॥

जो चाहे ले चल इस घड़ी, सब जिन्स यहां तैयार है ।
आराम में आराम है, आज़ार[6] में आज़ार है ॥
दुनियां न जान इस को मियां, दरिया की यह मँझधार है ।
औरों का बेड़ा पार कर, तेरा भी बेड़ा पार है ॥
कलजुग नहीं० ॥६॥

तू और की तारीफ़ कर, तुझ को सनाख़्वानी[7] मिले ।
कर मुश्किल आसां और की तुझ को भी आसानी मिले ॥

---

१ दग़ा फरेब, धोखा. २ बसेरा, रहने की जगह, घर. ३ परखना, जाँचना. ४ नगरी ५ दिल में लाना, विचार करे. ६ दुःख. ७ तारीफ़, स्तुति.

तू और को मेहमान कर, तुझ को भी मेहमानी मिले ।
रोटी खिला रोटी मिले, पानी पिला पानी मिले ॥

कलजुग नहीं० ॥७॥

जो गुल[1] खिलावे और का, उसका ही गुल खिलता भी है ।
जो और का कीले[2] है मुंह, उस का ही मुंह किलता भी है ॥
जो और का छीले जिगर, उस का जिगर छिलता भी है ।
जो और को देवे कपट, उस को कपट मिलता भी है ॥

कलजुग नहीं० ॥८॥

कर चुक जो कुछ करना है अब, यह दम तो कोई आन[3] है ।
नुक़सान में नुक़सान है, एहसान में एहसान है ॥
तोहमत में यहां तोहमत मिले, तूफ़ान में तूफ़ान है ।
रैहमान[4] को रैहमान है, शैतान को शैतान है ॥

कलयुग नहीं० ॥९॥

यहाँ ज़हर दे तो ज़हर ले, शक्कर में शक्कर देख ले ।
नेकों को नेकी का मज़ा, मूज़ी[5] को टक्कर देख ले ॥
मोती दिये मोती मिले, पत्थर में पत्थर देख ले ।
गर तुझ को यह बावर[6] नहीं, तो तू भी करके देख ले ॥

कलयुग नहीं० ॥१०॥

अपने नफ़े के वास्ते मत और का नुक़सान कर ।
तेरा भी नुक़सान होवेगा, इस बात पर तू ध्यान कर ॥

---

१ फूल, पुष्प. २ कीले अर्थात् निन्दा करना या किसी पर धब्बा वा दाग़ लगाना. ३ घड़ी, पल. ४ दाता, कृपालु, बरकत देने वाला. ५ रुलाने वाला, दुःख देने वाला. ६ निश्चय, दलील.

खाना जो खा सो देख कर, पानी पिये सो छान कर।
यहाँ पाँ को रख तू फूंक कर, और ख़ौफ़ से गुज़रान कर॥
कलयुग नहीं० ११

ग़फ़लत की यह जगह नहीं, साहिबे-इदराक[1] रहे।
दिलशाद[2] रख दिल शाद रहे, ग़मनाक रख ग़मनाक रहे॥
हर हाल में भी तू नज़ीर[3], अब हर क़दम की ख़ाक रहे।
यह वह मकाँ है ओ मियाँ! याँ पाक[4] रहे, बेबाक[5] रहे॥
कलयुग नहीं० १२

[१७]

राग सोहनी ताल तेवरा।

दुनियाँ है जिसका नाम मीयाँ! यह अजब तरह की बस्ती[6] है।
जो मँहगों को तो मँहगी है और सस्तों को यह सस्ती है॥
यहां हरदम झगड़े उठते हैं, हर आन[7] अदालत बस्ती है।
गर मस्त करे तो मस्ती है और पस्त[8] करे तो पस्ती है॥

कुछ देर नहीं, अंधेर नहीं, इन्साफ़ और अदलपरस्ती[9] है। } टेक
इस हाथ करो उस हाथ मिले, यहां सौदा दस्त बदस्ती है॥

जो और किसी का मान रखे, तो उस को भी अरु मान मिले।
जो पान खिलावे पान मिले, जो रोटी दे तो नान[10] मिले॥

---

१ तीव्र द्रष्टा, तेज़ समझ वाला पुरुष. २ प्रसन्न चित्त, आनन्दित चित्त. ३ कवि का नाम है. ४ शुद्ध, पवित्र. ५ निडर, बेख़ौफ़, भय-रहित. ६ वस्तु है. ७ हर वक्त, हरदम ८ बढ़ाना, काम करना जो अर्थात् झगड़े बढ़ावे तो उसके वास्ते बाज़ार गर्म है और जो लड़ाई झगड़ों को घटाना चाहे तो उसके वास्ते घटा हुआ बाज़ार है. ९ न्यायकारी, इन्साफ़ १० रोटी.

नुक़सान करे नुक़सान मिले, एहसान करे एहसान मिले ।
जो जैसा जिस के साथ करे, फिर वैसा उस को आन मिले ॥
कुछ देर नहीं अंधेर० २

जो और किसी की जां बख़्शे, तो हक़[1] उस की भी जान रखे ।
जो और किसी की आन[2] रखे, तो उस की भी हक़ आन रखे ॥
जो यहां का रहने वाला है, यह दिल में अपने ठान रखे ।
यह तुरत फ़ुरत[3] का नक़्शा है, उस नक़्शे को पहचान रखे ॥
कुछ देर नहीं अंधेर० ३

जो पार उतारे औरों को, उस की भी नाव उतरनी है ।
जो ग़र्क़ करे फिर उस को भी यां डुबकूं डुबकूं करनी है ॥
शमशेर, तबर, बंदूक़, सनां[4] और नश्तर तीर निहरनी[5] है ।
यां[6] जैसी जैसी करनी है, फिर वैसी वैसी भरनी है ॥
कुछ देर नहीं अंधेर० ४

जो और का ऊँचा बोल[7] करे, तो उस का बोल[8] भी बाला है ।
और दे पटके तो उस को भी कोई और पटकने वाला है ॥
बेजुर्म ख़ता[9] जिस ज़ालिम[10] ने मज़लूम[11] ज़िबह[12] कर डाला है ।
उस ज़ालिम के भी लहू का फिर बेहता नदी नाला है ॥
कुछ देर नहीं अंधेर नहीं० ५

---

१ ईश्वर. २ इज़्ज़त, मान ३ जल्दी, फ़ौरन अर्थात् बदले का बदला फ़ौरन ही मिल जाता है ऐसा दुनियां का नक़्शा है. ४ भाला. ५ निहरण, छीलना या छीलने का या नाख़ून काटने का औज़ार, इस पंक्ति में सब हथियारों के नाम हैं. ६ इस जगह, इस दुनियां में. ७ बड़ी इज़्ज़त से पुकारे या किसी का ज़िकर करे. ८ नामवरी, इज़्ज़त. ९ अपराध रहित पुरुष. १० ज़ुल्म करने वाला, या नाहक़ दुःख देने वाला. ११ जिस पर ज़ुल्म किया गया हो अर्थात् दुःखी, पीड़ित. १२ गला घोंट कर या छुरी से मार डाला है.

जो मिसरी और के मुंह में दे, फिर वह भी शक्कर खाता है ।
जो और के तईं अब टक्कर दे, फिर वह भी टक्कर खाता है ॥
जो और को डाले चक्कर में, फिर वह भी चक्कर खाता है ।
जो और को ठोकर मार चले, फिर वह भी ठोकर खाता है ॥

कुछ देर नहीं अंधेर० ६

जो और किसी को नाहक़ में कोइ झूठी बात लगाता है ।
और कोइ ग़रीब बिचारे को नाहक़ में जो लुट जाता है ॥
वह आप भी लूटा जाता है और लाठी मुक्की खाता है ।
वह जैसा जैसा करता है फिर वैसा वैसा पाता है ॥

कुछ देर नहीं अंधेर० ७

है खटका उस के साथ लगा, जो और किसी को दे खटका ।
वह ग़ैब[1] से झटका खाता है, जो और किसी को दे झटका ॥
चीरे[2] के बदले चीरा है, पटके[3] के बदले है पटका ।
क्या कहिये और नज़ीर आगे, यह है तमाशा झटपट[4] का ॥

कुछ देर नहीं अंधेर० ८

[१८]

लावनी ।

नाम राम का दिल से प्यारे, कभी भुलाना न चाहिये ।
पा कर नर का बदन रतन को, ख़ाक मिलाना न चाहिये ॥

---

१ अव्यक्त, दैवयोग से अर्थात् ईश्वर से वह चोट खाता है. २ एक प्रकार की सुंदर पगड़ी का नाम है. ३ पटका भी एक उत्तम पगड़ी को कहते हैं. ४ उसी समय (तुरंत) बदला देने वाला.

सुंदर नारी देख प्यारी, मन को लुभाना न चाहिये ।
जलति अगन में जान पतंग समान समाना न चाहिये ॥
बिन जाने परिणाम[1] काम को हाथ लगाना न चाहिये ।
कोई दिन का ख्याल कपट का जाल बिछाना न चाहिये ॥ नाम १

यह माया बिजली का चमका, मन को जमाना न चाहिये ।
बिछड़ेगा संयोग भोग का रोग लगाना न चाहिये ॥
लगे हमेशा रंग संग दुर्जन के जाना न चाहिये ।
नदी नाव की रीत किसी से प्रीत लगाना न चाहिये ॥ नाम २

बांधव[2] जन के हेत[3] पाप का खेत जमाना न चाहिये ।
अपने पाँव पर अपने कर[4] से चोट लगाना न चाहिये ॥
अपना करना भरना दोष किसी पर लाना न चाहिये ।
अपनी आँख है मंद चंद को दो बतलाना न चाहिये ॥ नाम ३

करना जो शुभ काज आज कर देर लगाना न चाहिये ।
कल जाने क्या हाल काल को दूर पिछाना न चाहिये ॥
दुर्लभ तन को पाय कर विषयों में गंवाना न चाहिये ।
भवसागर में नाव पाय चक्कर में डुबाना न चाहिये ॥ नाम ४

दारादिक[5] सब घेर फेर तिन में अटकाना न चाहिये ।
करी वमन[6] के ऊपर फिर कर दिल ललचाना न चाहिये ॥
ज्ञान आपनो रूप कूप[7] गृह में लटकाना न चाहिये ।
पूरे गुरु को खोज मज़हब का बोझ उठाना न चाहिये ॥ नाम ५

बचा चाहे पापन से मन से मौत भुलाना न चाहिये ।
जो है सुख की लाग, तो कर सब त्याग, फसाना न चाहिये ॥

---

१ नतीजा. २ सम्बन्धी. ३ कारण. ४ हाथ. ५ स्त्री इत्यादि. ६ कै की हुई या उलटी. ७ घर रूपी कुंआ नेत्र मिलाप.

जो चाहे तू ज्ञान, विषय के बाण चलाना न चाहिये ।
जो है मोक्ष की आश[1] संग की पाश[2] बढ़ाना न चाहिये ॥ नाम ६

परमेश्वर है तन में वन में खोजन जाना न चाहिये ।
कस्तूरी है पास, मृग को घास सुंघाना न चाहिये ॥
कर सत्संग, विचार, निहार, कभी बिसराना न चाहिये ।
आत्म सुख को भोग, भोग में फिर भटकाना न चाहिये ॥ नाम ७

[१६]

भावनी १

चेतो चेतो जल्द मुसाफिर गाड़ी जाने वाली है । ⎫
लाइन क्लियर लेने को तय्यार गार्ड वन्माली है ॥ ⎭ टेक

पांच धातु की रेल है जिसको मन अंजन लेजाता है ।
इन्द्री गण के पहियों से वह खूब ही तेज़ चलाता है ॥
मील हज़ारों चलने पर भी थकने वह नहीं पाता है ।
कठिन वज्र लोहे जैसा होकर चंचलता दिखलाता है ॥
बड़े गार्ड वन्माली से होती इस की रखवाली है ॥ १ ॥ चेतो०

जाग्रत स्वप्न सुषुप्ति तुरिया चार मुख्य स्टेशन हैं ।
आठ पैहर इन ही में विचरे रेल सहित यह अंजन है ॥
कर्म, उपासन, ज्ञान टिकट घर लेता टिकट हर इक जन है ।
फ़र्स्ट, सैकंड, अरु थर्ड क्लास ले जितना पल्ले शुभ धन है ॥
बैठ न पावे हरगिज़ वह नर जो इस ज़र[3] से खाली है ॥ २ ॥ चेतो०

---

१ उमेद, आशा. २ फांसी, फाही, जाल. ३ धन.

रहगीरों के ललचाने को नाना रूप से सजती है।
तीन घंटिका बाल, तरुण, और जरा[1] की इस में बजती हैं॥
तीसरी घंटी होने पर झट जगह को अपनी तजती है।
आने जाने सीटी देकर रोती और चिल्लाती है॥
धर्म सनातन लाइन छोड़ के निपट[2] बिगड़ने वाली है॥३॥ चेतो०
पाप पुण्य के भार का बंडल अक्सर साथ ही रखते हैं।
काम क्रोध लोभादिक डाकू खड़े राह में तकते हैं॥
स्टेशन स्टेशन पर रागादिक रिपू[3] भटकते हैं।
पुलिसमैन सद्गुरु उपदेशक रक्षा सब की करते हैं॥
निर्भय वह ही जाता है जो होवे पूरा ज्ञानी है॥ ४॥ चेतो०

[६०]

तर्ज़ लैलीं मजनूं।

प्रभू प्रीतम जिस ने बिसारा। हाय जनम अमोलक बिगाड़ा॥ टेक
धन दौलत माल खज़ाना, यह तो अन्त को होवे बेगाना।
सत्य धर्म को नाहीं बिचारा, भूला फिरता है मुग्ध[4] गंवारा॥१॥ प्रभू
झूठे मोह में तन मन दीना, नाहीं भजन प्रभू का कीना।
पुत्र पौत्र और परिवारा[5], कोई संग न चल्लन हारा॥ २॥
भ्रातृ भाव न प्रीति परस्पर, कपट छल है भरा मन अन्दर।
कुछ भी किया न परउपकारा, खोटे कर्मों का लिया अजारा[6]॥३॥ प्रभू
तेरा यौवन और जवानी, ढलती जावे ज्यों बर्फ का पानी।
मीठी नींद में पाँओं पसारा, चिड़ियां चुग गयी खेत तुम्हारा॥ ४॥ प्रभू

---

१ बुढ़ापा. २ बल्द. ३ बदमाश, दगाबाज, शत्रु ४ मूर्ख. आवारह गर्द. ५ कुटुम्ब. ६ ठेका.

धोके बाज़ी के दाम फैलाये, विषय भोग के चैन उड़ाये ।
पुण्य दान से रहा नियारा, ऐसे पुरुषों को हो धिक्कारा ॥ ५ ॥ प्रभू
जो जो शास्त्र वेद बखाने[1], मूर्ख उलटा ही उन को जाने ।
समय खोया है खेल में सारा, सत्संग से किया किनारा ॥ ६ ॥ प्रभू
ऐसे जीने पै तू अभिमानी, टीला रेत का ज्यों बीच पानी ।
क्यों न गुण अरु कर्म सुधारा, मानुष जन्म न हो बारंबारा ॥७॥ प्रभू
तेरे करम हैं नाव[2] समाना, जिस में बैठा है तू अज्ञाना ।
गैहरी नदिया है दूर किनारा, कोई दम में तू डूबन हारा ॥ ८ ॥ प्रभू
अपने दिल में तू जागरे भाई, कुछ तो कर ले नेक कमाई ।
संग जाये नहीं सुत दारा[3] सत्य धर्म ही देगा सहारा ॥ ९ ॥ प्रभू

[२१]

रागनी भिभास ताल तीन ।

तू कुछ कर उपकार जगत में, तू कुछ कर उपकार । टेक
मानुष जनम अमोलक तुझ को मिले न वारंवार ॥ १ ॥ तू
सुकृत[4] अपना कर धन संचय, यह वस्तू है सार ।
देश उन्नती कर पितृ सेवा, गुणियन का सत्कार ॥ २ ॥ तू
शील, संतोष, परस्वारथ, रति[5], दया, क्षमा उर धार ।
भूखे को भोजन, प्यासे को पानी, दीजे यथा अधिकार ॥ ३ ॥ तू
कठिन समय में होवेंगे साथी तेरे श्रेष्ठ आचार ।
इस लिये इन का कर तू संग्रह[6], सुख हो सर्व प्रकार ॥ ४ ॥ तू
होय अज्ञानी कहे बन्दा गन्दा, तिस को है धिक्कार ।
है ज्ञान ही औषध सब अवगुण[7] की करते वेद पुकार ॥ ५ ॥ तू

---

१ उपदेश करे. २ नाव, बेड़ी, किश्ती. ३ स्त्री पुत्र. ४ पुण्य कर्म रूपी धन, ५ आराम, आनन्द, खुशी ६ एकत्र. ७ क़सूर पाप, बेवकूफियां.

[२२]

झींझोटी ताल दादरा।

राम सिमर राम सिमर यही तेरो काज[1] है ॥ टेक
माया को संग त्याग, प्रभू जी की शरण लाग।
जगत सुख मान मिथ्या झूठो ही सब साज है ॥ १ ॥ राम
स्वप्ने जैसा धन पैहचान, काहे पर करत मान।
बालू की सी भित्त[2] जैसे, वसुधा[3] को राज है ॥ २ ॥ राम
नानक[4] जन कहत बात, विनस जाये तेरो गात[5]।
छिन छिन कर गयो काल, ऐसे जात आज है ॥ ३ ॥ राम

[२३]

राग धुन ताल तीन।

काहे शोक करे नर मन में, वह तेरा रखवारा है रे ॥ टेक
गर्भवास से जब तू निकला दूध स्तनों में डारा है रे।
बालकपन में पालन कीनो, माता मोह द्वारा है रे ॥ १ ॥ काहे०
अन्न रचा मनुषों के कारण, पशुओं के हित चारा है रे।
पक्षी वन में पान फूल फल, सुख से करत अहारा है रे ॥ २ ॥ काहे०
जल में जलचर रहत निरंतर, खावें मास करारा है रे।
नाग बसें भूतल के मांहि, जीयें वर्ष हजारा है रे ॥ ३ ॥ काहे०
स्वर्ग लोक में देवन के हित, बहुत सुधा की धारा है रे।
ब्रह्मानंद फिकर सब तज के, सिमरो सर्जन हारा है रे ॥४॥ काहे०

---

१ फर्ज, काम. २ रेत से घर या रेत की दीवारें. ३ धन दौलत. ४ कवि का नाम है. ५ अंग, बदन.

[२५]

राग भूपाली ताल दादरा ।

विश्वपति के ध्यान में जिस ने लगाई हो लगन ।
क्यों न हो उस को शान्ति, क्यों न उस का मन मगन ॥

काम क्रोध लोभ मोह यह हैं सब महाबली ।
इन के हनन[1] के वास्ते, जितना हो तुझ से कर यतन ॥१॥ विश्व०

ऐसा बना स्वभाव को चित्त की शान्ति से तू ।
पैदा न ईर्षा की आँच[2] दिल में करे कहीं जलन ॥ २ ॥ विश्व०

मित्रता सब से मन में रख, त्याग दे वैर भाव को ।
छोड़ दे टेढ़ी चाल को, ठीक कर अपना तू चलन ॥ ३ ॥ विश्व०

जिस से अधिक न है कोई, जिस ने रचा है यह जगत ।
उस का ही रख तू आशा, उस की ही तू पकड़ शरन ॥४॥ विश्व०

छोड़ के राग द्वेष को, मन में तू अपने ध्यान कर ।
तो निश्चय तुझ को होवेगा, यह सब हैं मेरे आतमन ॥५॥ विश्व०

जैसा किसी का हो अमल[3], वैसा ही पाता है वह फल ।
दुष्टों को कष्ट मिलता है, सुष्टों[4] का होता दुःख हरन ॥६॥ विश्व०

आप ही सब तु रूप हैं अपना ही कर तू आशा ।
कोई दूसरा नाहिं होगा सहाय[5], जो छेदे तेरे दुःख कठन ॥७॥ वि०

---

१ मारना, खोदना. २ आग. ३ कर्म, करनी, आचरण. ४ उत्तम पुरुष, धर्मात्माओं, शुभ आचरण वाला. ५ मददगार, साथी.

[२५]

राग जंगला ।

नाम जपन क्यों छोड़ दिया, प्यारे ! (टेक)

झूठ न छोड़ा क्रोध न छोड़ा, सत्य वचन क्यों छोड़ दिया ॥ १ नाम
झूठे जग में दिल ललचाकर, असल वतन क्यों छोड़ दिया ॥ २ नाम
कौड़ी को तो खूब सँभाला, लाल रत्न क्यों छोड़ दिया ॥ ३ नाम
जिहिं सुमिरन ते अतिसुख पावे सो सुमिरन क्यों छोड़ दिया ॥ ४ नाम
खालिस इक भगवान भरोसे तन मन धन क्यों न छोड़ दिया ॥ ५ नाम

[२६]

रागनी पीलू ताल तीन ।

नेक कमाई कर ले प्यारे ! जो तेरा परलोक सुधारे । टेक
इस दुन्या का ऐसा लेखा, जैसा रात को स्वप्ना देखा ॥ १ ॥ नेक०
ज्यों स्वप्ने में दौलत पाई, आँख खुली तो हाथ न आई ॥ २ ॥ नेक०
कुटुंब कबीला काम न आवे, साथ तेरे इक धर्म ही जावे ॥ ३ ॥ नेक०
सब धन दौलत पड़ा रहेगा, जब तू यहां से कूच करेगा ॥ ४ ॥ नेक०
तोशा[1] कुच्छ नहीं सफ़र है भारा क्योंकर होगा तेरा गुज़ारा ॥ ५ ॥ नेक०
अबतक ग़ाफ़िल रहा तू सोया, वक़्त अनमोल अकारथ[2] खोया ॥ ६ ॥ नेक०
टेढ़ी चाल चला तू भाई, पग पग ऊपर ठोकर खाई ॥ ७ ॥ नेक०
खूब सोच ले अपने मन में, समय गंवाया मूरख पन में ॥ ८ ॥ नेक०
यदि अब भी नहीं तू यत्न करेगा, तो पछताना तुझको पड़ेगा ॥ ९ ॥ नेक०
कर सत्संग और विद्याध्ययन[3], तब पावे तू सुख और चैन ॥ १० ॥ नेक०
एक प्रभू बिन और न कोई, जिस के सुमरे मुक्ति होई ॥ ११ ॥ नेक०
उसी का केवल[4] पकड़ सहारा, क्यों फिरता है मारा मारा ॥ १२ ॥ नेक०

शेष भजन आगामी भाग में प्रकाशित होंगे ।

---

१ रास्ते का भोजन. २ बेफ़ायदा. ३ विद्या को पढ़ो ४ सिर्फ़, कवि का नाम भी है।